अमृत सिद्धि नित्योत्सव व्रत

स्थापना

नित्योत्सव व्रत श्रेष्ठ कहा है, नित्योत्सव कर्तार।
अमृत सिद्धी योग में पूवन, व्रत हो यह शुभकार।।
शांति प्रदायक परसमशांति जिन, जग में रहे महान।
भाव सहित जिन शींति नाथ का, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं अमृत सिद्धि व्रताराध्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्। ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधि करणम्।

सर्व द्रव्य जो रहे लोक में, पाया उनका आलम्बन।
मोहित होकर भटके जिनमें, किया निरन्तर जन्म मरण।।
अमृत सिद्धी वृत्त नित्योसव, करके करते जिन अर्चन।
इस भव के सुख भोग प्राप्तकर, विशद करें जो मोक्ष वरण।१।।

ॐ ह्रीं अमृत सिद्धि व्रताराध्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलं नि० स्वाहा।

वन में शीतलता पाने, सदा लगाया है चन्दन।
भ्रमण किया संसार सिन्धु में, मिटा न भव का आक्रन्दन।।
अमृत सिद्धी वृत्त नित्योसव, करके करते जिन अर्चन।
इस भव के सुख भोग प्राप्तकर, विशद करें जो मोक्ष वरण।२।।

ॐ ह्रीं अमृत सिद्धि व्रताराध्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं नि०स्वाहा।

भटके विषयों की आशा में, पाया सुपद नहीं अक्षय।
कपड़ों जैसे जीवन बदले, हुआ सदा ही उनका क्षय।।
अमृत सिद्धी वृत्त नित्योसव, करके करते जिन अर्चन।
इस भव के सुख भोग प्राप्तकर, विशद करें जो मोक्ष वरण।३।।

ॐ ह्रीं अमृत सिद्धि व्रताराध्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं नि०स्वाहा।

पीड़ित होके काम रोग से, सदा बढ़ाई भव भटकन।
पुष्प चढ़ाकर पू० जा करते, काम रोग हो जाए शमन।।
अमृत सिद्धी वृत्त नित्योसव, करके करते जिन अर्चन।
इस भव के सुख भोग प्राप्तकर, विशद करें जो मोक्ष वरण।४।।

ॐ ह्रीं अमृत सिद्धि व्रताराध्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं नि० स्वाहा।

सरस-सरस व्यंजन खाकर भी, क्षुधा की मिटनाइ पाईतपन।
व्यंजन सरस चढ़ाते हैं हम, जीवन यह हो जाए चमन।।
अमृत सिद्धी वृत्त नित्योसव, करके करते जिन अर्चन।
इस भव के सुख भोग प्राप्तकर, विशद करें जो मोक्ष वरण।५।।

ॐ ह्रीं अमृत सिद्धि व्रताराध्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं नि० स्वाहा।

मोह के महातम से मोहित हैं, तम छाया है महा सघन।
दीप जलाते तम नाशी हम, जीवन यह हो जाय चमन।।
अमृत सिद्धी वृत्त नित्योसव, करके करते जिन अर्चन।
इस भव के सुख भोग प्राप्तकर, विशद करें जो मोक्ष वरण।६।।

ॐ ह्रीं अमृत सिद्धि व्रताराध्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय दीपं नि० स्वाहा।

पड़ा हुआ कर्मों का मेरे, जीवन मेरे जीवन में अतिशय बन्धन।
धूप जलाते यहाँ सुगन्धित, तो हो जाएँ सब कर्म शमन।।
अमृत सिद्धी वृत्त नित्योसव, करके करते जिन अर्चन।
इस भव के सुख भोग प्राप्तकर, विशद करें जो मोक्ष वरण।७।।

ॐ ह्रीं अमृत सिद्धि व्रताराध्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय धूपं नि० स्वाहा।

कर्मों के फल से हो जग में, जीवों का त्रैलोक्य भ्रमण।
फल से पूजा करके होवे, जीवन अतिशय पूर्ण अमन।।
अमृत सिद्धी वृत्त नित्योसव, करके करते जिन अर्चन।
इस भव के सुख भोग प्राप्तकर, विशद करें जो मोक्ष वरण।८।।

ॐ ह्रीं अमृत सिद्धि व्रताराध्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय फलं नि० स्वाहा।

अष्ट भूमियों में जीवों का, अष्ट कर्म से होय गमन।
अर्घ चढ़ाएँ 'विशद' भव से, पावें वे नर शिव साधन।।९।।

ॐ ह्रीं अमृत सिद्धि व्रताराध्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **अमृत सिद्धीव्रत रहा, अमृत मयी त्रिकाल।**
जिसकी गाते भाव से महिमा मय जयमाला।।

(विरागोदय छन्द)

अमृत सिद्धी व्रत अमृत सम, करने वाला अभय प्रदान।
शांतिनाथ की अर्चा करके, भाव सहित करते गुणगान।।
पुण्यार्जन करते हैं प्राणी, अर्चा करके महति महान।
सुख शांती सौभाग्य प्राप्त कर, पाते हैं जग में सम्मान।।१।।
भव्य जीव श्री देव शास्त्र गुरु, सप्त तत्त्व में कर श्रद्धान।
तन चेतन को भिन्न मानते, पाने वाले सम्यक् ज्ञान।।
सम्यक्-चारित का पालन कर, कर्माश्रव करते हैं रोध।
निज आतम केा ध्याता पावन, विशद जगाते हैं जोबोध।।२।।
सम्यक् तप को धारण करते, संवर और निर्जरा वान।
अष्ट कर्म का नाश करें जो, प्राप्त करें शुभ पद निर्वाण।।
यह संसार वास को तजकर, सिद्ध शिला पर करें निवास।
ज्ञान शरीरी नित्य निरंजन, निज स्वभाव में करते वास।।३।।
नित्योत्सव व्रत की महिमा इस, जग में भाई अपरम्पार।
अमृत सिद्धी कहते जिनको, अमृत सम जो अति शयकार।।
अजर-अमर हो जाते जग में, अमृत सिद्धी व्रत कर जीव।
मोक्ष प्रदायक अनुपम अतिशय, प्राप्त करें पुण्य अतीव।।४।।

दोहा–**श्री जिनकी महिमा अगम, महिमा अपरम्पार।**
अर्चा करके भाव से, पाते भव दधि पार।।

ॐ ह्रीं अमृत सिद्धि व्रताराध्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा

दोहा–**विशद करें आराधना, पाएँ पद निर्वाण।**
ऐसे श्री जिन के चरण, करते हम गुणगान।।

।।इत्याशीर्वादः।।

अक्षय निधि व्रत

स्थापना

इस युग में प्रभु धर्म प्रवर्तन, करके किए जगत् कल्याण।
रत्नत्रय को धारण करके, प्रगट किए प्रभु केवल ज्ञान।।
अनन्त चतुष्टय प्रकट किए प्रभु, पाए अक्षय निधि भंडार।
आह्वानन् है अतदि प्रभु का, वन्दन करते बारम्बार।।

दोहा–**अक्षय निधि पाते विशद, तीर्थंकर भगवान।**
पाने वह निधि हम यहाँ, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं अक्षय निधि व्रताराध्य श्री अर्हन्तदेव! अत्र अत्र संवौषट्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सृग्विणी छन्द)

कूप के नीर से स्वर्ण झारी भरें, भाव से पूजते तीन धारा करें।
विशद अक्षय सुनिधि व्रत करें भाव से, मुक्ती के मार्ग पर हम बढ़े चाव से।।१।।

ॐ ह्रीं अक्षय निधि व्रतराध्य श्री अर्हन्त जिनाय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि० स्वाहा।

गंध केसर घिसा के कटोरी भरें, करके पूजा स्वयं भव की बाधा हरें।
विशद अक्षय सुनिधि व्रत करें भाव से, मुक्ती के मार्ग पर हम बढ़े चाव से।१।।

ॐ ह्रीं अक्षय निधि व्रतराध्य श्री अर्हन्त जिनाय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।

चन्द्र की चांदनी से धवल पुञ्ज ले, सुपद अक्षय को प्राप्त पाने हम शिव पथ चलें:
विशद अक्षय सुनिधि व्रत करें भाव से, मुक्ती के मार्ग पर हम बढ़े चाव से।३।।

ॐ ह्रीं अक्षय निधि व्रतराध्य श्री अर्हन्त जिनाय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय अक्षतान नि० स्वाहा।

पुष्प सुरभित मनोहर सुगन्धित लिए, काम बाधा नशाने समर्पित किए।
विशद अक्षय सुनिधि व्रत करें भाव से, मुक्ती के मार्ग पर हम बढ़े चाव से।४।।

ॐ ह्रीं अक्षय निधि व्रतराध्य श्री अर्हन्त जिनाय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय पुष्पं नि० स्वाहा।

शुद्ध नैवेद्य के थाल पावन भरें, राज अनादी क्षुधाकर स्वयं परिहरे।
विशद अक्षय सुनिधि व्रत करें भाव से, मुक्ती के मार्ग पर हम बढ़े चाव से।५।।

ॐ ह्रीं अक्षय निधि व्रतराध्य श्री अर्हन्त जिनाय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।

दीप की ज्योति से मोह को परिहरें, ज्ञान की ज्योति हम भी प्रकाशित करें।
विशद अक्षय सुनिधि व्रत करें भाव से, मुक्ती के मार्ग पर हम बढ़े चाव से।६।।

ॐ ह्रीं अक्षय निधि व्रतराध्य श्री अर्हन्त जिनाय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।

अग्नि में धूपदशगंधम यरवेते, आत्म सौरभ जगे धर्म को सेवते।
विशद अक्षय सुनिधि व्रत करें भाव से, मुक्ती के मार्ग पर हम बढ़े चाव से।७।।

ॐ ह्रीं अक्षय निधि व्रतराध्य श्री अर्हन्त जिनाय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय धूपं नि० स्वाहा।

फल की आभा सुगन्धी से मन खिले, करके पूजा सुमुक्ती की सम्पत्ति मिले।
विशद अक्षय सुनिधि व्रत करें भाव से, मुक्ती के मार्ग पर हम बढ़े चाव से।८।।

ॐ ह्रीं अक्षय निधि व्रतराध्य श्री अर्हन्त जिनाय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय फलं नि० स्वाहा।

नीर गंधादि वसु द्रव्य लेयाल में, अर्घ्य अर्पण करें नायके भल मैं।
विशद अक्षय सुनिधि व्रत करें भाव से, मुक्ती के मार्ग पर हम बढ़े चाव से।९।।

ॐ ह्रीं अक्षय निधि व्रतराध्य श्री अर्हन्त जिनाय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

दोहा–**तिु जग शांती कर विशद, व्रत चारित्र महान।**
शांती धारा हम करें, पाने शांति प्रधान।।

।।शान्त्ये शांतिधारा।।

दोहा–**सुरभित कारी दश दिशा, चम्पक आदिक फूल।**
अर्पित पुष्पाञ्जलिं विशद हो शिव पद पाने के लिए अनुकूल।।

(पुष्पाञ्जलि क्षिपेत)

जयमाला

दोहा– **अक्षय निधिव्रत है परम, अक्षय निधि भण्डार।**
अक्षय निधि व्रत कर बढ़ें, भव सिन्धू के पार।।

काल अनादि अनन्त लोक में, रहते जीव अनन्तानन्त।
नाहीं लोक का अंत कहीं है, ना जीवों का ही है अंत।।
किन्तू भव्य जीव सद्दर्शन, पाने वाले भेद विज्ञान।
सम्यक् चारित्र को धारण कर, पा लेते नर केवल ज्ञान।।१।।
ज्ञानवारणी के क्षय होते, ज्ञान लब्धि होवे सम्प्राप्त।
कर्म दर्शनावरणी नशते, क्षायक दर्शन होवे प्राप्त।।
दर्शन मोहनाश होते ही, ये सम्यक्त्व लब्धि सम्प्राप्त।
चारित मोहकर्म नशते ही, चारित लब्धी होवे प्राप्त।।२।।
दान लाभ भोगोपभोग अरु, वीर्यान्तराय कर्म का अंत।
दानलाभ भोगोपभोग शुभ, वीर्यानंत हों लब्धीवंत।।
क्षायक नव लब्धी को पाके, बनते अक्षय निधि के कोप।
अर्हत् पदवी पाने वालों, का होता जीवन निर्दोष।।३।।
जिन अर्चा करते जो प्राणी, वे पाते हैं पुण्य निधान।
उभय लोक सुख का साधन जो, तीन लोक में रहा महान।।
अक्षय निधि व्रत करने वाले, पाते हैं अक्षय निधि जीव।
मोक्षमार्ग में साधन हैं जो, पाते हैं वह पुण्य अतीव।।४।।

दोहा–**भाते हैं यह भावना, पाएँ शिव सोपान।**
अक्षय निधि व्रत कर अतः, करते जिन गुणगान।।

ॐ ह्रीं अक्षय निधि व्रतराध्य श्री अर्हन्त जिनाय पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।

दोहा–**अक्षय निधि के कोण जिन, पाएँ अक्षय ज्ञान।**
जिनकी अर्चा कर विशद्, मिले सुपद निर्वाण।।

***

नित्य सौभाग्य व्रत विधान

स्थापना

वृषभादिक चौबिस तीर्थंकर हुए लोक में महतिमहान।
नित्य सौभाग्य जले अर्चा कर, भविजीवों का अतिशयवान।।
उभय लोक सुख पाएँ प्राणी, करें अन्त में निज कल्याण।
जिनकी अर्चा करने को हम, भाव सहित कहते आह्वान।।

ॐ ह्रीं नित्य सौभाग्य व्रत अर्घ्य चतुर्विंशतिजिन:। अत्र अत्र अह्वानन्।
अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

शुभ नीर निर्मल शुभग चन्दन, मंद मंद घिसायके।
मिलवाय तृषा निकन्द कारण, झारि शुभ भरवायके।।
प्रभु कर्माऽरिष्ट पहार तोरन, वज्र दण्ड सुहावने।
पद जजहु सिद्ध समृद्धि, दायक सिद्धि नायक तुम तने।।१।।

ॐ ह्रीं नित्य सौभाग्य व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय जलं नि. स्वाहा।

कर्पूर वासित अगरजा, घिसवाय चंदन वल्लभा।
भर रत्न जड़ित सुवर्ण, भाजन माहि जिसकी अति प्रभा।।
प्रभु कर्माऽरिष्ट पहार तोरन, वज्र दण्ड सुहावने।
पद जजहु सिद्ध समृद्धि, दायक सिद्धि नायक तुम तने।।२।।

ॐ ह्रीं नित्य सौभाग्य व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय चंदनं नि. स्वाहा।

सम्पूर्ण तंदुल धवल, धोकर पुञ्ज लाए थाल में।
हो चन्द्र लज्जित शरद ऋतु के, कुन्द सकुचें हार में।।
प्रभु कर्माऽरिष्ट पहार तोरन, वज्र दण्ड सुहावने।
पद जजहु सिद्ध समृद्धि, दायक सिद्धि नायक तुम तने।।३।।

ॐ ह्रीं नित्य सौभाग्य व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अक्षतं नि. स्वाहा।

ले अमल कमल अनूप सुरभित, सहस दल विकसे कहे।
भर थार कञ्चन शोध शुभकार, भावकर अतिशय लहे।।
प्रभु कर्माऽरिष्ट पहार तोरन, वज्र दण्ड सुहावने।
पद जजहु सिद्ध समृद्धि, दायक सिद्धि नायक तुम तने।।४।।

ॐ ह्रीं नित्य सौभाग्य व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय पुष्पं नि. स्वाहा।

शत छिद्र फैनी पापड़ी, सुरमी सुव रफीले घनी।
वर क्षीर मोदक शालि, फिस मिस, मिले खण्डा सोहनी।।
प्रभु कर्माऽरिष्ट पहार तोरन, वज्र दण्ड सुहावने।
पद जजहु सिद्ध समृद्धि, दायक सिद्धि नायक तुम तने।।५।।

ॐ ह्रीं नित्य सौभाग्य व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

मणि दीप ज्योति प्रकाश दश दिश, झोके लग्गे ना पवन को।
ना बुझें घर के रजत थाली, कांति प्रसरित जौन के।।
प्रभु कर्माऽरिष्ट पहार तोरन, वज्र दण्ड सुहावने।
पद जजहु सिद्ध समृद्धि, दायक सिद्धि नायक तुम तने।।६।।

ॐ ह्रीं नित्य सौभाग्य व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय दीपं नि. स्वाहा।

शुभ धूप गंध बनायदश विध, धूम की सुघर लिए।
जो खेय धूपायन मही, सब कर्म जाल प्रजालिए।।
प्रभु कर्माऽरिष्ट पहार तोरन, वज्र दण्ड सुहावने।
पद जजहु सिद्ध समृद्धि, दायक सिद्धि नायक तुम तने।।७।।

ॐ ह्रीं नित्य सौभाग्य व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय धूपं नि. स्वाहा।

ले लोंग पिस्ता दाड़िमादिक, दाख बादामें मुहे।
शुभ आम्र केला सेव अनुपम, जो वनस्पति के रहे।।
प्रभु कर्माऽरिष्ट पहार तोरन, वज्र दण्ड सुहावने।
पद जजहु सिद्ध समृद्धि, दायक सिद्धि नायक तुम तने।।८।।

ॐ ह्रीं नित्य सौभाग्य व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय फलं नि. स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु शुभ, दीप धूप सुफल घने।
यह द्रव्य आठों शुद्ध प्रासुक, अर्घ्य सब मिलकर बने।।

प्रभु कर्माऽरिष्ट पहार तोरन, वज्र दण्ड सुहावने।
पद जजहु सिद्ध समृद्धि, दायक सिद्धि नायक तुम तने।।९।।

ॐ ह्रीं नित्य सौभाग्य व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सोरठा–**विशद आप गुणवान, रहे लोक में विशद जिन।**
करते हम गुणगान, जल धारा देते चर।।

शान्तये शांति शांति धारा

सोरठा–**जग में रहे महान, महिमा जिनकी है अगम।**
अनुपम आभावान, पुष्पाञ्जलिं करते विशद।।

पुष्पाजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

दोहा–**तत्त्वों में श्रद्धान से, होवे आत्म प्रकाश।**
भक्ती कर जिनराज की, पूर्ण होय सब आस।।

।।मण्डलस्योपरिपुष्पांजलि छिपेत्।।

जयमाला

दोहा– **नित्य सौभाग्य व्रत की रही, महिमा विशद विशाल।**
गाते हैं हम भाव से, जिसकी जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

शुक्ल अषाढ अष्टमी को शुभ, भाव सहित करके उपवास।
श्री जिन मंदिर में जाकर के, अधिकाधिक करना है वास।।
चौबीस तीर्थंकर की प्रतिमा का, करके पावन अभिषेक।
पूजन आदिक शास्त्र स्वाध्याय, करें भाव से धार विवेक।।१।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भ्यो नमः का एक सौ आठ करें शुभ जाप।
आगम में वर्णित जिन अर्चा से, कटते भव भव के पाप।।
महा अर्घ्य लेकर के सुन्दर, सप्त वत्तियों का ले दीप।
तीन प्रदक्षिणा दे वेदी की, मंत्र बोलकर करें प्रदीप।।२।।
इस प्रकार अवतरण सुविधि कर, शन्ति विसर्जन करें विधान।

सप्त सुवासिनि महिलाओं को, कुंकुंभ लगा करें कुछ दान।।
क्रमशः आषाढ शुक्ल आठों से, पूनम तक करके शुभकार।
आगे कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा, तक करना है मंगलकार।।३।।
राजगृही के राजा श्रेणिक, के राज श्रेष्ठी थे जिनदत्त।
जिन दत्ता सुत वृषभदत्ता जी, सुमति बधू को किए प्रदत्त।।
चारों ने व्रत किये भाव से, दूर हुआ जिससे उपसर्ग।
डसा सर्प ने पुत्री को तब, दूर हुआ उसका सब काल।।४।।
जब उपशर्ग हुआ भाई पर, यक्ष ने तव वह दूर किया।
पूजा का फल सद्भक्तों ने, जिन भक्ती कर श्रेष्ठ लिया।।
वृत के फल से स्वर्ग सुखों, का पति है इस जग के जीव।
परम्परा से मोक्ष महल 'विशद' रखे जो अनुपम नीव।।५।।

दोहा–**महिमा व्रत की है अगम, हो सुख शांति अपार।**
भव्य जीव व्रत कर बढ़े, मोक्ष महल के द्वार।।

ॐ ह्रीं नित्य सौभाग्य व्रताराध्य श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः जयमाला।

दोहा–**जिन अर्चा कर भाव से, पाना शिव सोपान।**
अतः करें हम भी विशद जिनवर का गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

***

शरद पूर्णिमा (चारित्रमाला) पूजन

स्थापना

व्रत है शरद पूर्णिमा पावन, चारित्र माला जिसका नाम।
व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जी, के पद बारम्बार प्रणाम।।
व्रत को धारण करने वाले, होते प्राणी विद्यावान।
सुख शांती सौभाग्य जगे मम्, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं शरद पूर्णिमा व्रताराध्य श्री चन्द्र जिनेन्द्र! अत्र-अवतर-अवतर

संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

चतुर्गती में भटकाए हम, जन्मादिक के रोगों से।
क्षय कर पाए रोग त्रय हम, मुक्ती पाएँ भोगो से।।
शरद पूर्णिमा व्रत है पावन, विषम व्याधियाँ करे विनाश।
भक्ति भाव से जिन अर्चा कर, हो जीवों की पूरी आश।।१।।

ॐ ह्रीं शरद पूर्णिमा व्रताराध्य श्री चन्द्र जिनेन्द्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं नि० स्वाहा।

अज्ञानी हो काल अनादी, तपें है भव संतापों से।
भव संताप नाश करने को, छूट जाएँ हम पापों से।।
शरद पूर्णिमा व्रत है पावन, विषम व्याधियाँ करे विनाश।
भक्ति भाव से जिन अर्चा कर, हो जीवों की पूरी आश।।२।।

ॐ ह्रीं शरद पूर्णिमा व्रताराध्य श्री चन्द्र जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि० स्वाहा।

पर पद की माया मे भटके, स्वपद हम न पाये है।
पुञ्ज चढ़ाकर के अक्षत के, अक्षय होने आए है।।
शरद पूर्णिमा व्रत है पावन, विषम व्याधियाँ करे विनाश।
भक्ति भाव से जिन अर्चा कर, हो जीवों की पूरी आश।।३।।

ॐ ह्रीं शरद पूर्णिमा व्रताराध्य श्री चन्द्र जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।

हैं संतप्त वो कर्म के फल से, भिंदे मोह को शूलों से।
पीड़ा हरने काम रोग की, पूजा करते फूलों से।।
शरद पूर्णिमा व्रत है पावन, विषम व्याधियाँ करे विनाश।
भक्ति भाव से जिन अर्चा कर, हो जीवों की पूरी आश।।४।।

ॐ ह्रीं शरद पूर्णिमा व्रताराध्य श्री चन्द्र जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा।

व्याकुल होके क्षुधा रोग से, पीड़ित होते आए है।
क्षुधा व्याधि क्षय करने को हम, सुचरू चढ़ाने लाए है।।
शरद पूर्णिमा व्रत है पावन, विषम व्याधियाँ करे विनाश।
भक्ति भाव से जिन अर्चा कर, हो जीवों की पूरी आश।।५।।

ॐ ह्रीं शरद पूर्णिमा व्रताराध्य श्री चन्द्र जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।

मोह राग ने हमे सताया, जिससे हम अकुलाए है।
नाश हेतु उस कर्म वली को, दीप जलाने लाए है।।
शरद पूर्णिमा व्रत है पावन, विषम व्याधियाँ करे विनाश।
भक्ति भाव से जिन अर्चा कर, हो जीवों की पूरी आश।।६।।

ॐ ह्रीं शरद पूर्णिमा व्रताराध्य श्री चन्द्र जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।

कर्मों की सेना बलशाली, आतम के गुण की धाती।
धूप जलाते अग्नी में हम, मिट जाए जिसकी ख्याती।।
शरद पूर्णिमा व्रत है पावन, विषम व्याधियाँ करे विनाश।
भक्ति भाव से जिन अर्चा कर, हो जीवों की पूरी आश।।७।।

ॐ ह्रीं शरद पूर्णिमा व्रताराध्य श्री चन्द्र जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं नि० स्वाहा।

फल खाके यह निष्फल जीवन, जी जी करके हारे हैं।
मोक्ष महाफल पाने को, हे जिन आये आप सहारे हैं।।
शरद पूर्णिमा व्रत है पावन, विषम व्याधियाँ करे विनाश।
भक्ति भाव से जिन अर्चा कर, हो जीवों की पूरी आश।।८।।

ॐ ह्रीं शरद पूर्णिमा व्रताराध्य श्री चन्द्र जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा।

पद अनर्घ्य की आशा लेकर, सर्व लोक में भटकाए।
अर्घ्य बनाकर अष्ट द्रव्य का, यहाँ चढ़ाने को लाए।।
शरद पूर्णिमा व्रत है पावन, विषम व्याधियाँ करे विनाश।

भक्ति भाव से जिन अर्चा कर, हो जीवों की पूरी आश।।९।।

ॐ ह्रीं शरद पूर्णिमा व्रताराध्य श्री चन्द्र जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा।

जयमाला

दोहा–**शरद पूर्णिमा व्रत विषाद, चारित्रमाला नाम।**
भाव सहित जयमाल गा, करते चरण प्रणाम।।

(ज्ञानोदय छन्द)

चन्द्रप्रभ अष्टम तीर्थंकर, चन्द्र चिन्ह जिनकी पहिचान।
चन्द्र समान धवल यश जिनका, देह चन्द्र सी आभावान।।
शरद पूर्णिमा व्रताराध्य हैं, चन्द्रप्रभ अति महिमावान।
जिनके यश की गौरव गाथा, सारा जग यह गाए महान।।१।।
विजय अनुत्तर से चय करके, चन्द्रपुरी नगरी में आन।
महासेन नृप भात लक्ष्मणा, के उर पाए मंगलकार।।
रत्नवृष्टि देवों ने करके, किया वहाँ पर मंगलकार।
शत इन्द्रों ने मिलकर बोला, चन्द्रप्रभ का जय-जयकार।।२।।
जन्मोत्सव पर मेरूगिरि पे, न्हवन कर सर्व सुरेन्द्र।
भाव विभोर हुए भक्ती से, सारे जग के इन्द्र नरेन्द्र।।
पद युवराज प्राप्त कर तुमने, राज्य चलाया महति महान।
दर्पण में मुख देख आपने, संयम धारा महिमा वान।।३।।
भाँति-भाँति के तप करके, प्रभु कर्म निर्जरा किए अपार।
केवल ज्ञान जगाए स्वामी, देव किए तव जय-जयकार।।
समवशरण की रचना करके, धन कुवेर आया स्वमेव तत्काल।
दिव्य देशना श्री जिनेन्द्र की, सुनने आए वालावाल।।४।।
ललित कूट सम्मेदशिखर से, मुक्ती पाए चन्द्र जिनेश।
भव्य जीव जिन अर्चा करके, हर्षित होते जहाँ विशेष।।
सम्यक् चारित्र पालन करके, भव्य जीव पाते निर्वाण।
चारित्र माला व्रत है पावन, मुक्ती पथ का शुभ सोपान।।५।।

दोहा–**शरद पूर्णिमा व्रत रहा, अतिशय कार महान।**

भव्य जीव व्रत जो करें, पाने पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं शरद पूर्णिमा व्रताराध्य श्री चन्द्र जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।

दोहा–**व्रत की महिमा हैं आगम, जिसका नहीं है पार।**
करके भक्ती भावना, पाना है शिव द्वार।।

।।इत्याशीर्वादः।।

***

वासुपूज्य भगवान की पूजन

स्थापना

सारा जग यह जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाता है।
भाव सहित जिनकी अर्चा कर, अतिशय महिमा गाता है।।
इतनी शक्ति कहाँ हमउनका, हृदय में शुभ आह्वान करें।
नगर गुड़ा के वासुपूज्य प्रभु, का हम भी गुणगान करें।।
है श्मशान सरीखा हे जिन!, मन मंदिर का देवालय।
आन पधारो हृदय हमारे, जो बन जाए सिद्धालय।।

दोहा–**हम दोषों के कोष हैं, हुए विशद मदहोश।**
दर्शन करके आपका, मन में जागा होश।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र-अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

हे जिनेन्द्र! तब दर्शन करके, श्रद्धा का उर कमल खिले।
जल अर्पित चरणों में करते, मुझे विशद शिव राह मिले।।
जगत पूज्य श्री वासुपूज्य की, महिमा यह जग गाता है।
इच्छित फल पाये वह प्राणी, जो पद शीश झुकाता है।।१।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जलं नि० स्वाहा।

अनघ वचन नय गर्भित सुनकर, मिलती उर में शांति अहा।
चन्दन से वह कहाँ मिलेगी, अतः चरण में छोड़ रहा।।
जगत पूज्य श्री वासुपूज्य की, महिमा यह जग गाता है।

इच्छित फल पाये वह प्राणी, जो पद शीश झुकाता है।।२।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय चन्दनं नि० स्वाहा।

उज्ज्वल आतम हो अक्षत सा, उज्ज्वल गुण पर्याय मिले।
अक्षत धवल समर्पित कर करते, शम दम का शुभ भाव खिले।।
जगत पूज्य श्री वासुपूज्य की, महिमा यह जग गाता है।
इच्छित फल पाये वह प्राणी, जो पद शीश झुकाता है।।३।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षतं नि० स्वाहा।

काम रोग यौवन उपवन में, फूल लता गृह भालाएँ।
चरणों अर्पित करते जिनसे, बढ़ें विषय सुख शालाएँ।।
जगत पूज्य श्री वासुपूज्य की, महिमा यह जग गाता है।
इच्छित फल पाये वह प्राणी, जो पद शीश झुकाता है।।४।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पुष्पं नि० स्वाहा।

क्षुधा वेदना कर्म असाता, से बढ़कर है भारी रोग।
षट् रस चरु हैं अतः समर्पित, चारु चरण का पाएँ योग।।
जगत पूज्य श्री वासुपूज्य की, महिमा यह जग गाता है।
इच्छित फल पाये वह प्राणी, जो पद शीश झुकाता है।।५।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नैवेद्यं नि० स्वाहा।

तुच्छ दीप अर्पित करते यह, केवल ज्ञान का दीप जले।
तव चरणों में दृष्टि रहे मम, भव दुख नाशी मोह गले।।
जगत पूज्य श्री वासुपूज्य की, महिमा यह जग गाता है।
इच्छित फल पाये वह प्राणी, जो पद शीश झुकाता है।।६।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय दीपं नि० स्वाहा।

ध्यान अग्नि में लीन हुए फिर, कर्म अघाती नाश किए।
शुद्धातम का रस पीकर ये, आए जलाने धूप लिए।।
जगत पूज्य श्री वासुपूज्य की, महिमा यह जग गाता है।
इच्छित फल पाये वह प्राणी, जो पद शीश झुकाता है।।७।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय धूपं नि० स्वाहा।

मोक्ष महाफल की आशा से, भव की आशा विघट गई।
फल लेकर यह चरणों आए, मति तव पद के निकट गई।
जगत पूज्य श्री वासुपूज्य की, महिमा यह जग गाता है।
इच्छित फल पाये वह प्राणी, जो पद शीश झुकाता है।।८।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय फलं नि० स्वाहा।

मेरी परिणति निज आतम में, आज हुयी एकत्व भयी।
'विशद' जगी है यही भावना, शीघ्र मिले अब मोक्ष मही।।
जगत पूज्य श्री वासुपूज्य की, महिमा यह जग गाता है।
इच्छित फल पाये वह प्राणी, जो पद शीश झुकाता है।।९।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

दोहा–**उज्ज्वल जल से कर रहे, पावन शांती धारा।**
मोक्ष मार्ग पर हम बढ़ें, होकर के अविकार।।

शान्तये शांति शांति धारा

दोहा–**पुष्पांजलि को पुष्प यह, लाए खुशबूदार।**
यही भावना है विशद, पाएँ हम शिवद्वार।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पंचकल्याणक के अर्घ्य

दोहा

षष्ठी कृष्ण अषाढ की, हो गई माला माल।
गर्भ कल्याणक पाए थे, दीनदयाल कृपाल।।१।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भ मंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी, जन्मे जिन भगवान।
आनन्दोत्सव तव किए, इन्द्र किए गुणगान।।२।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्म मंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी, पकड़ी शिव की राह।
संयम धारा आपने, मिटी कर्म की दाह।।३।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपो मंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

शिव पद के राही बने, कर्म घातिया नाश।
भादों शुक्ला दोज को, कीन्हे ज्ञान प्रकाश।।४।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ला द्वितीयायां ज्ञानं मंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

शिव पद के राही बने, कर्म घातिया नाश।
भादों शुक्ला दोज को, कीन्हे ज्ञान प्रकाश।।४।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ला द्वितीयायां ज्ञानं मंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

वासुपूज्य जी ने किए, आठों कर्म विनाश।
सुदी चतुर्दशी भाद्र पद, सिद्ध शिला पर वास।।५।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्ष मंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

जयमाला

दोहा–**महिमा गाने आपकी, हुए आज वाचाल।**
वासुपूज्य भगवान की, गाते हैं जयमाल।।

(विहागोदय छन्द)

भारत देश उत्तर प्रदेश में, जिला चम्पापुर रहा महान।
चम्पापुर में शोभा पाते, जिनवर वासुपूज्य भगवान।।
महाशुक्र से चयकर आए, चम्पापुर नगरी में आन।
वसुपूज्य नृप जयावती के गृह में हुआ था मंगलगान।।१।।
षष्ठी कृष्ण आषाढ़ माह में की, पाए आप गर्भ कल्याण।
रत्न वृष्टि सुर किए मनोहर, वंश इक्ष्वाकू रहा महान।।
फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को, पाए आप जन्म कल्याण।
शुभ नक्षत्र विशाखा पाये, भैंसा चिन्ह रही पहचान।।२।।
फाल्गुन शुक्ला की चतुर्दशी को, प्रभु जी जाति स्मरण करके प्राप्त।
मन में शुभ वैराग्य जगाए, संयम आप किए सम्प्राप्त।।

सत्तर धनुष रही ऊँचाई, बाल ब्रह्मचारी भगवान।
आयु बहत्तर लाख वर्ष की, पाए लाल रंग शुभ आभावान।।३।।
कर उपवास एक वन जाके, छह सौ राजाओं के साथ।
वृक्ष पाटल तरु तल में प्रभु जी, हुए आप मुनियों के नाथ।।
भादों शुक्ल द्वितीया को प्रभु जी, पाए पावन केवल ज्ञान।
समवशरण की रचना करके, देव किए शुभ मंगलगान।।४।।
भादों शुक्ला चतुर्दशी को, करके सारे कर्म विनाश।
एक समय में सिद्ध हुए प्रभु, कीन्हें सिद्ध शिला पर वास।।
छियासठ गणधर रहे आपके, मन्दर जिनमें रहे प्रधान।
मुनिवर छह सौ एक साथ में, विशद किए अतिशय गुणगान।।५।।

दोहा–**चम्पापुर में पाए हैं, प्रभू पंच कल्याण।**
जग जीवों को दे रहे, पावन शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**महिता गाते आपकी, 'विशद' के साथ।**
मुक्ती पावें हे प्रभु, झुका रहे पद माथ।।

इत्याशीर्वादः

***

कर्मचूर व्रत पूजा विधान

स्थापना

काल अनादि से जीवों के, अष्ट कर्म का है सम्बन्ध।
हो विभाव भावों के द्वारा, अष्ट कर्म का फिर-फिर बन्ध।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा से हो, सम्यक् दर्शन सम्यक् ज्ञान।
सम्यक् चारित तप से होता, अष्ट कर्म का पूर्ण विनाश।।

दोहा–**अष्ट कर्म को नाशकर, बन जाते हैं सिद्ध।**
आह्वानन् करते हृदय, जो हैं जगत् प्रसिद्ध।।

ॐ ह्रीं कर्मचूर व्रत अत्र-अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-

तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(टाटक छन्द)

मनहारी कलशों में जलभर, हम पूजन को आए हैं।
जन्म जरादिक रोग नशाने, धारा देने लाए हैं।।
कर्मचूर व्रत की पूजा कर, मन में अति हर्षाते हैं।
कर्म चूर हो जाए हमारे, यही भावना भाते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं कर्मचूर व्रताराध्य श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि० स्वाहा।

चन्दन केशर आदि सुगंधित, हमने यहाँ घिसाए है।
भव सन्ताप नशाने को हम, आज यहाँ पर आए हैं।।
कर्मचूर व्रत की पूजा कर, मन में अति हर्षाते हैं।
कर्म चूर हो जाए हमारे, यही भावना भाते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं कर्मचूर व्रताराध्य श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः संसारताप विनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।

मोती सम अक्षय अक्षत हम, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
अक्षय पद पाने को अनुपम, भाव बनाकर आए हैं।।
कर्मचूर व्रत की पूजा कर, मन में अति हर्षाते हैं।
कर्म चूर हो जाए हमारे, यही भावना भाते हैं।।३।।

ॐ ह्रीं कर्मचूर व्रताराध्य श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अक्षयपद विनाशनाय अक्षतं नि० स्वाहा।

सुरभित पुष्प मनोहर सुन्दर, थाली में भर लाए हैं।
कामवाण की बाधा अपनी, हम हरने को आए हैं।।
कर्मचूर व्रत की पूजा कर, मन में अति हर्षाते हैं।
कर्म चूर हो जाए हमारे, यही भावना भाते हैं।।४।।

ॐ ह्रीं कर्मचूर व्रताराध्य श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि० स्वाहा।

शुद्ध ताजे नैवेद्य बनाकर, अर्चा करने लाए हैं।
क्षुधा रोग है काल अनादि, उसे नशाने आए हैं।।

कर्मचूर व्रत की पूजा कर, मन में अति हर्षाते हैं।
कर्म चूर हो जाए हमारे, यही भावना भाते हैं।।५।।

ॐ ह्रीं कर्मचूर व्रताराध्य श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।

घृत का यह शुभ दीप जलाया, आरति करने लाए हैं।
मोह तिमिर छाया है भारी, मोह नशाने आए हैं।।
कर्मचूर व्रत की पूजा कर, मन में अति हर्षाते हैं।
कर्म चूर हो जाए हमारे, यही भावना भाते हैं।।६।।

ॐ ह्रीं कर्मचूर व्रताराध्य श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपे नि० स्वाहा।

चन्दन आदिक शुभ द्रव्यो से, धूप बनाकर लाए है।
वसु कर्मों ने हमें सताया, छुटकारा पाने आए हैं।।
कर्मचूर व्रत की पूजा कर, मन में अति हर्षाते हैं।
कर्म चूर हो जाए हमारे, यही भावना भाते हैं।।७।।

ॐ ह्रीं कर्मचूर व्रताराध्य श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं नि० स्वाहा।

केला श्री फल आदिक, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
मोक्ष महाफल पाने का हम, लक्ष्य बनाकर आए हैं।।
कर्मचूर व्रत की पूजा कर, मन में अति हर्षाते हैं।
कर्म चूर हो जाए हमारे, यही भावना भाते हैं।।८।।

ॐ ह्रीं कर्मचूर व्रताराध्य श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि० स्वाहा।

जलं गंधादिक अष्ट द्रव्य का, अनुपम अर्घ्य बनाए है।
कि अर्घ्य पाने हेतु यह, अर्घ्यं चढ़ाने लाए है।।
कर्मचूर व्रत की पूजा कर, मन में अति हर्षाते हैं।
कर्म चूर हो जाए हमारे, यही भावना भाते हैं।।९।।

ॐ ह्रीं कर्मचूर व्रताराध्य श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा।

जयमाला

दोहा–**कर्मनाश कर शिव गये, सिद्ध अनन्तानंत।**
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव का अंत।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अष्ट कर्म से रहित सिद्ध हैं, गुण अनन्त के स्वामी।
तीन लोक त्रिय काल के ज्ञाता, श्री जिन अन्तर्यामी।।
सुर-नर विद्याधर मुनि गुणधर, बोलें जय जयकारे।
जन्म-जन्म के पाप नाश, हों, नाम किए उच्चारे।।१।।
समकित दर्श ज्ञान अगुरु लघु, निरावाध गुणधारी।
अवगाहन सूक्ष्मतत्व वीर्य शुभ, रहे अष्ट गुणकारी।।
महिमा अनुपम है सिद्धो की, अधर शोभते भाई।
एक सिद्ध में सिद्ध अनन्तों, रहते यह प्रभुताई।।२।।
कर्म चूर व्रत कहे जिनेश्वर, करें अष्टमी भाई।
किसी मांह से धारण करके, पालें जो शिवदायी।।
शुक्ल पक्ष में धारण करके, क्रमशः करते जाएँ।
शक्त्यानुसार करें भावों से, विघ्न कोई ना आएँ।।३।।
प्रथम अष्टमी के व्रत आठों, में उपवास बताया।
आगे आठ अष्टमी पाके, कांजी आहार गाया।।
तृतिय आठ अष्टमी पाके, हों तन्दुल आहारी।
चोथी आठ अष्टमी व्रत में, एक ग्रास के धारी।।४।।
पंचम आठ अष्टमी व्रत में, कलछी मात्र ही खाएं।
छठवी अष्ट अष्टमी पाके, अन्त एक रस पाएँ।।
सप्तम आठ अष्टमी के दिन, हो एकाशन कारी।
रुक्षाहार करें फिर आगे, क्रमशः हों व्रत धारी।।५।।
इस प्रकार कुल आठ-आठ कर, चौंसठ व्रत को पाएँ।
पोने तीन वर्ष में व्रत यह, 'विशद' पूर्ण हो जाएँ।।
यथा शक्ति उद्यापन करके, करें दान शुभकारी।
कर्मचूर कर श्रद्धाधारी, होवें शिव भर्त्तारी।।६।।

दोहा–**कर्मचूर व्रत जो करें, पावन विधि अनुसार।**
अल्प समय में जीव, करें कर्म का क्षार।।

ॐ ह्रीं कर्मचूर व्रताराध्य श्री अनन्तानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।

दोहा–**महिमा श्री जिनधर्म की, जग में रही महान।**
धारें जो भी भाव से, पावें पद निर्वाण।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)

***

पंच पर्व व्रत पूजा

स्थापना

दोहा–**पाँचों परवी व्रत करें, तीनों योग सम्हार।**
सकल पाप क्षय कर विशद, कर्म होयेंगे क्षार।।

ॐ ह्रीं पंच पर्व व्रत समूहाराध्य! अत्र-अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

उज्जवल जल ये क्षीरोदधि का, झारी में भर लाए हैं।
जन्म जरादिक रोग नाश हों, यही भावना भाए हैं।।
पंच पर्व व्रत की पूजाकर, पंचमगति को जाते हैं।
भव्य जीव श्री जिनकी अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं पंच व्रताराध्य जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि० स्वाहा।

चन्दन केशर एक मिलाकर, स्वर्ण पात्र में लाए हैं।
भवाताप के नाश हेतु हम, अर्चा करने आए हैं।।
पंच पर्व व्रत की पूजा कर, पंचम गति को जाते हैं।
भव्य जीव श्री जिन की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं पंच व्रताराध्य संसारताप विनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।

उज्ज्वल तन्दुल मनहर सुन्दर, रजत थाल में लाए हैं।
अक्षय पद पाने हम निर्मल, यहाँ चढ़ाने आए हैं।।
पंच पर्व व्रत की पूजा कर, पंचम गति को जाते हैं।
भव्य जीव श्री जिन की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।३।।

ॐ ह्रीं पंच व्रताराध्य अक्षयपद विनाशनाय अक्षतं नि० स्वाहा।

सुरभित पुष्प सुगन्धित अनुपम, उपवम से हम लाए हैं।
निज गुण की सुरभित खुशबू हम, यहाँ जगाने आए हैं।।
पंच पर्व व्रत की पूजा कर, पंचम गति को जाते हैं।
भव्य जीव श्री जिन की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।४।।

ॐ ह्रीं पंच व्रताराध्य कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि० स्वाहा।

घृत मेवा चीनी के पावन, व्यंजन सरस बनाए हैं।
क्षुधा व्याधि उपशम करने को, आज यहाँ पर आए हैं।।
पंच पर्व व्रत की पूजा कर, पंचम गति को जाते हैं।
भव्य जीव श्री जिन की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।५।।

ॐ ह्रीं पंच व्रताराध्य क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।

ज्योति जलाकर के दीपक में, तिमिर नशाने आए हैं।
मोह अन्ध हो नाश हमारा, यही भावना भाए हैं।।
पंच पर्व व्रत की पूजा कर, पंचम गति को जाते हैं।
भव्य जीव श्री जिन की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।६।।

ॐ ह्रीं पंच व्रताराध्य मोहान्धकार विनाशनाय दीपे नि० स्वाहा।

धूपायन में धूप जलाकर, कर्म नशाने लाये हैं।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, चरण शरण में आए हैं।।
पंच पर्व व्रत की पूजा कर, पंचम गति को जाते हैं।
भव्य जीव श्री जिन की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।७।।

ॐ ह्रीं पंच व्रताराध्य अष्टकर्म दहनाय धूपं नि० स्वाहा।

भाँति-भाँति के फल उपवन से, लेकर थाल भराए हैं।
मोक्ष महाफल पाने को हम, विशद भावना भाए हैं।।

पंच पर्व व्रत की पूजा कर, पंचम गति को जाते हैं।
भव्य जीव श्री जिन की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।८।।

ॐ ह्रीं पंच व्रताराध्य महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि० स्वाहा।

पद अनर्घ पाने को अनुपम अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
शाश्वत सुपद प्राप्त हो हमको, पूजा करने आए हैं।।
पंच पर्व व्रत की पूजा कर, पंचम गति को जाते हैं।
भव्य जीव श्री जिन की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।९।।

ॐ ह्रीं पंच व्रताराध्य अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य नि० स्वाहा।

दोहा–**दोष अठारह से रहित, तीर्थंकर अरहन्त।**
शांती धारा दे रहें, हो शांती भगवन्त।।

(शान्त्ये शांतिधारा)

दोहा–**वीतराग सर्व जिन, वैदेही हे नाथ।**
पुष्पाञ्जलिं करते चरण, झुका रहे हम माथ।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा–**पंच पर्व व्रत कर कटे, कर्मों का जंजाल।**
भाव सहित जिसकी यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

भारत देश नगर उज्जैनी प्रजापाल राजा का नाम।
मदनावासी रानी जिसकी, सुख से रहती अपने धाम।।
वन की शैर को भूप गया तब, मुनिवर देखे ध्यानालीन।
कर प्रदक्षिणा वन्दन करके, विनय से बैठा ज्ञान प्रवीण।।१।।
धर्मोपदेश दिए मुनिवर जी, किए धर्म का जो व्याख्यान।
षट् आवश्यक श्रावक पालें, मुनि का धर्म है ज्ञान ध्यान।।
अनेकान्त है धर्म वस्तु का, स्याद्वाद से हो विस्तार।
शुद्ध द्रव्य निश्चय से जानो, द्रव्य अशुद्ध कहे व्यवहार।।२।।

मुनि पड़गाहन कर रितु वन्ती, रानी ने जब दिया आहार।
निशंकित हो गर्व से रानी, ने कीन्हा जिसका विस्तर।।
पुण्य पाप को भेद रहित हो, कर अनर्थ माना संतोष।
कुष्ठ हुआ तन में रानी के, मन में हुआ बड़ा अपशोष।।३।।
मुनि से राजा ने पूछा क्यों, कुष्ट की पीड़ा हुई अपार।
मुनिवर बोले अशुद्धि में, दीन्हा था रानी ने जो आहार।।
पंच पर्व व्रत करे भाव से, अशुभ कर्म हो जाए क्षय।
व्रत धारण कर मुनि के आगे, बोले तब मुनिवर की जय।।४।।
व्रत के फल से कुष्ट मिटा तब, दिया चतुर्विध जो आहार।
उद्यापन कर व्रत का पावन, जैन धर्म का किया प्रचार।।
पंच पर्व व्रत करके रोगों, का भी हो जाता है क्षय।
भव्य जीव अनुक्रम से पावें, कर्म नाशकर पद अक्षय।।५।।

दोहा–**व्रत की महिमा है अगम, होवे पुण्य अपार।**
सुख शांति सौभाग्य हो, जीवन मंगलकार।।

ॐ ह्रीं पंच पर्व व्रत समूहाराध्य श्री जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।

दोहा–**भाते हैं हम भावना, होय धर्म विस्तार।**
सुखमय सारे जीव हो, धर्म की हो जयकार।।

(ईत्याशीर्वाद)

संकट हरण चौथ व्रत पूजा

स्थापना

दोहा–**कर्म घातिया नाशकर, अनन्त चतुष्टय वान।**
जिनपर होते लोक में, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विद्यमान विंशति तीर्थंकर पंचपरमेष्ठी समूह अत्र-अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौपाई)

प्रासुक करके जल भर लाए, तीनों रोग नशाने आए।
संकट हरण चौथ व्रत भाई भवि जीवों को सौख्य प्रदायी।।१।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विद्यमान विंशति तीर्थंकर परमेष्ठिभ्यो नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि० स्वाहा।

चन्दन केशर में घिस लाए, भव सन्ताप नशाने आए।
संकट हरण चौथ व्रत भाई, भवि जीवों को सौख्य प्रदायी।।२।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विद्यमान विंशति तीर्थंकर परमेष्ठिभ्यो नमः संसारताप विनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।

धोकर के यह अक्षत लाए, अक्षय पद पाने हम आए।
संकट हरण चौथ व्रत भाई, भवि जीवों को सौख्य प्रदायी।।३।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विद्यमान विंशति तीर्थंकर परमेष्ठिभ्यो नमः अक्षयपद विनाशनाय अक्षतं नि० स्वाहा।

ताजे पुष्प चढ़ाने लाए, काम रोग मेरा नश जाए।
संकट हरण चौथ व्रत भाई, भवि जीवों को सौख्य प्रदायी।।४।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विद्यमान विंशति तीर्थंकर परमेष्ठिभ्यो नमः कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि० स्वाहा।

यह नैवेद्य बनाकर लो, रोग मेरा नश जाए।
संकट हरण चौथ व्रत भाई, भवि जीवों को सौख्य प्रदायी।।५।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विद्यमान विंशति तीर्थंकर परमेष्ठिभ्यो नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।

जगमग दीप जलाकर लाए, मोह नशाने को हम आए।
संकट हरण चौथ व्रत भाई, भवि जीवों को सौख्य प्रदायी।।६।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विद्यमान विंशति तीर्थंकर परमेष्ठिभ्यो नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपे नि० स्वाहा।

धूप जलाने को यह लाए, कर्म नशाने को हम आए।
संकट हरण चौथ व्रत भाई, भवि जीवों को सौख्य प्रदायी।।७।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विद्यमान विंशति तीर्थंकर परमेष्ठिभ्यो नम: अष्टकर्म दहनाय धूपं नि० स्वाहा।

विविध सरस फल हम यह लाए, मोक्ष महाफल पाने आए।
संकट हरण चौथ व्रत भाई, भवि जीवों को सौख्य प्रदायी।।८।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विद्यमान विंशति तीर्थंकर परमेष्ठिभ्यो नम: महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि० स्वाहा।

अर्घ्य बनाकर के हम लाए, पद अनर्घ्य पाने को आए।
संकट हरण चौथ व्रत भाई, भवि जीवों को सौख्य प्रदायी।।९।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विद्यमान विंशति तीर्थंकर परमेष्ठिभ्यो नम: अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य नि० स्वाहा।

दोहा–**शांति प्रदायक जिन चरण, देते शांती धार।**
भक्ती करना भक्त का, है पावन व्यवहार।।

(शान्तये शांतिधारा)

दोहा– **सुरभित पुष्पों से करें, पुष्पांजलि मनहार।**
शिव पद हमको भी मिले, होय स्वप्न साकार।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा–**आस्रव के है द्वार ये, मिथ्या अविरति योग।**
और कषायों का मिले, बन्ध हेतु संयोग।।

(चौपाई)

जय-जय तीर्थंकर हितकारी, तीन काल के मंगलकारी।
एक सौ साठ विदेह कहाए, जिनमें तीर्थंकर कहलाए।।
विहरमान जिन बीस निराले, उन क्षेत्रों में रहने वाले।
द्वय त्रय पंच कल्याण धारी, होते हैं जिनवर अविकारी।।
छियालिस मूल गुणों को पाए, दोष अठारह रहित कहाएँ।
जन्म के अतिशय दश प्रभु पाएँ, ज्ञान के भी जिनवर प्रगटाएँ।।
चौदह देवों कृत कहलाए, प्रतिहार्य से सहित कहाए।

ज्ञान अनन्त प्रभू प्रगटाएँ, ज्ञानावरणी कर्म नशाएँ।।
दर्श अनन्त प्रभू जी पावें, कर्म दर्शनावरण नशाएँ।
होते मोह कर्म के नाशी, प्रभु जी सुख अनन्त के वासी।।
अन्राय प्रभु कर्म नशाए, बलानन्त प्रभु जी प्रगटाए।
समवशरण अतिशय प्रभु पाएँ, दिव्य देशना प्रभु सनाए।।
नय प्रमाण के प्रभु है ज्ञाता, जरा जीवों के भाग्य विधाता।
धर्म के हैं जो विख्याता, सर्व जगत के है प्रभु ज्ञाता।।
भव्य जीव जिन महिमा गाते, पूजा आरती कर हर्षाते।
अतिशय प्राणी पुण्य कमाते, अनुक्रम से शिव पदवी पाते।।

दोहा–**संकटहारी लोक में, कहलाए भगवान।**
जिनकी अर्चा कर मिले, शिव पद के सोपान।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विद्यमान विंशति जिनेन्द्र पंच परमेष्ठिभ्यो नम: जयमाला पूणर्घ्यं नि० स्वाहा।

दोहा–**गुण गाते प्रभु आपके, करने निज कल्याण।**
यही भावना है विशद, प्राप्त होय निर्वाण।।

(पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री असि आ उ सा नम:
सर्व विघ्न रोगोपद्रव विनाशनाय सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

सुगंध व्रत पूजा

स्थापना

श्रेष्ठ सकल सौभाग्य सुव्रत शुभ, है सुगंध दशमी शुभ नाम।
भाव सहित व्रत पालन करने, से बन जाते बिगड़े काम।।
व्रत पालन करने वाले कई, हुए लोक में सर्व महान।
ऐसा अक्षय फलदायी व्रत, का हम करते हैं आह्वानन्।।

दोहा–**शीतलनाथ जिनेन्द्र का, करते हम गुणगान।**
तिष्ठो मेरे हृदय में, हे जिनेन्द्र! प्रभु आन।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र-अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक (शम्भू छन्द)

भव भोगों में फँसकर स्वामी, जीवन यह व्यर्थ गवाया है।
ना जन्म मरण हो छुटकारा, हमको अब तक मिल पाया है।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।१।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं नि० स्वाहा।

हम अन्तर मन शीतल करने, चन्दन घिसकर के लाए हैं।
क्रोधादि कषाएँ पूर्ण नाश, निज शान्ती पाने आए हैं।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।२।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनम् नि० स्वाहा।

चेतन की निर्मलता पाने, हम चरण शरण में आए हैं।
शाश्वत अक्षय पद पाने को, यह अक्षय अक्षत लाए हैं।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।३।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद विनाशनाय अक्षतं नि० स्वाहा।

प्रभु काम वासना से वासित, होकर सारा जग भटकाए।
अब काम अग्नि का रोग नशे, हम पुष्प चढ़ाने को लाए।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।४।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि० स्वाहा।

तृष्णा दुख देती है हमको, छुटकारा पाने हम आए।
अब क्षुधा मिटाने को प्रभुवर, नैवेद्य चढ़ाने यह लाए।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।५।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।

दीपक की ज्योति जले अनुपम, अंधयारा दूर भाग जाए।
यह दीप जलाकर हे स्वामी, हम मोक्ष नशाने को आए।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।६।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपे नि० स्वाहा।

हम धूप जलाते अग्नी में, क्षय कर्मों का प्रभु हो जाए।
शिव पद के राही बन जाएँ, मम् मन मयूर शुभ हर्षाए।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।७।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि० स्वाहा।

फल चढ़ा रहे यह शुभकारी, भव सिन्धू से मुक्ती पाएँ।
हे करुणा सागर दया करो, हम मोक्ष महल शुभ पा जाएँ।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।८।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि० स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु, दीपक शुभ धूप जलाए हैं।
फल रखकर अनुपम अर्घ्य बना, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं॥
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।९।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य नि० स्वाहा।

दोहा–**निज आतम के ध्यान से, मिले आत्म आनन्द।**
शांती धारा दे रहे पाने सहजानन्द।।

शान्तये शांतिधारा...

दोहा– **आत्म ज्योति प्रगटित किए, अखिल विश्व के नाथ।**
पुष्पाञ्जलि करते विशद, चरण झुकाते माथ।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा–**संयम व्रत चारित्र का, पाएँ फल तत्काल।**
श्रेष्ठ सकल सौभाग्य व्रत, की गाते जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

समवशरण गिरनार सुगिरि पर, नेमिनाथ का आया खास।
श्री कृष्ण परिवार सहित तब, दर्शन करने पहुँचे पास।।
रुक्मणि ने पूछा हे स्वामी! किया कौन सा पुण्य विशेष।
यह अखण्ड सौभाग्य मिला जो, बतलाओ हे श्री जिनेश!।।१।।
गणधर बोले मगध देश में, लक्ष्मीपुर पावन स्थान।
सोमसेन ब्राह्मण की पत्नी, लक्ष्मी मति को था अभिमान।।
मुनी समाधिगुप्ति की निन्दा, करके हुआ भगंदर रोग।
मरकर भैंस सूकरी कुत्ती, गधी नरक काप पाई योग।।२।।
फिर दुर्जन कुल नीच प्राप्त कर, माता पिता से हुई विहीन।
भीख मांगकर जीवन बीता, रहती थी होकर के दीन।।
नदी नर्मदा के तट पर शुभ, मुनिवर का पाया संदेश।
ग्रहण किए व्रत उसने गुरु से, मरकर पहुँची कोंकण देश।।३।।
नन्दन सेठ की नन्दावति से, लक्ष्मी मती हुई मनहार।
नन्दा स्वामी महामुनि को, दिया भाव से शुभ आहार।।
मुनिवर से उसने भव पूँछे, सात भवों का किये कथन।

हो अखण्ड सौभाग्य प्राप्त अब, कहो प्रभू ऐसा वर्णन।।४।।
करो सकल सौभाग्य सुव्रत का, बेटी भाव सहित पालन।
दश वर्षों का व्रत करके फिर, करो क्रिया से उद्यापन।।
व्रत का पालन करके उसने, पुण्य कमाया अपरम्पार।
कुन्दनपुर नृप भीष्म के गृह में जन्म लिया जिसने शुभकार।।५।।
रुक्मणि नाम पड़ा था जिसका, श्री कृष्ण से ब्याह किया।
पटरानी पद पाने का भी, जिसने शुभ सौभाग्य लिया।।
गणधर के चरणों में रुक्मणि, ने फिर पावन व्रत पाए।
उद्यापन करके परिजन सब, मन में भारी हर्षाए।।६।।
पुनः आर्यिका के व्रत करके, सुतप किया जिसने शुभकार।
मरण समाधी कर सोलहवें, स्वर्ग में देव बनी मनहार।।
माह भाद्र पद शुक्ल पक्ष में, पाँचें से दशमी तक खास।
पुष्पाञ्जलि व्रत करके अनुपम, दशमी का करके उपवास।।७।।
जिन पूजा अभिषेक क्रिया कर, खेना अनुपम धूप महान।
उद्यापन के शुभ अवसर पर, करना शीतल नाथ विधान।।
यह सुगन्ध दशमी व्रत करके, पाना हैं सौभाग्य महान।
कर्म शृंखला पूर्ण नाशकर 'विशद' प्राप्त करना निर्वाण।।८।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**सकल व्रतों को प्राप्त कर, करें कर्म का नाश।**
भव की बाधा नाशकर, पाएँ मोक्ष निवास।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

***

रोहिणी व्रतराध्य

श्री वासुपूज्य पूजन

स्थापना

दोहा–**विशद रोहणी व्रत करें, जो भी जग के जीव।**
उभय लोक सुखकर विशद, पावें पुण्य अतीव।।

ॐ ह्रीं रोहणी व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र-अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

हम निर्मल नीर चढ़ाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।
प्रभु वासुपूज्य पद ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।१।।

ॐ ह्रीं रोहणीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं नि० स्वाहा।

सुरभित यह गंध बनाए, भव ताप नशाने आए।
प्रभु वासुपूज्य पद ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।२।।

ॐ ह्रीं रोहणीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं नि० स्वाहा।

अक्षत अक्षय फल दायी, यह चढ़ा रहे हैं भाई।
प्रभु वासुपूज्य पद ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।३।।

ॐ ह्रीं रोहणीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि० स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
प्रभु वासुपूज्य पद ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।४।।

ॐ ह्रीं रोहणीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा।

नैवेद्य सरस शुभकारी, जो क्षुधा के रहे निवारी।
प्रभु वासुपूज्य पद ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।५।।

ॐ ह्रीं रोहणीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।

घृत का शुभ दीप जलाएँ, हम मोह से मुक्ती पाएँ।
प्रभु वासुपूज्य पद ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।६।।

ॐ ह्रीं रोहणीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।

अग्नी में धूप खिबाएँ, कर्मों का पुंज जलाएँ।
प्रभु वासुपूज्य पद ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।७।।

ॐ ह्रीं रोहणीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं नि० स्वाहा।

फल सरस चढ़ाते भाई, कहलाए मोक्ष प्रदायी।
प्रभु वासुपूज्य पद ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।८।।

ॐ ह्रीं रोहणीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि० स्वाहा।

पावन यह अर्घ्य बनाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
प्रभु वासुपूज्य पद ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।९।।

ॐ ह्रीं रोहणीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यम् निर्व० स्वाहा।

दोहा–**शांती का दरिया बहे, नाथ आपके द्वार।**
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।
।।शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा–**फीकी पड़ती आपके, आगे सर्व सुगंध।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने आत्मानन्द।।
।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा–**रोहणी व्रत आराध्य हैं, वासुपूज्य भगवान।**
भाव सहित जिनका यहाँ, करते हम गुणगान।।

(वेसरी छन्द)

पूर्वभवों में पुण्य कमाया, जिससे तीर्थंकर पद पाया।
देव शास्त्र गुरुवर को ध्याया, मन में सद् श्रद्धान जगाया।।
दर्श विशुद्धी आदिक भाई, सोलह श्रेष्ठ भावना भाई।
क्षायिक सम्यक् दर्श जगाया, मोक्ष मार्ग प्रभु ने अपनाया।।
स्वर्ग से चयकर गर्भ में आए, देव गर्भ कल्याण मनाए।
जन्म कल्याणक से सुर आवें, पाण्डुक शिला पे न्हवन करावें।।
तप कल्याणक देव मनाते, धन्य धन्य कह महिमा गाते।
प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, समवशरण धनदेव बनाते।।
दिव्यध्वनि प्रभु की शुभकारी, ॐकार मय मंगलकारी।
खिरती जन-जन की कल्याणी, कहलाती है जो जिनवाणी।।
बारह श्रेष्ठ सभाएँ जानो, सुर नर पशु सुनते हैं मानो।
प्रातिहार्य वसु मंगलकारी, समवशरण में हों मनहारी।।
कर्म अघाती प्रभू नशाए, सिद्ध शिला पर धाम बनाए।
अष्ट कर्म के होकर नाशी, हुए आप शिवपुर के वासी।।

दोहा–**जगत पूज्यता पाए हैं, वासुपूज्य भगवान।**
मुक्ती पाने को विशद, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं रोहणीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्य निर्व० स्वाहा।

दोहा–**शिवपुर के राही बने, पाए पंच कल्याण।**
अर्चा करते आपकी, पाने शिव सोपान।।

।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

***

गंध कुटी स्थित जिन पूजा

(दोहा)

चौबीसों अतिशय सहित, अनन्त चतुष्टय वान।
प्रातिहार्य वसु पाए जिन, हैं छियालिस गुणवान।।
दोष अठारह से रहित, गुणानन्त के धाम।
वीतराग सर्वज्ञ जिन, चरणों विशद प्रणाम।।
तीर्थंकर गणधर सहित, देते हित उपदेश।
आह्वानन करते हृदय, जिनका यहाँ विशेष।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनेन्द्राय! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनेन्द्राय! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनेन्द्राय! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल-नंदीश्वर पूजा)

भर लाए प्रासुक नीर, चरणों धार करें।
पा जाएँ भव का तीर, तीनों रोग हरें।।
प्रभु कर्म निर्जरा हेतु, हम गुण गाते हैं।
हे नाथ! आपकी आज, महिमा गाते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि० स्वाहा।

चन्दन की परम सुवास, चारों दिश महके।
हो भव आताप विनाश, मन मेरा चहके।।
प्रभु कर्म निर्जरा हेतु, हम गुण गाते हैं।
हे नाथ! आपकी आज, महिमा गाते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि० स्वाहा।

अक्षत ये धवल महान, धोकर के लाए।
पद अक्षय मिले प्रधान, अर्चा को आए।।

प्रभु कर्म निर्जरा हेतु, हम गुण गाते हैं।
हे नाथ! आपकी आज, महिमा गाते हैं।।३।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं नि० स्वाहा।

यह पुष्प लिए शुभकार, पावन गंध भरे।
हो काम रोग निरवार, मन आह्लाद करें।।
प्रभु कर्म निर्जरा हेतु, हम गुण गाते हैं।
हे नाथ! आपकी आज, महिमा गाते हैं।।४।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा।

नैवेद्य लिए सरदार, पूजा को आए।
हो क्षुधा रोग परिहार, जिन महिमा गाए।।
प्रभु कर्म निर्जरा हेतु, हम गुण गाते हैं।
हे नाथ! आपकी आज, महिमा गाते हैं।।५।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।

यह जला रहे शुभ दीप, मोह तिमिर नाशी।
अर्पित कर चरण समीप, होवे शिववासी।।
प्रभु कर्म निर्जरा हेतु, हम गुण गाते हैं।
हे नाथ! आपकी आज, महिमा गाते हैं।।६।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।

यह धूप जलाएँ नाथ, आठों कर्म नशें।
हम चरण झुकाएँ माथ, वसु गुण हृदय वसें।।
प्रभु कर्म निर्जरा हेतु, हम गुण गाते हैं।
हे नाथ! आपकी आज, महिमा गाते हैं।।७।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि० स्वाहा।

फल ताजे ले सरकार, पूज रहे स्वामी।
हम पाएँ मुक्ती द्वार, बने प्रभु शिवगामी।।
प्रभु कर्म निर्जरा हेतु, हम गुण गाते हैं।
हे नाथ! आपकी आज, महिमा गाते हैं।।८।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा।

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, चढ़ाकर हर्षाएँ।
हम पाके सुपद अनर्घ्य, मोक्ष पदवी पाएँ।।
प्रभु कर्म निर्जरा हेतु, हम गुण गाते हैं।
हे नाथ! आपकी आज, महिमा गाते हैं।।९।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा।

दोहा–**नीर भराया कूप से, देने शांती धार।**
शांति पाएँ हम विशद, वन्दन बारम्बार।।

शान्तये शान्तिधारा

उपवन के यह पुष्प ले, अर्चा करते देव।
जब तक मुक्ती ना मिले, ध्याएँ तुम्हें सदैव।।

पुष्पांजलि क्षिपामि

जयमाला

दोहा–**गंधकुटी में शोभते, तीर्थंकर भगवान।**
जयमाला गाते यहाँ, करते हैं गुणगान।।

(ज्ञानोदय छन्द)

समवशरण सौभाग्य प्रदायक, भव्य जीव का शरणागार।
सदा बरसती है श्री मुख से, चिदानन्द मय अमृत धार।।
निज स्वभाव में लीन हुए तव, प्रभु जो ध्याये शुक्ल ध्यान।
मोहनीय क्षय कर प्रगटाया, यथाख्यात चारित्र महान।।१।।
फिर एकत्व वितर्क ध्यान कर, प्रगटाए प्रभु केवल ज्ञान।
लोकालोक ज्ञान में प्रभु जी, दर्शाए प्रतिबिम्ब समान।।
गुणानन्त के धारी चिन्मय, चेतन चन्द अपूर्व महान।
समवशरण में शोभा पाए, राग रहित जिन आभावान।।२।।
तन्मय होकर निज वैभव में, भोगें प्रभु आनन्द अपार।
सभी ज्ञान में ज्ञेय झलकते, नहीं ज्ञेय के जो आधार।।
जहाँ धर्म की वर्षा होवे, समवशरण वह मंगलकार।

कल्पतरु सम भवि जीवों को, रहा लोक में शुभ आधार।।३।।
इन्द्रराज की आज्ञा पाकर, धनपति रचना करें महान।
निज की कृति ही भाषित होवे, आश्चर्यकारी आभावान।।
दर्श अनन्त ज्ञान सुख बल से, सदा सुशोभित हों जिनराज।
चौंतीस अतिशय प्रातिहार्य युत, विशद ज्ञान के होते ताज।।४।।
वैभव अंतर्वाह्य निरखकर, भव्य लहें आनन्द अपार।
प्रभु के चरण कमल में वन्दन, कर पाएँ नर सौख्य अपार।।
कृत्रिम रचना समवशरण की, करें विशद जो अतिशयकार।
जिनबिम्बों को स्थापित कर, पूजा करते मंगलकार।।५।।

दोहा–**तीर्थंकर भगवान हैं, गुणानन्त के कोष।**
महिमागाते हम यहाँ, जीवन हो निर्दोष।।

ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा–**महिमा गाते आपकी, हे जिनवर तीर्थेश।**
कर्म निर्जरा कर विशद, पाएँ निज स्वदेश।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री गणधर विलय विधान पूजा

स्थापना

दोहा–**तीर्थंकर गणधर परम, पाए केवलज्ञान।**
ऋषी सप्त विध का हृदय, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

।।छन्द-चौपाई।।

नीर भराया मंगलकारी, रोग जरादिक का परिहारी।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।१।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः जलं.स्वाहा।

चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए, भव सन्ताप नाश हो जाए।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।२।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः चन्दनं नि. स्वाहा।

अक्षत यहाँ चढ़ाते भाई, जो है अक्षत सुपद प्रदायी।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।३।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः अक्षतं नि. स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए, काम रोग मेरा नश जाए।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।४।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः पुष्पं नि. स्वाहा।

शुभ नैवेद्य चढ़ा हर्षाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।५।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः नैवेद्यं नि. स्वाहा।

घृत के पावन दीप, जलाएँ, मोह तिमिर हम पूर्ण नशाएँ।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।६।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः दीपं नि. स्वाहा।

सुरभित धूप जलाने लाए, आठों कर्म नशाने आए।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।७।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः धूपं नि. स्वाहा।

फल ताजे यहाँ चढ़ाएँ, मोक्ष महा पदवी को पाएँ।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।८।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः फलं नि. स्वाहा।

अर्घ्य 'विशद' यह पावन लाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।९।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा–**देके शांतिधार हम, पाएँ सम्यक् ज्ञान।**
प्रगट होय मेरे विशद, वीतराग विज्ञान।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा–**पुष्पों से पुष्पांजलि, करते हैं हम आज।**
यही भावना है विशद, पाएँ निज स्वराज।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा–**लघुनन्दन तीर्थेश के, निजवाणी के लाल।**
परम पूज्य गणराज की, गाते हम जयमाल।।

(विष्णुपद छन्द)

ज्ञान मूर्ति सर्वज्ञ हितैषी, गुरुवर उपकारी।
तीन गुप्ति को वश में करते, गुण अनंत धारी।।
जगत् पूज्य गणधर स्वामी के, चरणों सिरनाएँ।
गणधर स्वामी के गुण नत हो, पल-पल हम गाएँ।।१।।
हृदय-कमल में आन विराजो, मुक्ती पथ गामी।
सर्व अमंगल हरने वाले, सादर प्रणमाममी।।
गुरु अर्चन करते हे भगवन्!, सिद्धालय जाएँ।
गणधर स्वामी के गुण नत हो, पल-पल हम गाएँ।।२।।
पंचाचार परायण गुरुवर, संयम तप धारी।
चार ज्ञान पाने वाले, हे गुरुवर अनगारी!।।
ज्ञानी ध्यानी परम गुरु से, विशद ज्ञान पाएँ।
गणधर स्वामी के गुण नत हो, पल-पल हम गाएँ।।३।।
दश धर्मों को हृदय सजाते, हैं बहुश्रुत ज्ञानी।
हे रत्नाकर! ज्ञान प्रदाता, जीवित जिनवाणी।।

उत्तम संयम के धारी तुम, चरणों सिर नाएँ।
गणधर स्वामी के गुण नत हो, पल-पल हम गाएँ।।४।।
धर्म ध्यान में लीन निरन्तर, रत्नत्रय धारी।
हे योगीश्वर! महामुनीश्वर!, गुरुवर हितकारी।।
भूतल के भगवान आपसे, भगवत्ता पाएँ।
गणधर स्वामी के गुण नत हो, पल-पल हम गाएँ।।५।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा–**गणनायक मुनि संघ के, जैन धर्म के ईश।**
भक्ति भाव से चरण में, झुका रहे हम शीश।।

इत्याशीर्वादः

श्री नवलब्धि विधान पूजा

स्थापना

केवल रवि का उदय प्राप्त हो, अतः जगाँ सद् श्रद्धान।
सम्यक् ज्ञानाचरण प्राप्त कर, नव लब्धी पाएँ भगवान।।
दान लाभ भोगोपभोग शुभ, वीर प्राप्त हो क्षायिक दर्श।
क्षायिक दर्शन ज्ञान चरित पा, जागे अन्तर में उत्कर्ष।।

दोहा–**पा क्षायिक नव लब्धियाँ, प्राप्त करें शिव धाम।**
आह्वानन् करते हृदय, करके विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

।। ताटंक छन्द ।।

सम्यक्ज्ञान अरी को पाकर, जन्म जरादिक रोग हरें।
अजर अमर अविनाशी पद पा, चेतन गुण का भोग करें।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान!।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सम्यक् श्रद्धा का चन्दन ले, भवाताप ज्वर नाश करें।
सिद्ध शुद्ध अविनाशी निर्मल, चेतन तत्त्व प्रकाश करें।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान!।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

सम्यक् चारित्र के अक्षत से, अक्षय निधि पाने आये।
भव सिन्धू से पार हेतु जिन, गुण पूजा कर सुख पाये।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान!।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा।

रत्नत्रय के पुष्प चढ़ाकर, शील सुगुण हम प्रगटाएँ।
कामबाण विध्वंश करें अब, महाशील पति बन जाएँ।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान!।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय विध्वंशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

सम्यक् तपमय तप के चरु से, पूजा करके हर्षायें।
नाश करें हम क्षुधा वेदना, परम तृप्ति उर में पायें।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान!।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

सद् आराधना के दीपक से, सम्यक्ज्ञान विकाश करें।
मोह कर्म करके विनाश अब, केवलज्ञान प्रकाश करें।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान!।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

दश धर्मों की धूप बनाकर, ध्यान अग्नि में दहन करें।
अष्ट कर्म परिपूर्ण नाश कर, सिद्ध सुपद को ग्रहण करें।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान!।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

उत्तम संयम के फल से हम, पूजा कर महिमा गाएँ।
अजर अमर पद पाकर के अब, सिद्धशिला पर बश जाएँ।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान!।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय महामोक्षफल प्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

नव द्रव्यों का अर्घ्य बनाकर, नव कोटी से यजन करें।
नव केवल लब्धी पाकर के, सिद्ध लोक को गमन करें।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान!।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा–**हर्षभाव के साथ हम, करें प्रभू गुणगान।**
शांतीधारा से विशद, जागे निज उपमान।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा–**पुष्पों की शुभ गंध से, महके भू आकाश।**
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, होवे ज्ञान प्रकाश।।

।। पुष्पाजलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा–**जयमाला गाते यहाँ, हे जिनेन्द्र! भगवान।**
क्षायिक लब्धी प्राप्त कर, करें आत्म कल्याण।।

(वीर छन्द)

सदाचार को पाने वाले, सद् श्रावक कहलाते हैं।
सदाचार के द्वारा प्राणी, श्रेष्ठ सुपथ को पाते हैं।।

सम्यक् श्रद्धा पाने वाले, भेद ज्ञान प्रगटाते हैं।
जिनश्रुत के अभ्यासी जग में, सम्यक्ज्ञान जगाते हैं।।१।।
तत्त्व का निर्णय करने वाले, सम्यक् चारित पाते हैं।
सम्यक् तप की अग्नि में फिर, कर्म के पुञ्ज जलाते हैं।।
श्रावक बारह व्रत पाकर, श्रावक धर्म निभाते हैं।
अनुक्रम से ग्यारह प्रतिमाधर, श्रावक श्रेष्ठ कहाते हैं।।२।।
क्षुल्लक ऐलक बनने वाले, मुनि पद का करते अभ्यास।
महाव्रती मुनि पद पाने की, सदा रखे जो मन में आस।।
मुनि प्रमत्त व्रत के धारी हो, ज्ञान-ध्यान-तप करते घोर।
अप्रमत्त व्रतधारी होकर, निज में होते भाव विभोर।।३।।
अप्रमत्त सातिशय धारी, करते श्रेणी का प्रारम्भ।
अपूर्वकरण गुणस्थान से होता, शुक्ल ध्यान का शुभ आरम्भ।
क्षायिक श्रेणी पाने वाले, निज गुण का नित करें विकाश।
यथाख्यात चारित्र प्राप्त कर, करें घातिया कर्म विनाश।।४।।
फिर अरहंत दशा प्रकटाकर, केवलज्ञान जगाते हैं।
उसी समय क्षायिक नवलब्धी, स्वयं आप प्रगटाते हैं।।
आयुकाल पर्यन्त धरा पर, अबुद्धि पूर्वक करते योग।
मानों श्रेष्ठ लब्धियों का तो, बिन प्रयोजन होता योग।।५।।
योग निरोध प्राप्त करते फिर कर्म अघातिया करके क्षीण।
सिद्ध सुपद को पाकर निज के, ही स्वरूप में होते लीन।।
सादि अनन्त काल तक रहकर, निजानन्द रस करते दान।
अक्षय अनन्त सुख के धारी हो, कहलाते हैं सिद्ध महान्।।६।।

दोहा–**नव केवल शुभ लब्धियाँ, पाने श्रेष्ठ महान्।**
सम्यक् चारित्र प्राप्त कर, करें आत्म का ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–**बनकर के योगी प्रभु, पायें केवलज्ञान।**
शिवपथ के राही बनें, करें स्वपर कल्याण।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

कांजी द्वादशी व्रत पूजा

स्थापना

करे श्रवण द्वादशी सुव्रत जो, वे नर पाए पुण्य निधान।
सुख शांती सौभाग्य प्राप्त कर, अन्तिम पावें पद निर्वाण।।
व्रताराध्य श्री वासुपूज्य का, करते जो प्राणी गुणगान।
अल्पसमय में प्राप्त करें वे, भव्य जीव आतम कल्याण।।

दोहा–**भक्ती करते भाव से, करते हैं गुणगान।**
विशद हृदय में आज हम, करते निज आह्वान।।

ॐ ह्रीं कांजिकाव्रतोद्यापने अर्हन् परमेष्ठन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्धिकरणम्।

।। तर्जः–माता तू दया करके ।।

हम भक्ति भाव का जल, अर्चा करने लाए।
प्रभु श्रद्धा भक्ती से, तव चरण शरण आए।।
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ।
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें।।१।।

ॐ ह्रीं कांजिकाव्रतद्योतनावसरे श्रीपरंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो जलं नि. स्वाहा।

शीतल चन्दन लेकर, जिन चरण चढ़ाते हैं।
भव ताप नाश होवे, हम महिमा गाते हैं।।
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ।
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें।।२।।

ॐ ह्रीं कांजिकाव्रतद्योतनावसरे श्रीपरंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो चंदनं नि. स्वाहा।

हम अक्षय पद पाने, अक्षत ये लाए हैं।
शिव पदवी पाने के, शुभ भाव बनाए हैं।।
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ।
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें।।३।।

ॐ ह्रीं कांजिकाव्रतद्योतनावसरे श्रीपरंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो अक्षतं नि. स्वाहा।

यह पुष्प मनोहर शुभ, अर्चा को लाए हैं।
रुज काम नाश करने, चरणों सिरनाए हैं।।
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ।
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें।।४।।

ॐ ह्रीं कांजिकाव्रतद्योतनावसरे श्रीपरंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

यह क्षुधा रोग नाशी, नैवेद्य बनाए हैं।
हे नाथ चरण में हम, पूजा को आए हैं।।
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ।
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें।।५।।

ॐ ह्रीं कांजिकाव्रतद्योतनावसरे श्रीपरंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

हम मोह कर्म द्वारा, जग में भटकाए हैं।
यह मोह तिमिर नाशी, पूजा को लाए हैं।।
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ।
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें।।६।।

ॐ ह्रीं कांजिकाव्रतद्योतनावसरे श्रीपरंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

हम कर्मों के द्वारा, सदियों से सताए हैं।
वह कर्म नशाने को, यह धूप जलाए हैं।।
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ।
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें।।७।।

ॐ ह्रीं कांजिकाव्रतद्योतनावसरे श्रीपरंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

कर्मों का फल प्राणी, इस जग में पाते हैं।
हम मुक्ती फल पाने, फल यहाँ चढ़ाते हैं।।
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ।
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें।।८।।

ॐ ह्रीं कांजिकाव्रतद्योतनावसरे श्रीपरंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

हम पर में खोकर के, निज को विसराये हैं।
यह अर्घ्य चढ़ाने को, हम लेकर आए हैं।।
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ।
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें।।९।।

ॐ ह्रीं कांजिकाव्रतद्योतनावसरे श्रीपरंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा–**विशद शांति की आश ले, आए आपके द्वार।**
शांती धारा दे रहे, पाने भव दधि पार।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा–**शिव पद पाने के लिए, पूजा करते नाथ।**
पुष्पांजलि कर पूजते, करते हैं गुणगान।।

।। दिव्य पुष्पाजलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा–**अष्ट ऋद्धियों के यहाँ, भेदों का गुणगान।**
भाव सहित हमने किया, करते अब जयगान।।

(ज्ञानोदय छन्द)

छियालिस मूलगुणों के धारी, दोष अठारह रहित महान।
कर्म घातिया से विरहित हैं, जगत् पूज्य अर्हत् भगवान्।।
अष्ट महागुण के धारी हैं, सिद्ध सनातन मंगलकार।
परमेष्ठी आचार्य पालने, वाले गाये पञ्चाचार।।१।।
उपाध्याय पच्चिस गुणधारी, पाठक होते हैं अनगार।
रत्नत्रय के धारी साधू, करें साधना अपरम्पार।।
महा तपस्या करने वाले, करते अपने कर्म विनाश।
अनायास ही श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, प्रगटित होती जिनके पास।।२।।
बुद्धि ऋद्धि को पाने वाले, ऋषिवर पाते अनुपम ज्ञान।
अंग पूर्व का ज्ञान प्राप्त कर, करते हैं जो जग कल्याण।।

उग्र-उग्र तप करने वाले, मुनि को तप ऋद्धी हो प्राप्त।
विष अमृत बन जाता कर में, जिन मुनीन्द्र के अपने आप।।३।।
मुनी विक्रिया ऋद्धीधारी, मन वांछित करते स्वरूप।
हल्का भारी गुरु लघु भाई, मुनिवर स्वयं बनावें रूप।।
औषधि ऋद्धी के प्रभाव से, जीवों पर करते उपकार।
रोग शोक संताप आदि का, मुनिवर करते हैं परिहार।।४।।
चारण ऋद्धीधारी ऋषिवर, थल वत् जल में करें विहार।
या आकाश में विचरण करते, ऋद्धी या मुनिवर निराधार।।
बल ऋद्धी के धारी ऋषि के, आगे योद्धा मानें हार।
वीर्यवान हो जाते ऋषिवर, शक्ति का ना रहता पार।।५।।
प्रकट होय रस ऋद्धी जिनको, नीरस भोजन भी रसवान।
उन ऋषियों के कर में भाई, हो जाता है महति महान।।
ऋषि अक्षीण महानस धारी, का होता है जहाँ गमन।
भरते हैं भण्डार द्रव्य के, हो जाता है वहाँ चमन।।६।।
यह सब मुनिवर के प्रताप से, हो जाता है अपने आप।
'विशद' साधना करने वाले, ऋषियों के कट जाते पाप।।
भव सिन्धू में पड़े हुए हैं, दुख भोगे हैं अपरम्पार।
यही भावना भाते हैं हम, भव सिन्धू से पाएँ पार।।७।।

दोहा–**अष्ट ऋद्धिधारी ऋषी, तिष्ठें जिस स्थान।**
आधि व्याधियों का वहाँ, रहे ना नाम निशान।।

ॐ ह्रीं श्री कांजिकाया: व्रतोद्योतने अष्ट ऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**जिन अर्चा करके विशद, ऋद्धि सिद्धि हो प्राप्त।**
अनुक्रम से वे जीव सब, बन जाते हैं आप्त।।

।। इत्याशीर्वाद: ।।

***

मौन एकादशी व्रत पूजा ।।सुकौशल व्रत।।

स्थापना

मौन एकादशि व्रत है पावन, जिसको धारण करके जीव।
भाव सहित व्रत का पालन कर, प्राप्त करें जो पुण्य अतीव।।
श्री श्रेयांस जिनवर की अर्चा, करके पाएँ पुण्य निधान।
विशद हृदय में नाथ! आपका, भाव सहित करते आह्वान।।

दोहा–**अर्चा करने आपकी, भक्त खड़े हैं द्वार।**
चरणों वन्दन हम करें, नत हो बारम्बार।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य श्री जिनेन्द्र! अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

।। चाल छन्द ।।

भर कर लाए प्रासुक नीर, चरणों धार करें।
पा जाएं भव का तीर, तीनों रोग हरें।।
मौन एकादशि व्रतवान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।१।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य श्री जिनेन्द्राय नम: जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन की परम सुवास, चारों दिश महके।
हो भव आताप विनाश, मन मेरा चहके।।
मौन एकादशि व्रतवान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।२।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य श्री जिनेन्द्राय नम: चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत ये धवल महान, धोकर के लाए।
पद अक्षय मिले प्रधान, अर्चा को आए।।
मौन एकादशि व्रतवान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।३।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य श्री जिनेन्द्राय नम: अक्षतं निर्व. स्वाहा।

यह पुष्प लिए शुभकार, पावन गंध भरे।
हो काम रोग निरवार, मम आह्लाद भरे।।
मौन एकादशि व्रतवान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।४।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य श्री जिनेन्द्राय नमः पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य लिए रसदार, पूजा को लाए।
हो क्षुधा रोग परिहार, जिन महिमा गाए।।
मौन एकादशि व्रतवान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।५।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य श्री जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

यह जला रहे शुभ दीप, मोह तिमिर नाशी।
अर्पित कर चरण समीप, होवें शिव वासी।।
मौन एकादशि व्रतवान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।६।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं निर्व. स्वाहा।

यह धूप जलाएँ नाथ!, आठों कर्म नशें।
हम चरण झुकाएँ माथ, वसु गुण हृदय बसें।।
मौन एकादशि व्रतवान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।७।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य श्री जिनेन्द्राय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।

फल ताजे ले रसदार, पूज रहे स्वामी।
हम पाएँ मुक्ती द्वार, बनें प्रभु शिवगामी।।
मौन एकादशि व्रतवान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।८।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य श्री जिनेन्द्राय नमः फलं निर्व. स्वाहा।

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, चढ़ा कर हर्षाएँ।
हम पा के सुपद अनर्घ्य, मोक्ष पदवी पाएँ।।

मौन एकादशि व्रतवान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।९।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–**नीर भराया कूप से, देने शांती धार।**
शांती पाएँ हम विशद, वन्दन बारम्बार।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा–**उपवन के यह पुष्प ले, अर्चा करते देव!।**
जब तक मुक्ती ना मिले, ध्यायें तुम्हें सदैव।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा–**मौन एकादशि व्रत करें, जग में जो भी जीव।**
जयमाला गाएँ विशद, पावें पुण्य अतीव।।

(शम्भू छन्द)

जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में, कौशल देश हैं महति महान।
कौशाम्बी नगरी है पावन, पद्म प्रभु का जन्म स्थान।।१।।
हरि वाहन नृप शशि प्रभा का, पुत्र सुकौशल विद्यावान।
क्रीड़ा में रत रहता था जो, राज्य पे ना देता था ध्यान।।२।।
मुनि सोमप्रभ से राजा ने, पुत्र का पूछा भूत भविष्य।
तव मुनिवर ने कहा भूप से, हो एकाग्र सुनो हे शिष्य!।।३।।
रणवीर सिंह रानी त्रिलोचना, की पुत्री तुंगभद्रा नाम।
थी अनाथनी पिहिताश्रव मुनि, के पद जाके किया प्रणाम।।४।।
पौष वदी एकादशि का व्रत, सोलह पहर का करो विशेष।
उभय लोक में पुण्योदय से, जीवन सुखमय बने अशेष।।५।।
राजा को वैराग्य हुआ सुन, दिया सुकौशल को साम्राज्य।
हो अनभिज्ञ राजनीति से, हो विरक्त जो कीन्हें राज्य।।६।।
मतिसागर भण्डारी ने छल, किया राज्य में जब इक बार।
दिया निकाला राज्य से नृप ने, फिरा भटकता बारम्बार।।७।।

मरकर शेर हुआ भण्डारी, वन में करने लगा शिकार।
नृपति सुकौशल दीक्षा धारे, वन-वन करने लगे विहार।।८।।
क्रूर सिंह ने मुनि को देखा, निर्दय होके कीन्हा वार।
मर के नरक गति को पाया, पाया उसने दुःख अपार।।९।।
तन विदीर्ण हो गया मुनी का, किन्तु किए मुनि स्थिर ध्यान।
अन्तः कृत केवल ज्ञानी हो, प्राप्त किए जो पद निर्वाण।।१०।।

दोहा–**मौन एकादशि व्रत किया, तुंग भद्रा ने खास।**
जिसके फल से राज्य अरु, पाया शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध श्री जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–**महिमा व्रत की आगम है, जान सके तो जान।**
'विशद' मोक्ष पद पाएगा, रखना यह श्रद्धान।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

***

सुख सम्पत्ति विधान पूजा

काल अनादि अनन्त लोक में, भ्रमण करे यह जीव त्रिकाल।
देव धर्म गुरु में श्रद्धा से, कटे कर्म का फैला जाल।।
संयम तप के धारी साधू, संवर और निर्जरा वान।
अष्ट कर्म का नाश करें वे, पाएँ पावन पद निर्वाण।।

दोहा–**पज रहे हम भाव से, सिद्ध अनन्तानंत।**
आह्वान करते हृदय, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं सुखसम्पत्ति व्रताराध्यश्री तीर्थंकर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर सवौषट आह्वानन्! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

।। गीता छन्द ।।

हम नीर निर्मल क्षीर सागर, से कलश भर लाए हैं।
अब रोग जन्मादिक मिटाने, जिन शरण में आए हैं।।

हम आज सुख सम्पत्ति सुव्रत की, कर रहे हैं अर्चना।
हे नाथ! करते आपके, चरणों में शत शत वन्दना।।१।।

ॐ ह्रीं सुखसम्पत्ति व्रताराध्यश्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन सुगन्धित नीर ये, हम आज घिसकर लाए हैं।
भव ताप का संताप हरने, जिन शरण में आए हैं।।
हम आज सुख सम्पत्ति सुव्रत की, कर रहे हैं अर्चना।
हे नाथ! करते आपके, चरणों में शत शत वन्दना।।२।।

ॐ ह्रीं सुखसम्पत्ति व्रताराध्यश्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अखण्डित सौख्य निधि, भण्डार भरने आए हैं।
अक्षय धवल के पुंज हम यह, अर्चना को लाए हैं।।
हम आज सुख सम्पत्ति सुव्रत की, कर रहे हैं अर्चना।
हे नाथ! करते आपके, चरणों में शत शत वन्दना।।३।।

ॐ ह्रीं सुखसम्पत्ति व्रताराध्यश्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

निज आत्म गुण की गंध पाने, सुमन सुरभित लाए हैं।
निजराज पद पंकज शरण पा, हम विशद हर्षाए हैं।।
हम आज सुख सम्पत्ति सुव्रत की, कर रहे हैं अर्चना।
हे नाथ! करते आपके, चरणों में शत शत वन्दना।।४।।

ॐ ह्रीं सुखसम्पत्ति व्रताराध्यश्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य यह रसदार ताजे, थाल मेंभर लाए हैं।
हम क्षुधा व्याधी नाश करने, को यहाँ पर आए हैं।।
हम आज सुख सम्पत्ति सुव्रत की, कर रहे हैं अर्चना।
हे नाथ! करते आपके, चरणों में शत शत वन्दना।।५।।

ॐ ह्रीं सुखसम्पत्ति व्रताराध्यश्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम मोह तम से अंध होकर, जगत में भटकाए हैं।
है दीप शास्वत चेतना का, वह जलाने आए हैं।।
हम आज सुख सम्पत्ति सुव्रत की, कर रहे हैं अर्चना।
हे नाथ! करते आपके, चरणों में शत शत वन्दना।।६।।

ॐ ह्रीं सुखसम्पत्ति व्रताराध्यश्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

हम अष्ट कर्मों के सताए, दुःख पाते हैं सभी।
है शुद्ध शास्वत नित्य चेतन, ना उसे जाना कभी।।
हम आज सुख सम्पत्ति सुव्रत की, कर रहे हैं अर्चना।
हे नाथ! करते आपके, चरणों में शत शत वन्दना।।७।।

ॐ ह्रीं सुखसम्पत्ति व्रताराध्यश्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

हम आत्म गुण वैभव स्वयं का, नित्य पाने आए हैं।
अतएव यह फल आपके, पद में चढ़ाने लाए हैं।।
हम आज सुख सम्पत्ति सुव्रत की, कर रहे हैं अर्चना।
हे नाथ! करते आपके, चरणों में शत शत वन्दना।।८।।

ॐ ह्रीं सुखसम्पत्ति व्रताराध्यश्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय फलं निर्व. स्वाहा।

अनमोल गुण निज आत्मा के, प्राप्त ना कर पाए हैं।
यह अर्घ्य शुभ करके समर्पित, आज पाने आए हैं।।
हम आज सुख सम्पत्ति सुव्रत की, कर रहे हैं अर्चना।
हे नाथ! करते आपके, चरणों में शत शत वन्दना।।९।।

ॐ ह्रीं सुखसम्पत्ति व्रताराध्यश्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–**चिन्मूरत चिन्तामणि, चिदानंद चिद्रूप।**
शांती धारा कर मिले, चेतन गुण रस कूप।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा–**श्री जिन चरण सरोज में, पुष्पांजलि करंत।**
त्रिभुवन में शांती बढ़े, होवे सौख्य अनन्त।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा–**सुख सम्पत्ती हेतु हम, सुख सम्पत्ति विधान।**
जयमाला हम गा रहे, मिले मुक्ति सोपान।।

(ज्ञानोदय छन्द)

शुक्ल पक्ष एकम से पूनम, जानो पन्द्रह दिन पर्यन्त।
पूजन जाप करें श्रद्धा से, इस जग के प्राणी श्रीमंत।।

एकम का व्रत एक करें शुभ, तज के मन के सभी विकार।
द्वितीया के व्रत दो होते हैं, पूजन जाप करें उर धार।।१।।
तृतीया के व्रत तीन करें फिर, चौथ के व्रत करना हैं चार।
पाँचे के व्रत पाँच बताए, षष्ठी के व्रत छह शुभकार।।
सातें के व्रत सप्त जानिए, आठें के हैं आठ प्रधान।
नौमी के व्रत नौ करना है, दशमी के दश रहे महान।।२।।
ग्यारस के व्रत ग्यारह जानो, बारस द्वादशि के मनहार।
तेरस के तेरह व्रत गाए, चौदस के चौदह व्रत धार।।
पूनम के व्रत पन्द्रह करके, उद्यापन कर करें विधान।
इस प्रकार व्रत करें जीव को, सुख शांती सौभाग्य प्रदान।।३।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण शुभ, रत्नत्रय के धारी जीव।
मोक्ष मार्ग में कारण हैं जो, प्राप्त करें शुभ पुण्य अतीव।।
उत्तम संयम तप धारण कर, संवर और निर्जरा वान।
होकर कर्मों का क्षय करते, प्राप्त करें जो शुक्ल ध्यान।।४।।
क्षायिक श्रेणी पर आरोहण, करते कर्म विनाश।
कर्म घातिया नाश करें फिर, करते केवल ज्ञान प्रकाश।।
आर्यु कर्म के साथ अघाती, कर देते कर्मों का नाश।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सिद्ध शिला पर करते वास।।५।।

दोहा–**अष्ट कर्म को नाशकर, होते सिद्ध महान।**
विशद भाव से हम करें, नाथ! अपना ध्यान।।

ॐ ह्रीं सुखसम्पत्ति व्रताराध्यश्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–**प्रभू हमारे आप हो, आप हमारे नाथ।**
भक्ती करते आपकी, चरण झुकाते माथ।।

।। इत्याशीर्वादः।। पुष्पांजलि क्षिपेत ।।

***

आकाश पंचमी विधान पूजा

(स्थापना)

व्रत आकाश पंचमी पावन, करते हैं जो जीवन महान।
चौबिस तीर्थंकर की अर्चा, खुले गगन में करें प्रधान।।
भादों शुक्ल पंचमी का व्रत, पाँच वर्ष करते शुभकार।
सुख शांती सौभाग्य मयी हो, उनका जीवन मंगलकार।।

दोहा–**कर्म घातिया से रहित, तीर्थंकर भगवान।**
जिनकी अर्चा को हृदय, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

॥ मोतियादाम-छन्द ॥

नीर यह चढ़ा रहे भगवान, रोग जन्मादिक नशे प्रधान।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।१।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते गंध सुगन्धी वान, मिटे मेरा भव रुज भगवान।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।२।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत आभावान, प्राप्त हो अक्षय सुपद महान।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।३।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प से आए परम सुवास, काम रुज का हो जाए नाश।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।४।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सुचरु यह लाए हम रसदार, क्षुधा का होवे अब संहार।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।५।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप यह घृत का लिया प्रजाल, मोह का नशे पूर्णतः जाल।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।६।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नि में खेने लाए धूप, कर्म नश पाएँ सुपद अनूप।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।७।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

सरस फल चढ़ा रहे भगवान, मोक्ष फल पाएँ महित महान।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।८।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्व. स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाकर पाएँ सुपद अनर्घ्य।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।९।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–**शांती पाने के लिए, देते शांतीधार।**
तीर्थंकर जिन के चरण, अतिशय बारम्बार।।

॥ शान्तये शान्तिधारा ॥

दोहा–**पुष्पांजलि करते प्रभो! पाने पुष्प पराग।**
रत्नत्रय निधि प्राप्त हो, बुझे राग की आग।।

॥ पुष्पांजली क्षिपेत् ॥

जिन आराधना

दोहा–**व्रत आकाश पंचमी करें, जग में जो भी जीव।**
शिवपद दायी प्राप्त हो, उनको पुण्य अतीव।।

॥ पुष्पांजली क्षिपेत् ॥

जयमाला

दोहा–**तीर्थंकर श्री सुमतिजिन, अतिशय पूज्य त्रिकाल।**
आकाश पंचमी सुव्रत की, गाते हैं जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

देश कहा सौराष्ट्र महान, नगर तिलक पुर रहा प्रधान।
महीपाल राजा नरनाथ, थी विलक्षणा रानी साथ।।१।।
भद्रशाह व्यापारी जान, नन्दा स्त्री उसकी मान।
कन्या हुई विशाला नाम, स्वेत कुष्ट से दुखी तमाम।।२।।
एक वैद्य आया तव पास, सिद्ध चक्र अर्चा की खास।
दी औषधि कन्या का रोग, दूर हुआ वह हुई निरोग।।३।।
पिता ने वैद्य से किया विवाह, फिर परदेश की ली जो राह।
स्त्री ले चित्तोड़ की ओर, लोग वैद्य को मारे जोर।।४।।
विधवा हुई विशाल अनाथ, धनपति का तब छूटा साथ।
गई जिनालय मुनि के पास, मुनिवर उसे दिलो आस।।५।।
कर्मों का फल पाए जीव, कर्मोदय तव रहा अतीव।
पूर्व जन्म की वेश्या आप, कर उपसर्ग मुनी पर पाप।।६।।
बाँधा उसके फल से जान, कुष्ट रोग यह हुआ प्रधान।
अब पालन कर धर्माचार, जिससे होगी तूं भव पार।।७।।
व्रत आकाश पंचमी जान, भादों सुदि पाँचें को मान।
तज आहार धरें उपवास, श्री गुरु या जिनवर के पास।।८।।
चौबिस जिन की प्रतिमा जान, भक्ती करे खुले स्थान।
महामंत्र का करके जाप, पाँच वर्ष तक पालें आप।।९।।
किया विशाला व्रत शुभकार, मन में अतिशय श्रद्धाधार।
उज्जैनी का राजा जान, प्रियंगु सुन्दर जिसका नाम।।१०।।
रानी तारामति से मान, हुआ नन्द सुत अति गुणवान।
राज्यादिक सुख करके भोग, अन्त में धारा उसने योग।।११।।
फिर वह पाया शुक्ल ध्यान, अन्त में पाया पद निर्वाण।
व्रत जो पालन करें कराएँ, वे भी मोक्ष महाफल पाएँ।।१२।।

दोहा–**यह आकाश पाँचे सुव्रत, धार विशाला जान।**
सुन्दर तन धन पा मिला, अगले भव निर्वाण।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री समतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पर्णार्घ्यं नि. स्वहा

दोहा–**जिनवर की आराधना, करते हैं जो जीव।**
शिवपद कारी जीव वें, पावें पुण्य अतीव।।

।। इत्याशीर्वादः।।

***

मंगल त्रयोदशी (धनतेरस पूजा)

(स्थापना)

पावन मंगल त्रयोदशी, धनतेरस भी नाम।
व्रताराध्य श्री विमल जिन, का करते गुणगान।।
सुख शांति सौभाग्य प्रद, व्रत यह रहा महान।
हृदय कमल में आज हम, करते जिन आह्वान।।

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

।। शम्भू-छन्द ।।

जग में हम भटके सदियों से, न भाव शुद्ध हो पाए हैं।
अब निर्मलता पाकर मन में, जन्मादि नशाने आए हैं।।
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

इच्छाएँ पूर्ण न हो पाईं, मन में संताप बढ़ाए हैं।
अब इच्छाओं की शांती कर, संताप नशाने आए हैं।।

धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

मन खण्डित मण्डित हुआ सदा, आखिर अखण्ड पद न पाए।
अब इच्छाओं की शांति हेतु, यह पुञ्ज चढ़ाने को आए।।
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं।।३।।

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

हम काम बाण से बिद्ध रहे, न भोगों से बच पाए हैं।
अब काम रोग के नाश हेतु, यह पुष्प सुगन्धित लाए हैं।।
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं।।४।।

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

तृष्णा ने हमें सताया है, जीत उसे हम पाए हैं।
अब नाश हुते हम क्षुधा रोग, नैवेद्य चढ़ाने आए हैं।।
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं।।५।।

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम मोह तिमिर से अंध हुए, निज का स्वरूप न लख पाए।
निज ज्ञानदीप की ज्योति जले, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं।।६।।

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों के धूम से इस जग के, सारे ही जीव अकुलाए हैं।
अब कर्म नाश करने हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।।
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं।।७।।

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों का फल पाकर प्राणी, सारे जग में भटकाए हैं।
अब रत्नत्रय का फल पाएँ, फल यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं।।८।।

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

यह द्रव्य भाव में कारण है, उससे हम अर्घ्य बनाए हैं।
अब पद अनर्घ पाने हेतू, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं।।९।।

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(सुखमा छन्द)

जेठ कृष्ण दशमी दिन पाए, नगर कम्पिला धन बनाए।
जयश्यामा के गर्भ में आए, देव रत्न वृष्टी करवाए।।१।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण की चौथ बताई, जन्मे विमलनाथ जिन भाई।
जन्म कल्याणक देव मनाए, खुश हो जय जयकार लगाए।।२।।

ॐ ह्रीं माघकृष्ण चतुर्थ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल की चौथ कहाई, दीक्षा कल्याणक तिथि गाई।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, शिवपथ के राही कहलाए।।३।।

ॐ ह्रीं माघकृष्ण चतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल छठ रही सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, जीवों को सन्मार्ग दिखाए।।४।।

ॐ ह्रीं माघकृष्ण षष्ठम्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छठी कृष्ण आषाढ़ बखानी, प्रभु जी पाए मुक्ती रानी।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।।५।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाऽस्टम्या मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरह प्रकार के चारित्र के अर्घ्य

दोहा–**तेरह विध चारित है, जग में पूज्य महान्।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, करने को गुणगान।।

।।इति पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

हिंसा को पाप बताया, शुभ धर्म अहिंसा गाया।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।१।।

ॐ ह्रीं अहिंसा व्रत धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है झूठ पाप हे भाई! शुभ धर्म सत्य सुखदायी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।२।।

ॐ ह्रीं सत्य व्रत धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चोरी है बहु दुखदायी, है व्रताचौर्य हे भाई!।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।३।।

ॐ ह्रीं अचौर्य व्रत धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ब्रह्मचर्य धर्म कलहाए, अब्रह्म पाप जग गाए।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।४।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य व्रत धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है धर्म अपरिग्रह प्राणी, परिग्रह है दुख की खानी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।५।।

ॐ ह्रीं अपरिग्रह व्रत धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पाँच समिति के अर्घ्य

चौ कर भू लखकर जावें, वे समिति ईर्या पावें।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।६।।

ॐ ह्रीं ईर्या समिति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हित मित प्रिय बोलें वाणी, भाषा समीति धर ज्ञानी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।७।।

ॐ ह्रीं भाषा समिति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो है निर्दोषाहारी, वे समिति एषणा धारी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।८।।

ॐ ह्रीं एषणा समिति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आदान निक्षेपण धारी, होते हैं यत्नाचारी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।९।।

ॐ ह्रीं आदान निक्षेपण समिति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उत्सर्ग समिति में लागें, भू शोधी में मल त्यागें।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।१०।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग समिति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन गुप्ति के अर्घ्य

जो हैं मन गोपनकारी, वे मन गुप्ती के धारी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।११।।

ॐ ह्रीं मन गुप्ति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो वचनों के परिहारी, हों वचन गुप्ति के धारी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।१२।।

ॐ ह्रीं वचन गुप्ति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन की चेष्टा परिहारी, हों काय गुप्ति के धारी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।१३।।

ॐ ह्रीं काय गुप्ति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है सम्यक् चारित भाई, कहलाए मोक्ष प्रदायी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।१४।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश चारित्रधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा–**विमल गुणों को धारते, विमलनाथ भगवान।**
जयमाला गाते विशद, करते हैं गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

जम्बू द्वीप के भरतक्षेत्र में, आर्यखण्ड में मालव देश।
उज्जयनी पट्टन में श्रावक, था गुणपाल गरीब विशेष।।
मुनिवर के दर्श कर सोचे, हम भी दे मुनिवर को दान।।
सप्त ऋद्धि सम्पन्न ऋषिवर, सोम चन्द्र कर आए विहार।
पत्नी से गुणपाल ने बोला, देंगे मुनि को हम आहार।।
पत्नी ने सहमति दे बोला, इक-इक दिन का कर उपवास।।
फिर गुणपाल मुनी के चरणों, वन्दन करके कहता बात।
हो दारिद्रता दूर हमारी, दो हमको गुरु आशीर्वाद।।
मंगल त्रयोदशी व्रत करने, से दरिद्रता होगी दूर।
जीवन सुख शांतिमय होगा, खुशियाँ भी होगी भरपूर।।
कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को, विमलनाथ का कर अभिषेक।
तेरहपान रखे चौकी पर, अक्षतादि फल रखे विशेष।।
आदिनाथ से विमलनाथ तक, जिनवर का करके गुणगान।
श्रुत गणधर अरु यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल का कर सम्मान।।
विमलनाथ की पुष्प चढ़ाकर, एक सौ आठ बार कर जाप।
व्रतोपवास कर करें आरती, जिससे कटते भव के पाप।।
तेरह माह कर व्रत पालन, और चतुर्विध करके दान।

ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य बढ़ेगा, विशद रखो मन में श्रद्धान।।

दोहा–**मंगल त्रयोदशी व्रत किया, भाव सहित गुणपाल।**
व्रत का पालन कर हुआ, श्रावक मालामाल।।

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा–**व्रत की महिमा है अगम, अगम कहा जिनधर्म।**
विशद धर्म को धारकर, जीव होय निस्कर्म।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत।।

***

चौंसठ ऋद्धि विधान पूजा

(स्थापना)

यह संसार असार कहा है, इसमें नहीं है कुछ भी सार।
स्वजन और परिजन धन धरती, त्याग बनें साधू अनगार।।
उत्तम संयम तप के द्वारा, पाएँ श्रेष्ठ ऋद्धियाँ संत।
रत्नत्रय के धारी पावन, ऋषिवर होते हैं गुणवान।।

दोहा–**तीन लोक में श्रेष्ठ हैं, ऋद्धीधार ऋषीश।**
आह्वानन करते विशद, चरण झुकाते शीश।।

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरः! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

।। चाल छन्द ।।

हमने जल बहुत पिया है, ना समरस पान किया है।
अब नीर चढ़ाने लाए, त्रय रोग नशाने आए।।१।।

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन का लेप कराए, ना निज में चित्त लगाए।
चन्दन यह चरण चढ़ाएँ, शीतल स्वभाव को ध्याएँ।।२।।

ॐ ह्रीं चतु: षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय स्वभाव ना पाए, पर पद में ही भटकाए।
अब अक्षय पदवी पाँए, अक्षत ये धवल चढाएँ।।३।।

ॐ ह्रीं चतु: षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो अक्षत पदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

भव सन्तति सतत बढ़ाई, ना शील सम्पदा पाई।
सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।।४।।

ॐ ह्रीं चतु: षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो कामवाणबिध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

संज्ञा आहार दुखदायी, जो क्षुधा सताए भाई।
अब क्षुधा रोग विनशाएँ, ताजे चरु यहाँ चढ़ाएँ।।५।।

ॐ ह्रीं चतु: षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

है मोह का घोर अंधेरा, कब होगा ज्ञान सबेरा।
निज का पुरुषार्थ जगाएँ, अब ज्ञान का दीप जलाएँ।।६।।

ॐ ह्रीं चतु: षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा

हमको वसु कर्म सताते, निज गुण का घात कराते।
कर्मों की धूप जलाएँ, शाश्वत निज गुण प्रगटाएँ।।७।।

ॐ ह्रीं चतु: षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

हम कर्मों का फल पाए, ना आतम रस चख पाए।
अब उत्तम फल ये लाए, शिव फल की आस जगाए।।८।।

ॐ ह्रीं चतु: षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो मोक्षफल पदप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

हमने संसार बढ़ाया, ना विशद मार्ग अपनाया।
निज आत्म शक्ति प्रकटाएँ, शाश्वत अनर्घ्य पद पाएँ।।९।।

ॐ ह्रीं चतु: षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो अनर्घ्यपद पदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा–**नाथ! आपके द्वार पर, पूरी होती आस।**
शांती धारा दे रहे, पाने शिवपुर वास।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा–**अर्चा कर प्रभु आपकी, हुआ जगत उद्धार।**
पुष्पांजलि करते विशद, पाने भवदधि पार।।

।। पुष्पांजली क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा–**मंगलमय मंगल परम, मंगलमयी त्रिकाल।**
चौंसठ हैं शुभ ऋद्धियाँ, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

श्रेष्ठ तपस्या करने वाले, संत ऋद्धियाँ पाते हैं।
करने से एकाग्र ध्यान शुभ, मंत्र सिद्ध हो जाते हैं।।
मिथ्यावादी श्रावक कोई, मंत्र की सिद्धी करते हैं।
किन्तु ऋद्धी परम तपस्वी, जैन संत ही धरते हैं।।१।।
सिद्धी सर्व शुभाशुभ करने, वाली बड़ी विशेष कही।
ऋद्धी सबका हित करती है, मंगलमय जो श्रेष्ठ रही।।
मुनिवर निज के हेतु कभी न, करते ऋद्धी का उपयोग।
जन-जनको सुख देने वाली, ऋद्धी मैटे भव का रोग।।२।।
गणधर त्रेसठ श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, पाने वाले कहे ऋशीष।
केवल ऋद्धि पाते अर्हत्, होते जगती पति जगदीश।।
श्रेष्ठ ऋद्धि की शक्ती पाकर, भी न करते मान कभी।
परमेष्ठी को ध्याने वाले, करते जिनका ध्यान सभी।।३।।
ऋद्धीधारी मुनिवर जग में, सर्व सिद्धियाँ पाते हैं।
उस भव में या अन्य भवों में, परम मोक्ष को जाते हैं।।
बहुविधि सिद्धी पाने वाले, का कुछ निश्चित नहीं कहा।
मुक्ती पावें या न पावें, ऐसा निश्चित नहीं रहा।।४।।
जानके ऋद्धी की महिमा का, विशद हृदय श्रद्धान करें।
ऋद्धीधारी जिन संतों का, हृदय कमल में ध्यान करें।।
मोक्ष मार्ग के राही हैं जो, उनकी महिमा हम गाएँ।
चरण-कमल में वंदन की शुभ, विशद भावना हम भाएँ।।५।।

दोहा–**पूज्य हैं तीनों लोक में, ऋषिवर ऋद्धीवान।**
भाव सहित जिनका 'विशद', करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं चतु: षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–**सम्यक् तप से जीव यह, पाए ऋद्धि प्रधान।**
जिनकी अर्चा कर मिले, हमको शिव सोपान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।।

***

सप्तपमस्थान पूजन

(स्थापना)

दोहा– **तीर्थंकर चौबीस का, करते हम गुणगान।**
सप्त परम स्थान हैं, मुक्ति के सोपान।।

ॐ ह्रीं परम स्थान प्राप्तये श्री वृषभादि महावीर चतुर्विंशति जिन तीर्थंकराः।! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आहवानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

हम रहते हैं तैय्यार, क्रोधित हो को।
यह जल लाए हे नाथ!, आतम धोने को।।
है परम सप्त स्थान, शिव सुख पाने को।
हम करते हैं गुणगान, शिवपुर जाने को।।१।।

ॐ ह्रीं सप्त परम स्थान प्राप्तये श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो जलं निर्व. स्वाहा।

कर्मों की भारी मार, भव-भव में खाई।
निज गुण पाने की याद, हमको अब आई।।
है परम सप्त स्थान, शिव सुख पाने को।
हम करते हैं गुणगान, शिवपुर जाने को।।२।।

ॐ ह्रीं सप्त परम स्थान प्राप्तये श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो चन्दनं निर्व. स्वाहा।

हे अक्षय निधि भण्डार!, अक्षय पद धारी।
दो अक्षय पद दातार, हमको त्रिपुरारी।।
है परम सप्त स्थान, शिव सुख पाने को।
हम करते हैं गुणगान, शिवपुर जाने को।।३।।

ॐ ह्रीं सप्त परम स्थान प्राप्तये श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

उपवन में खिलते फूल, मुरझा जाते हैं।
हो काम रोग निर्मूल, महिमा गाते हैं।।
है परम सप्त स्थान, शिव सुख पाने को।
हम करते हैं गुणगान, शिवपुर जाने को।।४।।

ॐ ह्रीं सप्त परम स्थान प्राप्तये श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य बनाकर आज, पूज रहे स्वामी।
अब क्षुधा रोग हो नाश, हे अन्तर्यामी।।
है परम सप्त स्थान, शिव सुख पाने को।
हम करते हैं गुणगान, शिवपुर जाने को।।५।।

ॐ ह्रीं सप्त परम स्थान प्राप्तये श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जग कहलाए दीप, मोह तिमिर नाशी।
हम भी बन जाए नाथ, शिवपुर के वासी।।
है परम सप्त स्थान, शिव सुख पाने को।
हम करते हैं गुणगान, शिवपुर जाने को।।६।।

ॐ ह्रीं सप्त परम स्थान प्राप्तये श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो दीपं निर्व. स्वाहा।

हम चढ़ा रहे हैं धूप, कर्मों का क्षय हो।
अब हमको भी हो प्राप्त, पद जो अक्षय हो।।
है परम सप्त स्थान, शिव सुख पाने को।
हम करते हैं गुणगान, शिवपुर जाने को।।७।।

ॐ ह्रीं सप्त परम स्थान प्राप्तये श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो धूपं निर्व. स्वाहा।

तन मन करने संतुष्ट, फल कई खाते हैं।
फल सरस लिये यह आज, यहाँ चढ़ाते हैं।।
है परम सप्त स्थान, शिव सुख पाने को।
हम करते हैं गुणगान, शिवपुर जाने को।।८।।

ॐ ह्रीं सप्त परम स्थान प्राप्तये श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो फलं निर्व. स्वाहा।

पाकर के पद निर्वाण, शिवपुर जाते हैं।
पाने शिवपद भगवान, अर्घ्य चढ़ाते हैं।।
है परम सप्त स्थान, शिव सुख पाने को।

हम करते हैं गुणगान, शिवपुर जाने को।।९।।

ॐ ह्रीं सप्त परम स्थान प्राप्तये श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–**शांती पाने के लिए, देते शांतीधार।**
शांतीमय जीवन बने, होवें भव से पार।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा–**सप्त परम स्थान की, पूजा रची विशाल।**
'विशद' गुणों को प्राप्त कर, होवें मालामाल।।

।। पुष्पांजली क्षिपेत् ।।

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्हं सप्त परम स्थान प्राप्तये श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो नमः।

अर्घ्यावली

दोहा–**सज्जातिय सद् गृहस्थता,पारिव्राज्य देवेन्द्र।**
साम्राज्यं अरहंत पद, सप्त कहे जैनेन्द्र।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सम्यक् दर्शन निकट भव्यता, उच्चगोत्र है सज्जातितत्त्व।
मूलगुणों का धारी पाए, निज चेतन गुण का अस्तित्त्व।।
परम स्थान यह श्रेष्ठ कहा है, करते हम जिसका सम्मान।
विशद भावना भाते हैं यह, प्राप्त करें हम पद निर्वाण।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सज्जाति परम स्थान प्राप्तये श्री ऋषभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

राजा प्रजाआदि के द्वारा, प्राप्त करें जो सद् सम्मान।
सद् गृहस्थ कहलाए पावन, शिव पद का पाए उपमान।।
परम स्थान यह श्रेष्ठ कहा है, करते हम जिसका सम्मान।
विशद भावना भाते हैं यह, प्राप्त करें हम पद निर्वाण।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदगृहस्थ परम स्थान प्राप्तये श्री ऋषभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तेरह विधि चारित का धारी, सुर नर से हो पूज्य महान।
पारिव्राज्य धारी हो पावन, करे स्वयं आतम कल्याण।।
परम स्थान यह श्रेष्ठ कहा है, करते हम जिसका सम्मान।
विशद भावना भाते हैं यह, प्राप्त करें हम पद निर्वाण।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्य परम स्थान प्राप्तये श्री ऋषभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गुण सम्पत्त महर्द्धिक सुर पद, धारी कहलाए सुर इन्द्र।
सुरेन्द्रत्व पद पाने वाला, चयकर के जो बने नरेन्द्र।।
परम स्थान यह श्रेष्ठ कहा है, करते हम जिसका सम्मान।
विशद भावना भाते हैं यह, प्राप्त करें हम पद निर्वाण।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्र परम स्थान प्राप्तये श्री ऋषभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुण्य योग से सुर नरेन्द्र पद, पावे अतिशय जो साम्राज्य।
हो विरक्त मन वचन काय से, अन्त समय पावे शिवराज।।
परम स्थान यह श्रेष्ठ कहा है, करते हम जिसका सम्मान।
विशद भावना भाते हैं यह, प्राप्त करें हम पद निर्वाण।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्य परम स्थान प्राप्तये श्री ऋषभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म घातिया नाश करें जो, होवें अन्त चतुष्टय वान।
तीर्थंकर पद के धारी हो, प्राप्त करें फिर केवलज्ञान।।
परम स्थान यह श्रेष्ठ कहा है, करते हम जिसका सम्मान।
विशद भावना भाते हैं यह, प्राप्त करें हम पद निर्वाण।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्य परम स्थान प्राप्तये श्री ऋषभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश करें फिर, अष्ट सुगुण करते सम्प्राप्त।
विशद सुपद निर्वाण प्राप्त कर, बन जाते हैं प्राणी आप्त।।
परम स्थान यह श्रेष्ठ कहा है, करते हम जिसका सम्मान।
विशद भावना भाते हैं यह, प्राप्त करें हम पद निर्वाण।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाण परम स्थान प्राप्तये श्री ऋषभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सप्त परम स्थान लोक में, प्राप्त करें जो ज्ञानी जीव।
मोक्ष मार्ग के राही बनते, पाएँ अतिशय पुण्य अतीव।।
परम स्थान यह श्रेष्ठ कहा है, करते हम जिसका सम्मान।
विशद भावना भाते हैं यह, प्राप्त करें हम पद निर्वाण।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्त परम स्थान प्राप्तये श्री ऋषभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **सप्त परम स्थान की, महिमा रही विशाल।**
भाव सहित जिसकी यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

।। चौपाई ।।

श्रावक सम्यक् श्रद्धाधारी, अर्चा करते मंगलकारी।
तीर्थंकर चौबीस कहलाए, सुर नर मुनि जिन महिमा गाए।।१।।
आदिनाथ आदी में आए, अजितनाथ सब कर्म नशाए।
सम्भव नाथ कहे जगनामी, अभिनन्दन हैं शिव पथगामी।।२।।
सुमतिनाथ शुभ मति के धारी, पद्मप्रभु जग मंकलकारी।
जिन सुपार्श्व महिमा दिखलाए, चन्द्र प्रभु चन्दा सम गाए।।३।।
सुविधि नाथ हैं जग उपकारी, शीतल जिन शीतलता धारी।
जिन श्रेयांस जी श्रेय जगाए, वासुपूज्य जग पूज्य कहाए।।४।।
विमलनाथ कर्मों के जेता, जिनानन्त हैं कर्म विजेता।
धर्मनाथ हैं धर्म के धारी, शांतिनाथ जग शांतीकारी।।५।।
कुन्थुनाथ के गुण जग गाये, अरहनाथ पद शीश झुकाए।
मल्लिनाथ सब कर्म हटाए, मुनिसुव्रत पावन व्रत पाए।।६।।
नमीनाथ पद नमन हमारा, नेमिनाथ दो हमें सहारा।
पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, ढोक वीर पद में जग देता।।७।।
चौबिस जिन महिमा के धारी, कहे स्वयंभू जिन अविकारी।
जो इनके पद पूज रचाये, पुण्य सुनिधि वह प्राणी पाए।।८।।
सप्त परम स्थान कहाए, अनुक्रम से भवि प्राणी पाए।
सिद्ध शिला पर धाम बनाए, सुखानन्त में जो रम जाए।।९।।

दोहा–**सप्त परम स्थान व्रत, करते जो भवि जीव।**
शिव पद में कारण विशद, पावें पुण्य अतीव।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्त परम स्थान प्राप्तये श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**महिमा व्रत की है अगम, कोई ना पावे पार।**
शिवपथ का रही बने, होय आत्म उद्धार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

***

चन्दन षष्ठी व्रत पूजन

(स्थापना)

चन्दन सा है परम सुवासित, चन्द्र प्रभू का चरम शरीर।
कर दे वातावरण सुहाना, ज्यों पुष्पों से आए समीर।।
रूप धवल है सुयश धवल है, धवल चन्द्र सम चन्द्र जिनेश।
धवल हृदय में आह्वानन् हम, करते हैं प्रभु चे चन्द्रेश!।।

दोहा– **नाम चन्द्र प्रभु आपका, महिमा चन्द्र समान।**
चन्दन षष्ठी व्रत करें, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आहवानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

।। विष्णुपद छन्द ।।

सरिता का पावन नीर, भरकर हम लाए।
मिट जाए भव की पीर, अर्चा को आए।।
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के, साथ चरणों सिरनाते।।१।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन केशर में गार, प्रभु के पाद धरें।
अब भ्रमण मिटे संसार, भव सन्ताप हरें।।
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के, साथ चरणों सिरनाते।।२।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

हैं धवल रश्मि सम श्वेत, चावल शुभकारी।
अब अक्षय पद दो नाथ! अक्षय पद धारी।।
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के, साथ चरणों सिरनाते।।३।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

ये फूल हैं खुशबूदार, सुन्दर महकाएँ।
अब काम रोग हो क्षार, चरणों हम आए।।
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के, साथ चरणों सिरनाते।।४।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य लिए रसदार, थाली भर लाए।
हो क्षुधा रोग निरवार, चेतन रस आए।।
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के, साथ चरणों सिरनाते।।५।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

ये दीपक लिया प्रजाल, तम का जो नाशी।
हम मोह से है बेहाल, होवें शिव वासी।।
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के, साथ चरणों सिरनाते।।६।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्दकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में खेते धूप, दश दिशि गंध उड़े।
अब पाए सुपद अनूप, आतम सौख्य बढ़े।।
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के, साथ चरणों सिरनाते।।७।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ परमेश्वर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

हम पिस्ता अरु बादाम, श्री फल भी लाए।
अब पा जाए शिव धाम, शिव पाने आए।।
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के, साथ चरणों सिरनाते।।८।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

ले जल फलादि सब द्रव्य, अर्घ्य बनाये हैं।
अब पाए सुपद अनर्घ, चरण चढ़ाये हैं।।
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के, साथ चरणों सिरनाते।।९।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

दोहा–**शांती धारा दे रहे, शांती पाने आज**
चाह रहे हम भी विशद, मुक्ति वधु का ताज।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा–**पुष्पांजलि करने लिए, पावन हमने फूल।**
यह संसार असार तज, पाएँ शिव पद मूल।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा– **व्रत करते जो भाव से, वे हों मालामाल।**
चन्दन षष्ठी की विशद, गाते हैं जयमाल।।

।। शम्भू-छन्द ।।

काशी देश बनारस है प्रभु, पार्श्व सुपार्श्व का जन्म स्थान।
राजा सूर सेन की रानी, ज्ञानी थी अतिशय गुणवान।।
षट् ऋतु के फल फूल भेंट में, देने को लाया वनपाल।
हुआ आगमन प्रभू केवली, का राजा ने जाना हाल।।१।।

राजा गया दर्श करने को, पुरुजन परिजन को ले साथ।
तीन परिक्रमा करके प्रभु के, आगे सभी झुकाए माथ।।
मुनिवर ने तब सद्भक्तों को, दिया धर्म का सद्उपदेश।
राजा ने पूछा क्यों मुझको, है रानी से क्यों स्नेह विशेष।।२।।
देश अवन्ति उज्जैनी में, जिनदत्त सेठ जयवति जान।
ईश्वर चन्द पुत्र की पत्नी, रही चन्दना बहु गुणवान।।
मासोपवासी मुनि अतिमुक्तक, को पड़गाहे ईश्वर चंद्र।
ऋतुमति होकर भी आहार दे, माने मन में जो आनन्द।।३।।
गलित कुष्ट तब हुआ देह में, पति पत्नि दोनों को जान।
गुप्त पाप के फल से पाया, दोनों ने ही कष्ट महान।।
नगरोद्यान में श्री भद्रमुनि, कर विहार आए इक बार।
ईश्वर चन्द ने मुनि से पूछा, मुझे हुआ क्यों कष्ट अपार।।४।।
पात्र दान के लोभ से तुमने, ऋतु मति हो भी दिया अहार।
अपवित्र हो भी पवित्र का, झूठा किया चरित्राचार।।
पश्चात्ताप किया दम्पत्ति वह, रोग मुक्ति का करो उपाय।
चन्दन षष्ठी व्रत करने से, होगी भाई सुन्दर काय।।५।।
भादौवदि षष्ठी को व्रत कर, जिनाभिषेक पूजा कर जाप।
तीन काल सामायिक करके, छोड़े मन वच तन से पाप।।
व्रत पालन कर किए समाधि, पाया स्वर्ग लोग में वास।
वहाँ से चयकर राजा रानी, बनकर पाये श्रेष्ठ विकाश।।६।।
सुनकर राजा ने दीक्षा ले, कर्म नाश पाया निर्वाण।
रानी इन्द्र बनी स्वर्गों में, वह भी पाएगी शिव थान।।

दोहा–**ईश्वरचंद सति चन्दना, ने पावन व्रत धार।**
स्वर्ग मोक्ष पद प्राप्त कर, पाया सौख्य अपार।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **धर्म हृदय में धारकर, करें आत्म कल्याण।**
यही भावना है विशद, पाएँ शिव सोपान।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

***

श्री तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान पूजा

(स्थापना)

मोक्ष मार्ग के नेता हैं जो, कर्म शिखर के हैं भेदक।
सर्व तत्त्व के ज्ञाता पावन, दिव्य देसना उपदेशक।।
उन समान गुण पाने को हम, करते चरणों में अर्चन।
निज उर के सिंहासन पर जिन, मुनि का करते आह्वानन्।।

दोहा– **जैनागम का शास्त्र है, मोक्ष शास्त्र है नाम।**
पाने सम्यक् ज्ञान शुभ, बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्र मोक्ष शास्त्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आहवानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

।। छन्द मोतियादाम ।।

यह चरण चढ़ाने लिया नीर, अब रोग त्रय की मिटे पीर।
हम पूजरहे तब चरण नाथ!, दो मोक्ष मार्ग हमें साथ।।
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज।।१।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय दिव्य जलं निर्व. स्वाहा।

फैले चन्दन की बहु सुवास, हो भवाताप का पूर्ण नाश।
बनकर आये प्रभु ज्ञानवान, जो भवाताप की किए हान।।
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज।।२।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय भवाताप विनाशनाय दिव्य चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत ले पूजा करें आज, अब मोक्ष महल का मिले ताज।
हम पूजा करने खड़े द्वार, भव सिन्धू से अब करो पार।।
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज।।३।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय अक्षत पद प्राप्ताय दिव्य अक्षतं निर्व. स्वाहा।

यह पूजा करने लिए फूल, अब काम रोग का नशे मूल।
हम बनें नाथ अब शीलवान, शुभ प्राप्त करें निज गुण प्रधान।।
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज।।४।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय कामबाण विध्वंसनाय दिव्य पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह चरू चढ़ाते हैं महान, अब क्षुधा रोग की होय हान।
यह भक्त खड़े हैं लिए आस, प्रभु मोक्ष महल में होय वास।।
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज।।५।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय क्षुधारोग विनाशनाय दिव्य नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम करें दीप से जग प्रकाश, अब मोह महातम होय नाश।
प्रगटाएँ हम केवल्य ज्ञान, जो तीन लोक में है प्रधान।।
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज।।६।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दिव्य दीपं निर्व. स्वाहा।

शुभ खेने लाए यहाँ धूप, नश कर्म प्राप्त हो निज स्वरूप।
अब अष्ट कर्म का हो विनाश, सम्यक्त्व ज्ञान का हो प्रकाश।।
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।

तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज।।७।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय अष्ट कर्म दहनाय दिव्य धूपं निर्व. स्वाहा।

फल से हम पूजा करें देव, अब मोक्ष महाफल मिले एव।
अब मुक्ती पथ की मिले राह, मिट जाए मन की चाह दाह।।
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज।।८।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय मोक्षफल प्राप्ताय दिव्य फलं निर्व. स्वाहा।

अब चढ़ा रहे ये श्रेष्ठ अर्घ्य, पद भी हम पाएँ शुभ अनर्घ्य।
अब शाश्वत पद में हो निवास, हो जाए नाथ अब पूर्ण आस।।
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज।।९।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा– **निज में निज के रमण का, जागा मन में भाव।**
गाते हैं जयमालिका, पाने निज स्वभाव।।

।। शम्भू-छन्द ।।

काल अनादी से सब प्राणी, इस जग में भटकाए हैं।
मोह महामद को पीने से, कभी सम्हल न पाए हैं।।
धर्म प्रवर्तन करने वाले, तीर्थंकर होते चौबीस।
इन्द्र और नागेन्द्र भाव से, चरणों में झुकते शत् ईश।।१।।
गणधर के द्वारा जिनवर की, वाणी झेली जाती है।
हेयाहेय या ज्ञान जगत् के, जीवों को बतलाती है।।
अनुक्रम से जिनवाणी को फिर, आचार्यों ने पाया है।
रत्नत्रय से भेद ज्ञान को, अपने हृदय जगाया है।।२।।
जिनवाणी से निज का अनुभव, आचार्यों ने पाया है।
मोक्ष मार्ग यह मोक्ष प्रदायक, जीवों को दर्शाया है।।
जैनाचार्य उमास्वामी ने, मंगलमय यह कार्य किया।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र यह, मंगलमय निर्माण किया।।३।।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चारण से, मोक्षमार्ग का हो निर्माण।
इस पर चलने वाला प्राणी, निश्चय पाएगा निर्वाण।।
रत्नत्रय की ध्वजा पताका, हमको अब फहराना है।
ज्ञान शक्ति से मुक्ती पथ पर, हमको बढ़ते जाना है।।४।।
लोकजयी सर्वोत्तम ध्वज है, महिमा अपरंपार कही।
तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ है, अतिशय मंगलकार रही।।
सप्त तत्त्व अरु छह द्रव्यों का, जिसमें सुन्दर कथन किया।
अनेकांत अरु स्याद्वाद के, द्वारा जिसका मथन किया।।५।।
जीवाजीव द्रव्य का लक्षण, बतलाया है सविस्तार।
उनके भेद प्रभेदों का भी, वर्णन किया है मंगलकार।।
सत्व तत्त्व की व्याख्या जिसमें, बतलाई है भली प्रकार।
वर्णन किया गया है पावन, जिनवर वाणी के अनुसार।।६।।
हेय तत्त्व को हेय बताया, उपादेय को कहा महान्।
जिसके द्वारा पा लेते हैं, जग के प्राणी सम्यक्त्रान।।
ज्ञानानंद स्वभावी होकर, करता राग-द्वेष को दूर।
सदाचरण को पाने वाला, शुभ भावों से हो भरपूर।।७।।
स्वर्ण कीच में रहकर के ज्यों, होता नहीं है उससे लिप्त।
त्यों ज्ञानी जन जग में रहकर, पूर्ण रूप से रहे अलिप्त।।
रागभाव का हो अभाव तो, होता नहीं कर्म का बंध।
मोहनीय का नाश होय तो, प्राणी होता पूर्ण अबन्ध।।८।।
फल पाऊँ तत्त्वार्थ सूत्र को, पढ़ने का मैं हे भगवन्!
सदाचार के द्वारा मेरा, छूट जाए भव का बंधन।।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त करूँ मैं, अष्ट कर्म का होय विनाश।
यह संसार असार छोड़कर, पा जाऊँ मैं मुक्ती वास।।९।।

(छंद-घत्तानंद)

पढ़के जिनवाणी, हो श्रद्धानी, बन जाएँ सम्यक् ज्ञानी।
हो आतम ध्यानी, केवलज्ञानी, तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ के प्राणी।।

ॐ ह्रीं सर्व तत्त्व निरपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर विधान तत्त्वार्थ सूत्र का, मन में जागे हर्ष अपार।
शुभ भावों का फल पाता वह, सर्व जगत् में मंगलकार।।
कर देता अज्ञान दूर वह, बन जाता सम्यक्ज्ञानी।
मोक्षमार्ग की राही बनता, सत्य यही आगम वाणी।।
इस विधान की पूजा का फल, हमें प्राप्त हो हे भगवन्।
रत्नत्रय निधि शुभम् प्राप्त हो, 'विशद' भाव से सम् वंदन।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ तीर्थंकर पूजा

(स्थापना)

नगर हस्तिनापुर में जन्में, शान्ति कुन्थु भी श्री अरह जिनेश।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, त्रयपदधारी हुए विशेष।।
हुए चार कल्याणक जिनके, नगर हस्तिनागपुर के धाम।
आह्वानन् करते हम उर में, क्रमशः करके चरण प्रणाम।।

दोहा– **पूजा करते आपकी, हे त्रैलोकी नाथ!।**
शिवपद हमको दीजिए, झुका रहे पद माथ।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अर तीर्थंकर जिनेश्वराः! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आहवानन्। ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अर तीर्थंकर जिनेश्वरा! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अर तीर्थंकर जिनेश्वरा! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

॥ शम्भू छन्द ॥

वीतराग की राह प्राप्त कर, तुम शिवपुर की ओर चले।
त्रय रोगों के नाशक उर में, रत्नत्रय के फूल खिले।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्यः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भावों में शीतलता लाकर, जीवन तरु को महकायें।
चन्दन अर्पित करके जिन पद, भवाताप को विनशायें।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्य: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

पर का कर्त्ता माना निज को, निज पद को बिसराया है।
अक्षय पद शास्वत है मेरा, उसको कभी ना पाया है।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।३।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्य: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रंग बिरंगे पुष्प लोक में, अपनी आभा बिखराते।
कामबाण की बाधा हरने, पुष्प चढ़ाकर हर्षाते।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।४।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्य: कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा तृषा का रोग लगा है, जिससे भारी दुख पाये।
यह नैवेद्य चढ़ाकर भगवन, क्षुधा मिटाने हम आए।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।५।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्य: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान दीप तुम ज्ञान ज्योति से, ज्योती मेरी जग जाए।
मिथ्या मोह महातम अपना, यहाँ नशाने हम आए।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।

चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।६।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्य: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जलाने से अग्नी में, नभ मण्डल को महकाए।
अष्ट कर्म का भेद आवरण, शिव पद पाने हम आए।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।७।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्य: अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋतु ऋतु के फल खाकर भी हम, तृप्त नहीं हो पाते हैं।
मोक्ष महाफल पाने हे जिन! फल यह चरण चढ़ाते हैं।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।८।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्य: मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गती में सुख दुख पाकर, बारम्बार भ्रमाए हैं।
अष्टम वसुधा पाने चरणों, अर्घ्य बनाकर लाये हैं।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।९।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्य: अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

भादव कृष्ण सप्तमी को प्रभू, शांतिनाथ जिन गर्भ लिए।
श्रावण कृष्ण दशें कुन्थू जिन, गर्भ कल्याणक प्राप्त किए।।
फाल्गुन कृष्ण तीज अर स्वामी, गर्भ अवस्था शुभ पाई।
गर्भ शोध को इन्द्राज्ञा से, अष्ट कुमारिकाएँ आईं।।१।।

ॐ ह्रीं सर्वबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक सर्वमंगलकारी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांति कुन्थु अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, तपधारे श्री शांतीनाथ।
एकम शुक्ल वैसाख कुन्थु जिन, संयमधारी हुए सनाथ।।
मंगसिर शुक्ला तिथि दशमी को, अरहनाथ भगवान।
सुरगिरि पे सुर न्हवन कराए, विशद मनाए जन्म कल्याण।।२।।

ॐ ह्रीं सर्वबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक सर्वमंगलकारी जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांति कुन्थु अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी को, तपधारे श्री शांतीनाथ।
एकम शुक्ल वैसाख कुन्थु जिन, संयमधारी हुए सनाथ।।
मंगसिर शुक्ला तिथि दशमी को, अरहनाथ संयम धारे।
इन्द्रों ने तव जिन चरणों में, भक्ति को बोले जयकारे।।३।।

ॐ ह्रीं सर्वबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक सर्वमंगलकारी तपकल्याणक प्राप्त श्री शांति कुन्थु अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान शांति जिन शुक्ला, पौष दशें को प्रगटाए।
चैत्र शुक्ल तृतीया को कुन्थू, जिनवर विशद ज्ञान पाए।।
कार्तिक सुदि बारस की ओर जिन, पाए अनुपम केवल ज्ञान।
विशद ज्ञान हो प्राप्त प्रभु, करते हम चरणों गुणगान।।४।।

ॐ ह्रीं सर्वबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक सर्वमंगलकारी केवलज्ञान प्राप्त श्री शांति कुन्थु अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, शांति प्रभू पाए निर्वाण।
एकम् सुदि वैसाख कुन्थु जिन, सिद्ध शिला पर किए प्रयाण।।
अरहनाथ जी चैत अमावश, को पहुँचे थे मुक्तीधाम।
हम भी यही भावना लेकर, करते चरणों विशद प्रणाम।।५।।

ॐ ह्रीं सर्वबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक सर्वमंगलकारी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांति कुन्थु अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **शांति कुंथु जिन अरह जी, हुए त्रैलोकी नाथ।**
गाते है जयमाल हम, चरण झुकाते माथ।।

॥ चौपाई ॥

भरत क्षेत्र जानो शुभकारी, आर्य खण्ड है मंगलकारी।
जिसमें भारत देश बताया, उत्तर प्रदेश श्रेष्ठ शुभ गाया।।
मेरठ जिला हैं जिसमें भाई, पास हस्तिनापुर सुखदाई।
ऋषभनाथ जी जहाँ पे आये, नृप श्रेयांस आहार कराए।।१।।
यह पावन भूमी सुखदायी, त्रय तीर्थंकर जन्मे भाई।
शान्ति कुन्थु जिन अरह कहाए, यहाँ चार कल्याणक पाए।।
अश्वसेन राजा कहलाए, रानी ऐरा देवी पाए।
जिनके गृह में मंगल छाए, जन्म शांति जिनवर जी पाए।।२।।
लाख वर्ष आयु के धारी, तप्त स्वर्ण सम थे अविकारी।
चालिस धनुष रही ऊँचाई, हिरण चिह्न जिनका है भाई।।
पच्चिस सहस वर्ष तक स्वामी, रहे मण्डलेश्वर जिन नामी।
चक्रवर्ति पद स्वामी पाए, पच्चिस सहस वर्ष कहलाए।।३।।
कामदेव पद पाने वाले, तीर्थंकर जिन रहे निराले।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, हुए आप मुक्ती पथ गामी।।
पञ्च हजार वर्ष फिर जानो, साधिक पल्य गये फिर मानो।
सूरसेन श्रीमति के भाई, सुत जन्मे कुन्थु जिन राई।।४।।
सहस पञ्चानवे वर्ष की स्वामी, आयु पाये अन्तर्यामी।
पैंतीस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का था भाई।।
बकरा लक्षण पग में पाये, त्रय पद के धारी कहलाए।
पौने चौबिस सहस बताए, महामण्डलेश्वर पद पाए।।५।।
इतने वर्षों तक फिर जानो, चक्रवर्ति पद पाए मानो।
संयम आप स्वयं ही पाए, निज आतम का अध्यान लगाए।।
कर्म घातिया आप नशाए, केवल ज्ञान स्वयं प्रगटाए।
गिरि सम्मेद शिखर पे आये, कूट ज्ञानधर से शिव पाए।।६।।
ग्यारह सहस हीन फिर जानो, एक सहस्र कोटि पहिचानो।
इतना हीन पाव पल्य जाये, जन्म अरह जिनवर जी पाए।।

पिता सुदर्शन जी कहलाए, मात मित्रसेना जी गाए।
सहस चुरासी वर्ष की भाई, आयू अरह नाथ ने पाई।।७।।
तीस धनुष तन की ऊँचाई, लक्षण मीन रहा सुखदायी।
इक्कीस सहस वर्ष शुभकारी, रहे मण्डलेश्वर पद धारी।।
इक्कीस सहस वर्ष तक जानो, चक्रवर्ति पद पाया मानो।
कामदेव प्रभु जी कहलाए, तीर्थंकर पद पा शिव पाए।।८।।
गिरि सम्मेद शिखर पे आये, खड्गासन से मोक्ष सिधाए।
जिन चरणों हम शीश झुकाते, विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाते।।

दोहा– **त्रय रत्नों को प्राप्त कर, बने धर्म के ईश।**
सुर नर मुनि तव चरण में, सदा झुकाते शीश।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुन्थु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– **करते हैं हम वंदना, तव चरणों जिनराज।**
हम भी पाए हे प्रभो! मोक्ष महल का ताज।।

।। इत्याशीर्वाद: (पुष्पांजलि क्षिपेत) ।।

***

श्री पुष्पांजलि व्रत पूजा विधान

(स्थापना)

पुष्पांजलि व्रत जीव करें जो, मन में पावन श्रद्धा धार।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, पुण्य प्राप्त वे करें अपार।।
चौबिस तीर्थंकर की अर्चा, पंच मेरु की करते साथ।
पंच महाव्रत के धारी हो, बन जाते शिवपुर के नाथ।।

दोहा– **भक्त पुकारें आपको, भाव सहित भगवान।**
विशद हृदय में हे प्रभो! करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं पुष्पांजलि व्रतराध्य पंचमेरु सम्बन्धि जिनालयस्य जिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

।। पाइता छन्द ।।

निर्मल यह नीर चढ़ाएँ, जन्मादि रोग नशाएँ।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।१।।

ॐ ह्रीं पुष्पांजलि व्रतराध्य पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन शुभ यहाँ चढ़ाएँ, भव का सन्ताप नशाएँ।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।२।।

ॐ ह्रीं पुष्पांजलि व्रतराध्य पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत से पूज रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।३।।

ॐ ह्रीं पुष्पांजलि व्रतराध्य पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् चंदनं निर्व. स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।४।।

ॐ ह्रीं पुष्पांजलि व्रतराध्य पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लाए, हम क्षुधा नशाने आए।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।५।।

ॐ ह्रीं पुष्पांजलि व्रतराध्य पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में दीप जलाएँ, हम मोह से मुक्ती पाएँ।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।६।।

ॐ ह्रीं पुष्पांजलि व्रतराध्य पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

यह सुरक्षित धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।७।।

ॐ ह्रीं पुष्पांजलि व्रतराध्य पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य:

अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल सरस चढ़ाते भाई, जो गाए मोक्ष प्रदायी।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।८।।

ॐ ह्रीं पुष्पांजलि व्रतराध्य पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
हम जिनवर के गुण गाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।९।।

ॐ ह्रीं पुष्पांजलि व्रतराध्य पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **श्री जिन की महिमा अगम, कोई ना पावे पार।**
शांती धारा दे रहे, जिनपद बारम्बार।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा– **कर्म बन्ध को तोड़कर, नाश करें भव ताप।**
पुष्पांजलि करके प्रभो!, करे नाम का जाप।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सम्बन्धि षोडश जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– **पुष्पांजलि व्रत कर विशद, करना जिनगुणगान।**
जयमाला गाके सभी, करें स्व-पर कल्याण।।

।। ज्ञानोदय-छन्द ।।

जम्बूद्वीप के दक्षिण देश में, मंगलावति है देश महान।
वहाँ रत्न संचयपुर नगरी, वज्रसेन नृप रहा प्रधान।।
जयवन्ती रानी थी जिसकी, पुत्र की जिसके मन में चाह।
ज्ञानोदधि मुनि से पूँछी, मुझे पुत्र होगा या नाह।।१।।
मुनि बोले तव चक्रवर्ति सुत, छह खण्डों का होगा स्वामि।
मुनि के वचन प्रमाण हुए नव, मास में सुत पाया जो नामि।।
नाम रत्नशेखर पाया जो, मित्र मेघ वाहन था साथ।
मदन मंजूषा कन्या ब्याही, विद्या पाँच सौ का भी नाथ।।२।।

एक बार चारण ऋद्धीधर, मुनिवर का पाया वह दर्श।
धर्मोपदेश सुना मुनिवर से, पूछा पूर्व जन्म पा हर्ष।।
श्रुत कीर्ति मंत्री की वनिता, वंधुमती था नगर मृणाल।
सर्प दंश से वन्धुमती का, मरण देख जो हुआ बेहाल।।३।।
हो विरक्त दीक्षा वह धारी, भ्रष्ट हुआ किन्तू पश्चात्।
प्रभावती पुत्री तब बोली, किए आप क्यों संयम घात।।
तब वह विद्या से पुत्री को, वन में छोड़ दिलाया त्रास।
अर्हत् भक्ती की उसने तो, विद्या भेजी गिरि कैलाश।।४।।
देव देवियाँ पद्मावती के, आने का कारण क्या राज।
पद्मावती कहा भादों सुदि, पाँचे पुष्पांजलि व्रत आज।।
पांच दिना प्रोषध विधि करके, पाँच वर्ष व्रत कर चौबीस।
जिन की पुष्पों से कर अर्चा, चरणों विशद झुकाएँ शीश।।५।।
प्रभावती ने पुष्पांजलि व्रत, धारे मन में धर उल्लास।
विद्या श्रुत कीर्ति भेजी तव, व्रत को करने हेतु विनाश।।
पद्मावती के आते विद्या, भाग गई डर के तत्काल।
कर सन्यास मरण सोलहवें, स्वर्ग में उपजी तब वह बाल।।६।।
श्रुत कीर्ति के सम्बोधन को, स्वर्ग से आया फिर वह देव।
माता स्वर्ग गई थी पहले, पिता स्वर्ग वह पहुँचा एव।।
प्रभावती तू रत्नशेखर है, मदन मंजूषा माँ का जीव।
मेघ वाहन मंत्री पितु तेरा, व्रत का फल शुभ रहा अतीव।।७।।

दोहा– **चक्रवर्ति सन्यास धर, मुनि त्रिगुप्ति के पास।**
कर्म नाश नृप मंत्रि द्वय, पाए शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पांजलि व्रताराध्य पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालय जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **पुष्पांजलि व्रत कर 'विशद', पाएँ सौख्य अनूप।**
कर्मनाश कर सिद्ध हों, पावें निज स्वरूप

।। इत्याशीर्वाद: ।।

***

जिनगुण सम्पत्ति पूजन

(स्थापना)

सोलह कारण भावना, पूर्व भवों में भाते हैं।
तीर्थंकर प्रकृति के बन्धक, पञ्च कल्याणक पाते हैं।।
चौंतिस अतिशय पाने वाले, प्रातिहार्य प्रगटाते हैं।
अनन्त चतुष्टय प्रकट करें जो, केवलज्ञान जगाते हैं।।
प्राप्त हमें हो जिनगुण सम्पत्ति, शिव पद में होवे विश्राम।
विशद हृदय में अह्वानन कर, करते बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री जिनगुण सम्पत्ति समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री जिनगुण सम्पत्ति समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री जिनगुण सम्पत्ति समूह! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

॥ वीर छन्द ॥

गंगा यमुना का निर्मल जल, तन का मल ही धो पाता है।
जो लगा कर्म मल चेतन में, वह रत्नत्रय से जाता है।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण सम्पत्ति पाने को, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।।१।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

सुरभित चन्दन की शीतलता, नर देह ताप को शांत करे।
क्रोधादि कषायों का आतप, जिनधर्म गंध उपशांत करे।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण सम्पत्ति पाने चंदन, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।२।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

आतम स्वरूप अक्षय अखण्ड, जो संयम से मिल पाता है।
संयम के उपवन में सौरभ, जिसका अतिशय खिल जाता है।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।

अब जिनगुण सम्पत्ति पाने, यह अक्षय अक्षत लाए हैं।।३।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा।

पुष्पों को पाकर मन मेरा, अतिशय पुलकित हो जाता है।
भँवरे सम भ्रमण किया करती, न आत्म ज्ञान जग पाता है।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण सम्पत्ति पाने को, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।४।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस व्यंजन खाकर भी, ना तृप्त कभी हो पाते हैं।
वह जिह्वा स्वाद के बाद सभी, क्षणभर में ही नश जाते हैं।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण सम्पत्ति पाने को, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।५।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

है मोह तिमिर का अँधियारा, सदियों से हमें घुमाया है।
भव-भव में दुःख सहे हमने, नहिं सुपथ हमें दिख पाया है।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण सम्पत्ति पाने को, हम दीप जलाकर लाए हैं।।६।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

हमने कर्मों को जड़ माना, अरु बन्ध सदा करते आये।
अज्ञानी बनकर ठगे स्वयं, न कर्म बन्ध से बच पाए।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण सम्पत्ति पाने को, यह धूप जलाने लाए हैं।।७।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

फल दाता जग में कोई नहीं, हर जीव स्वयं फल पाता है।
किन्तु यह फल की आशा में, चारों गति में भटकाता है।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण सम्पत्ति पाने को, यह श्रेष्ठ श्रीफल लाए हैं।।८।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

जिस गति में जन्म मिला हमको, उस गति में ही रम जाते हैं।
शुभ पद अनर्घ्य को पाने का, पुरुषार्थ नहीं कर पाते हैं।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण सम्पत्ति पाने को, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।९।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **श्री जिनेन्द्र के गुण तथा, जिनवर पूज्य त्रिकाल।**
जिनगुण सम्पत्ति की यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

॥ शम्भू-छन्द ॥

सुर नर विद्याधर नरेन्द्र भी, पद में शीश झुकाते हैं।
तीर्थंकर के पाद मूल में, जिनगुण पाने आते हैं।।
जिन गुण सम्पद मोक्षमार्ग में, अतिशय कारण जाना है।
तीर्थंकर प्रकृति के कारण, सोलह कारण माना है।।१।।
दर्श विशुद्धि आदि सोलह, भव्य भावना भाते हैं।
प्रबल पुण्य से भव्य जीव ही, तीर्थंकर पद पाते हैं।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, उत्सव पंच कहाते हैं।
तीर्थंकर प्रकृति के बन्धक, कल्याणक यह पाते हैं।।२।।
धर्म तीर्थ के नेता बनकर, मोक्षमार्ग दर्शाते हैं।
पञ्च परावर्तन तजकर के, शिव पदवी को पाते हैं।।
छत्र चँवर भामण्डल अनुपम, दिव्य ध्वनि सुनाते हैं।
पुष्प वृष्टि सुर सिंहासन तरु, दुन्दुभि देव बजाते हैं।।३।।
तीर्थंकर पद की महिमा यह, प्रातिहार्य प्रगटाते हैं।
समवशरण लक्ष्मी के भर्त्ता, त्रिभुवनपति कहलाते हैं।।
जन्म समय की महिमा अनुपम, दश अतिशय जिन पाते हैं।
केवलज्ञान के दश अतिशय जिन, ज्ञान जगे प्रगटाते हैं।।४।।
चौदह अतिशय देव शरण में, आकर श्रेष्ठ दिखाते हैं।
श्री जिनेन्द्र चौंतिस अतिशय यह, महिमाशाली पाते हैं।।

इस प्रकार त्रेसठ गुण के शुभ, त्रेसठ जो व्रत करते हैं।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्यप्रदायक, कोष पुण्य से भरते हैं।।५।।
प्रतिपदा के सोलह व्रत हैं, पाँच पञ्चमी के जानो।
आठ अष्टमी के व्रत भाई, बीस दशें के तुम मानो।।
चौदस के व्रत चौदह होते, जोड़ सभी त्रेसठ गाए।
भाव सहित जो व्रत करते हैं, वह जिनगुण सम्पद पाए।।६।।
श्रावक और श्राविका कोई, विधि सहित व्रत करते हैं।
सुख शांति पा जाते हैं वह, अपने सब दुःख हरते हैं।।
रोग मरी दुर्भिक्ष कलह से, उनकी रक्षा होती है।
भूत पिशाच आदि कोई भी, सर्व आपदा खोती है।।७।।
ओज तेज बल वृद्धि वैभव, स्वर्गों के सुख पाते हैं।
कामदेव चक्री बनकर के, तीर्थंकर बन जाते हैं।।
समवशरण सा वैभव पाकर, मोक्ष लक्ष्मी पाते हैं।
सिद्ध शिला पर जाने वाले, शिव सुख में रम जाते हैं।।८।।
यही भावना भाते हैं प्रभु, कर्म सभी क्षय हो जावें।
बोधि समाधि लाभ प्राप्त हो, सुगति गमन हम भी पावें।।
होवे मरण समाधि मेरा, जिनगुण सम्पदा पा जावें।
'विशद' ज्ञान को पाकर हम भी, परम श्रेष्ठ शिव सुख पावें।।९।।

(धत्ता छंद)

जय जय जिन स्वामी, शिवपथ गामी, जिनगुण सम्पत के स्वामी।
तव चरण नमामि त्रिभुवननामी, बनो प्रभो! मम पथ गामी।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– **सुर गणपति न कर सकें, गुण गणना तव नाथ।**
वह गुण पाने हेतु तव, चरण झुकाते माथ।।

॥ इत्याशीर्वादः ॥

***

चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र विधान पूजन

(स्थापना)

पञ्च भरत ऐरावत में शुभ, तीर्थंकर होते चौबीस।
विहरमाण होते विदेह में, शाश्वत रहते हैं जिन बीस।।
होते नहीं हैं तीर्थंकर जिन, केवलज्ञानी पञ्चम काल।
सिद्ध भूमि की पूजा करके, अतः काटते कर्म कराल।।
ऋषभादिक चौबिस तीर्थंकर, भरत क्षेत्र में हुए महान।
पूजा को निर्वाण भूमियों, का हम करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्राणि अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल पीकर भी बुझ सकी नहीं, मेरे जीवन की प्यास कभी।
जल पीते-पीते युग बीते, फिर भी मन रहा उदास अभी।।
हैं तीर्थंकर केवलज्ञानी, जो जगत पूज्य कहलाए हैं।
वह सिद्ध भूमि हम पूज रहे, जिन मोक्ष जहाँ से पाए हैं।।१।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो जलं निर्व. स्वाहा।

सूरज से भी ज्यादा गर्मी, मेरे इस तन में छाई है।
चन्दन क्या शीतलता देगा, जब धन की आस लगाई है।।
हैं तीर्थंकर केवलज्ञानी, जो जगत पूज्य कहलाए हैं।
वह सिद्ध भूमि हम पूज रहे, जिन मोक्ष जहाँ से पाए हैं।।२।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो चन्दनं निर्व. स्वाहा।

पद हैं दुनियाँ में अनगिनते, क्षण-क्षण में क्षय हो जाते हैं।
यह पद पाने को जग प्राणी, मन में आकुलता पाते हैं।।
हैं तीर्थंकर केवलज्ञानी, जो जगत पूज्य कहलाए हैं।
वह सिद्ध भूमि हम पूज रहे, जिन मोक्ष जहाँ से पाए हैं।।३।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

क्षण भंगुर यह जीवन गाया, हम समझ नहीं यह पाए हैं।
जो चतुर्गती की कारण है, वह चक्र काटने आए हैं।।
हैं तीर्थंकर केवलज्ञानी, जो जगत पूज्य कहलाए हैं।
वह सिद्ध भूमि हम पूज रहे, जिन मोक्ष जहाँ से पाए हैं।।४।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो पुष्पं निर्व. स्वाहा।

व्यंजन खाकर के कई हमने, नश्वर काया को पुष्ट किया।
आनन्द आत्म रस का हमने, शाश्वत होता जो नहीं लिया।।
हैं तीर्थंकर केवलज्ञानी, जो जगत पूज्य कहलाए हैं।
वह सिद्ध भूमि हम पूज रहे, जिन मोक्ष जहाँ से पाए हैं।।५।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

तम हरने वाला है दीपक, जो नाश मोह ना कर पाए।
होवे प्रकाश निज चेतन में, जो दीप ज्ञान का प्रजलाए।।
हैं तीर्थंकर केवलज्ञानी, जो जगत पूज्य कहलाए हैं।
वह सिद्ध भूमि हम पूज रहे, जिन मोक्ष जहाँ से पाए हैं।।६।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में गंध जलाई है, पर कर्म नहीं जल पाए हैं।
जिनने निज आतम को ध्याया, उनने सब कर्म नशाए हैं।।
हैं तीर्थंकर केवलज्ञानी, जो जगत पूज्य कहलाए हैं।
वह सिद्ध भूमि हम पूज रहे, जिन मोक्ष जहाँ से पाए हैं।।७।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो धूपं निर्व. स्वाहा।

सब जीव कर्म का फल पाते, जिनवाणी में यह गाया है।
जो शुक्ल ध्यान में लीन हुए, उनने शाश्वत फल पाया है।।
हैं तीर्थंकर केवलज्ञानी, जो जगत पूज्य कहलाए हैं।
वह सिद्ध भूमि हम पूज रहे, जिन मोक्ष जहाँ से पाए हैं।।८।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो फलं निर्व. स्वाहा।

हम भूले निज की शक्ती को, कर्मों ने दास बनाया है।
हे नाथ! आपकी महिमा सुन, यह राज समझ में आया है।।

हैं तीर्थंकर केवलज्ञानी, जो जगत पूज्य कहलाए हैं।
वह सिद्ध भूमि हम पूज रहे, जिन मोक्ष जहाँ से पाए हैं।।९।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **मोक्ष गये जिस भूमि से, मुनिवर करके ध्यान।**
जयमाला गाते यहाँ, तीर्थ कहे निर्वाण।।

॥ चौपाई ॥

आदीश्वर अष्टाद पाए, वासुपूज्य चंपापुर गाए।
नेमिनाथ गिरनारी जानो, महावीर पावापुर मानो।।
श्री सम्मेद शिखर पे आये, बीस तीर्थंकर मुक्ती पाए।
आठ कोड़ि मुनिवर अविकारी, हुए तारवर से शिवकारी।।१।।
कोटि बहत्तर सात सौ गाऐ, ऊर्जयन्त से शिवपद पाए।
पाँच कोटि मुनिवर शिव गामी, पावागिरि से हुए अकामी।।
शत्रुञ्जय में ध्यान लगाए, आठ कोटि मुनि मोक्ष सिधाए।
आठ कोटि मुनि बलभद्रादी, गंज पंथा से हो शिव वादी।।२।।
कोटि निन्यानवे मुनिवर गाए, तुंगीगिरि से मुक्ती पाए।
सोनागिर से मोक्ष सिधाए, साढ़े पाँच कोटिमुनि गाए।।
साढ़े पाँच कोटि मुनि राई, रेवा तट से मुक्ती पाई।
कूट सिद्धवर से शिव पाए, चक्री अठ कर्ण कोटि मुनि गाए।३।।
इन्द्रजीत मुनिवर बड़बानी, कुम्भ कर्ण पाए शिव ज्ञानी।
स्वर्ण भद्रादी मुनि पद पाए, पावागिर से मोक्ष सिधाए।।
गुरु दत्तादी का शिव जानो, द्रोणागिर से पाए मानो।
बाल अरु महाबाल मुनि भाई, नाग कुमार पाए प्रभुताई।।४।।
अष्टापद कैलाश कहाए, इसी भूमि से शिव पद पाए।
साढ़े तीन कोढ़ि मुनि गाए, मेढ़गिरि से मोक्ष सिधाए।।
कुल भूषण देश भूषण स्वामी, हुए कुन्थ गिर से शिवगामी।
कलिंग देश से मुनिवर ज्ञानी, पाँच सौ पाए शिव रजधानी।।५।।
कोटि शिला से कोटी जानो, मुनि मुक्ती पद पाए मानो।

वर दत्तादि पंच ऋषि गाए, रेशन्दी गिर से शिव पाए।।
मथुरापुर से जम्बूस्वामी, हुए मोक्ष पथ के अनुगामी।
कुण्डलपुर जी क्षेत्र बताया, श्री धर जी ने शिव पद पाया।।६।।
सिद्ध क्षेत्र जो जो कहलाए, जहाँ से मुनिवर शिव पद पाए।
'विशद' सभी हम पूँज रचाएँ, शिवपुर सिद्ध भूमि से जाएँ।

दोहा– **रत्नत्रय को धारकर, किए सुतप मुनिराज।**
कर्म नाशकर शिव गये, तारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं सर्वभरतक्षेत्रसम्बन्ध्यनेक तीर्थंकर मुनिवराणां सिद्धक्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **तीन लोक में पूज्य हैं, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।**
'विशद' भावना है यही, पाएँ मोक्ष निधान।।

॥ इत्याशीर्वादः ॥

***

जिन सहस्त्रनाम पूजा

(स्थापना)

वृषभादिक चौबिस तीर्थंकर, तीन लोक में पूज्य महान।
एक हजार आठ गुणधारी, जिनका हम करते गुणगान।।
सहस्त्रनाम की पूजा करते, मन में होके भाव विभोर।
आह्वानन् करते हम उर में, विशद शांति हो चारों ओर।।

ॐ ह्रीं श्री मदादिधर्मसाम्राज्यनायकान्त अष्टाधिक सहस्त्र शुभनाम धारक श्री जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छन्द)

भटक रहे चारों गतियों में, पल भर शांति न मिल पाई।
सुख समझा जिन विषयों को, वह रहे घोर दुख की खाई।।
अब जन्म जरादिक नाश हेतु, हम पावन नीर चढ़ाते हैं।
श्री सहस्त्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्त्रनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

भवताप में झुलस रहे हम, ज्वाला निज में धधक रही।
भ्रमित हुए अज्ञान तिमिर में, मिली ना हमको राह सही।।
शीतल चन्दन केसर पावन, सुरभित यहाँ चढ़ाते हैं।
श्री सहस्त्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्त्रनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

जग की खोटी इच्छाओं ने, मन मैला कर डाला है।
मोह कषायों ने आतम को, किया सदा ही काला है।।
अक्षय निधि पाने यह पावन, अक्षत यहाँ चढ़ाते हैं।
श्री सहस्त्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।३।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्त्रनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि. स्वाहा।

जलकर काम रोग की ज्वाला, क्षण क्षण हमें जलाती है।
जितना उसको शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है।।
हम काम बाण के नाश हेतु, ये पावन पुष्प चढ़ाते हैं।
श्री सहस्त्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।४।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्त्रनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

लख चौरासी योनी में हम, भोजन को ही भटकाए।
मन चाहे खाने पर भी हम, तृप्त कभी ना हो पाए।।
इस क्षुधा रोग के नाश हेतु, ये व्यंजन सरस चढ़ाते हैं।
श्री सहस्त्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।५।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्त्रनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

मिथ्यात्व के नाश हेतु, यह ज्ञान दीप प्रजलाया है।
सोया था उपमान ज्ञान का, हमने आज जगाया है।।

हम दीप जलाकर हे स्वामी, तव चरण आरती गाते हैं।
श्री सहस्त्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।६।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्त्रनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

प्रभु भक्ति वन्दना करके हम, चेतन की शक्ति जगाएँगे।
जग के व्यापारों को तजकर, निज गुण अपने प्रगटाएँगे।।
अब अष्ट कर्म के शमन हेतु, पावन ये धूप जलाते हैं।
श्री सहस्त्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।७।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्त्रनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

सब अशुभ भाव का फल पाके, दुर्गति के भाजन बन जाते।
शुभ भाव बनाकर भक्ती से, नर सुर गति धर संयम पाते।।
अब रत्नत्रय का फल पाने, फल ताजे यहाँ चढ़ाते हैं।
श्री सहस्त्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।८।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्त्रनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. स्वाहा।

जल चन्दनादि यह द्रव्य आठ, हमने सब यहाँ मिलाए हैं।
जो है अनर्घ्य पद का कारण, वह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।
अब पद अनर्घ्य पाने स्वामी, ये पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
श्री सहस्त्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।९।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्त्रनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– **नाथ कृपा बरसाइये, भक्त करें अरदास।**
शिवपथ के राही बनें, पूरी हो मम आस।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा– **गुण अनन्त के कोष जिन, सहस्त्र आठ हैं नाम।**
पुष्पांजलिं करते 'विशद', करके चरण प्रणाम।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा– **सहसनाम जिनराज के, गाये मंगलकार।**
जयमाला गाते विशद, नत हो बारम्बार।।

।। ताटंक छन्द ।।

तीन लोक के स्वामी जिनवर, केवलज्ञान के धारी हैं।
कर्मघातिया के हैं नाशी, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।
पूर्व भवों के पुण्योदय से, पावन नर भव पाते हैं।
उत्तम कुल वय देह सुसंगति, धर्म भावना भाते हैं।।१।।
देव शास्त्र गुरू के दर्शन भी, पुण्य योग से मिलते हैं।
सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण, तप के उपवन खिलते हैं।।
केवल ज्ञान के धारी हों या, तीर्थंकर का समवशरण।
तीर्थंकर प्रकृति पाते हैं, भव्य जीव करते दर्शन।।२।।
सोलहकारण भव्य भावना, भव्य जीव जो भाते हैं।
पावन तीर्थंकर प्रकृति शुभ, बन्ध तभी कर पाते हैं।।
नरक गती का बन्ध ना हो तो, स्वर्गों में प्राणी जावें।
तीर्थंकर प्रकृति के फल से, भव्य जीव भव सुख पावें।।३।।
गर्भ कल्याणक में सुर आके, दिव्य रत्न वर्साते हैं।
जन्म कल्याणक के अवसर पर, मेरु में न्हवन कराते हैं।।
दीक्षा ज्ञान कल्याण मनाकर, पूजा पाठ रचाते हैं।
सहस्त्रनाम के द्वारा प्रभु पद, जय जय कार लगाते हैं।।४।।
एक हजार आठ शुभ प्रभु के, सार्थक नाम बताए हैं।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, निज सौभाग्य जगाए हैं।।
मंत्रा कहा प्रत्येक नाम शुभ, उनकी करते हैं जो जाप।
'विशद' भाव से ध्याने वालों, के कट जाते सारे पाप।।५।।

दोहा– **सहसनाम जिनदेव के, गाये मंगलकार।**
उनको ध्याए भाव से, पाए सौख्य अपार।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्त्रनाम धारकाय श्री जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– **पूजा करने के लिए, सहस्त्रनाम की आज।**
आये हैं तव चरण में, पूर्ण करो मम काज।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपामि ।। ।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री ऋषभदेव जी की पूजन

(स्थापना)

जिनकी महिमा इस धरती पर, खुश होके गाई जाती है।
जिनके चरणों में नत होकर, यह जगती शीश झुकाती है।।
नवरात्रि व्रत के व्रताराध्य, श्री ऋषभ देव जग में पावन।
हम हृदय कमल में करते हैं, जिन तीर्थंकर का आह्वानन।।

दोहा– **धर्म प्रवर्तक आप हैं, जन-जन के भगवान।**
षट् कर्मों का आपने, दिया जगत को ज्ञान।।

ॐ ह्रीं नवरात्रि व्रताराध्य श्री ऋषभदेव जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

तर्ज– गंगा जमुना में जब तक

गंगा जमुनादि का हमने, पानी लिया।
श्री जिनवर के चरणों, समर्पित किया।।
हो-हो ऽऽऽ समर्पित किया।
देवा-हो देवा, देवा हो जिन देवा।।१।।

ॐ ह्रीं नवरात्रि व्रताराध्य श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

गंध चंदन सुगन्धित, मनोहर लिया।
भवाताप नशाने को, अर्पित किया।।
हो-हो ऽऽऽ समर्पित किया।
देवा-हो देवा, देवा हो जिन देवा।।२।।

ॐ ह्रीं नवरात्रि व्रताराध्य श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

पुंज अक्षत मनोहर ये, पावन लिया।
अक्षत पद प्राप्त करने को, अर्पित किया।।
हो-हो ऽऽऽ समर्पित किया।
देवा-हो देवा, देवा हो जिन देवा।।३।।

ॐ ह्रीं नवरात्रि व्रताराध्य श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

पुष्प की माल का थाल, पावन लिया।
काम रुज नाश करने को, अर्पित किया।।
हो-हो ऽऽऽ समर्पित किया।
देवा-हो देवा, देवा हो जिन देवा।।४।।

ॐ ह्रीं नवरात्रि व्रताराध्य श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय काम बाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

चरु ताजे भरे थाल, कर में लिया।
क्षुधा नाश करने को, अर्पित किया।।
हो-हो ऽऽऽ समर्पित किया।
देवा-हो देवा, देवा हो जिन देवा।।५।।

ॐ ह्रीं नवरात्रि व्रताराध्य श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

आरती करने को दीप, जलता लिया।
मोह तम नाश करने को, अर्पित किया।।
हो-हो ऽऽऽ समर्पित किया।
देवा-हो देवा, देवा हो जिन देवा।।६।।

ॐ ह्रीं नवरात्रि व्रताराध्य श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप अग्नी में हमने, समर्पित किया।
कर्म नाश करने को, अर्पित किया।।
हो-हो ऽऽऽ समर्पित किया।
देवा-हो देवा, देवा हो जिन देवा।।७।।

ॐ ह्रीं नवरात्रि व्रताराध्य श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

थाल फल से भराया, ये कर में लिया।
मोक्ष फल प्राप्त करने को, अर्पित किया।।
हो-हो ऽऽऽ समर्पित किया।
देवा-हो देवा, देवा हो जिन देवा।।८।।

ॐ ह्रीं नवरात्रि व्रताराध्य श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों का यह अर्घ्य, निर्मित किया।
सुपद पाने अनर्घ्य, समर्पित किया।।
हो-हो ऽऽऽ समर्पित किया।
देवा-हो देवा, देवा हो जिन देवा।।९।।

ॐ ह्रीं नवरात्रि व्रताराध्य श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा

दोहा– **शांती धारा को लिया, पावन प्रासुक नीर।**
अर्चा करते भाव से, मिट जाए भव पीर।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा– **पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर के शुभ फूल।**
विशद भावना भा रहे, नशे कर्म का शूल।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा– **नवरात्रि व्रत जो करें, वे हों नव निधिवान।**
जयमाला गाते विशद, व्रत की महति महान।।

।। वीर छन्द ।।

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, रही अयोध्या पुरी विशाल।
नाभिराज चौदहवें कुलकर, के सुत मरुदेवी के लाल।।
सोलह स्वप्न देखती माता-रत्न वृष्टि हो पन्द्रह मास।
चये आप सर्वार्थ सिद्धि से, पाया प्रभु ने गर्भावास।।१।।
मति श्रुत अवधि ज्ञान के धारी, होके पाए जन्म कल्याण।
हर्षित शत इन्द्रों ने पाण्डु, शिला पे किया अभिषेक महान।।

असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प का दिए आप उपदेश।
राज्य अवस्था को पाके प्रभु, जग के कष्ट मिटाए विशेष।।२।।
नीलांजना की मृत्यु जान के, मन में धारे प्रभू विराग।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, करके किए भोग का त्याग।।
वन सिद्धार्थ वृक्ष वट नीचे, नमः सिद्धेभ्यः बोल विशेष।
स्वयं बुद्ध हो दीक्षा धारे, धारे आप दिगम्बर भेष।।३।।
एक वर्ष पश्चात इच्छुरस, नगर हस्तिनापुर आहार।
राजा सोम श्रेयांस के गृह में, दान तीर्थ का किए प्रचार।।
एक हजार वर्ष तप करके, कर्म घातिया किए विनाश।
अनन्त चतुष्टय पाए प्रभु ने, कीन्हा केवल ज्ञान प्रकाश।।४।।
दिया राजपट्ट पुत्र भरत को, बाहुबली युवराज बने।
चार हजार राजाओं के संग, आप स्वयं ऋषिराज बने।।
नौ दिन व्रत करके दशवें दिन, विजय हेतू जो किया प्रयाण।
धर्म ध्यान से समय बिताये, रात्रि जागरण पूर्वक मान।।५।।
नवरात्री व्रत अतः कहाए, विजय दिवस दसमी कहलाय।
यह व्रत करने वाला श्रावक, स्वयं चक्रवर्ति पद पाय।।
भरत ने व्रत उद्यापन करके, जिन मंदिर प्रतिमा निर्माण।
पंचकल्याणक आदि कराए, दिया संघ को आहार दान।।६।।
दीक्षा धार अन्तर्मुहूर्त में, भरत जी पाये केवलज्ञान।
है अचिन्त्य महिमा इस व्रत की, विशद दिलाए पद निर्वाण।।
गिरि कैलाश कहा अष्टापद, पाए प्रभु जी पद निर्वाण।
जिनके चरणों विशद भाव से, करते हैं हम भी गुणगान।।७।।

दोहा– **यश कीर्ति संसार सुख, होवे व्रत कर प्राप्त।**
संयम पाके जीव यह, क्रमशः बनते आप्त।।

ॐ ह्रीं नवरात्रि व्रताराध्य श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– **चक्रवर्ति ने धार व्रत, पाया पुण्य अपार।**
केवलज्ञानी हो 'विशद', पाया भवदधि पार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

***

रोट तीज व्रत पूजन विधान (लघु)

(स्थापना)

माह भाद्रपद तृतिया तिथि को, रोट तीज व्रत कहे जिनेश।
ऋद्धि सिद्धि समृद्धि प्रदायक, पावन व्रत यह रहा विशेष।।
दमयन्ती सेठानी ने इस, व्रत का पालन किया महान।
जिसके फल से सुख समृद्धी, पाया है जग में सम्मान।।

दोहा– **तीर्थंकर चौबीस का, तीन काल गुणगान।**
भाव सहित अर्चा करें, करके शुभ आह्वान।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू-छन्द)

जलते हम जीवन उपवन को, वाणी जल से सजल करें।
मोह क्षोभ मय निज भावों को, श्रद्धा जल से धवल करें।।
भक्ति भाव का जल सिंचन कर, सादर शीश झुकाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे।।१।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

समता जल की शुभ्र घटाएँ, तृष्णा आंधी से उड़तीं।
नर जीवन की पावन घड़ियाँ, क्षण-क्षण कर सारी घटतीं।।
समता गुण का चंदन अर्पित, कर शीतलता पाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे।।२।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं स्वाहा।

लीन हुए पर पद में अब तक, निज पद का ना भानकिया।
तन परिजन धन पर हैं सारे, तव दर्शन का ज्ञान किया।।
अक्षत पुंज चढ़ाकर तव पद, निज निधि को प्रगटाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे।।३।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षत स्वाहा।

जिन शासन के उपवन में जो, खिले सुमन का साज किया।
मधु पराग पाने को तुमने, जिन मुद्रा का ताज लिया।।
जिनवाणी के पुष्पों का रस, मधुकर बन कर पाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे।।४।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्राय कामबाण विधवंशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

क्षुधा व्याधि से पीड़ित होकर, शमन हेतु कई यत्न किए।
काल अनादी विषम रोग ने, भव में कई-कई कष्ट दिए।।
सद्गुण के नैवेद्य चढ़ाकर, व्याधी शीघ्र नशाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे।।५।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

आलोकित कर जग जीवन यह, जगमग दीपक जले महान।
ज्ञान दीप प्रगटाने हेतू, प्रेरित करता आभावान।।
अनन्त चतुष्टय को पाकर के, ज्ञान की ज्योति जलाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे।।६।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्राय महामोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

सम्यक् तप की अग्नि जलाकर, करना सारे कर्म दहन।
काल अनादी से जो पाई, निज चेतन में लगी तपन।।
दश धर्मों की धूप दशांगी, खेकर गंध उड़ाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे।।७।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

वीतराग अविकारी मुद्रा, में खिलतीं कलियाँ पावन।
रत्नत्रय गुण के फल फलते, सरस मधुर अति मन भावन।।
सद्गुण के फल पाने को फल, पावन यहाँ चढ़ाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे।।८।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्राय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. स्वाहा।

थाल सजाया अरमानों का, नयन कटोरी जल लाए।
निर्मल भावों की केसर ले, तन्दुल सद् गुण के पाए।।
चेतन गुण के पुष्प रंगाए, तन नैवेद्य बनाया है।
धूप बनाई अष्ट कर्म की, श्री फल शीश सजाया है।।
आठ अंग का अर्घ्य विशद शुभ, करके यहाँ चढ़ाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे।।९।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– **शांती पाने के लिए, देते शांती धार।**
आशा ले पूजा करी, पाएँ भव से पार।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा– **पुष्प बनाए जो यहाँ, उससे ही हे नाथ!।**
पुष्पांजलि करते विशद, झुका चरण में माथ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा– **महिमा जिसकी है अगम, गरिमा रही विशाल।**
रोट तीज व्रत की विशद, गाते हैं जयमाल।।

।। ज्ञानोदय-छन्द ।।

वीर प्रभू के समवशरण में, प्रश्न किये गौतम गणराज।
रोट तीज का व्रत कैसे हो, जिसकी विधि प्रभु कहिए आज।।

उज्जैनी नगरी के श्रेष्ठी, सागर दत्त की भार्या जान।
दमयन्ती ने मुनि से व्रत की, इच्छा मन की रखी प्रधान।।१।।
भादों सुदि तृतिया को यह, व्रत एक साल में हो इक बार।
सब रस त्याग एकाशन करके, सामायिक जप कर व्रत धार।।
चौबीसों जिनवर की पूजा, गुरु से व्रत लें भली प्रकार।
घर आते उपहास किया तब, सेठानी का निज परिवार।।२।।
छप्पन कोटि दीनार का स्वामी, व्रत निन्दा का करके पाप।
हुए दरिद्री सेठ सेठानी, कहें चलो देशान्तर आप।।
सातों सुत भार्याएँ संग ले, हस्तिनापुर पुत्री के पास।
निन्दा के भय से मुख मोड़ा, पुत्री ने तोड़ा विश्वास।।३।।
नगर वसन्तपुर सेठ राम जी, के घर थी जिसकी ससुराल।
किए किनारा परिजन सारे, जान के उनका ऐसा हाल।।
माँड़ लेन दमयन्ती पहुँची, हांडी मोरी के रख पास।
पत्थर भावज ने सरकाया, हांडी फूट जली तव सास।।४।।
बेटे बहुएँ लेकर आए, अशुभ कर्म फल मान प्रधान।
नगर अयोध्या सागर दत्त के, मित्र के गृह पहुँचे सब जान।।
रात में खूटी निगल रही थी, स्वर्णमयी रानी का हार।
चोर कहाएँगे यह बोले, सेठ चलो सब सह परिवार।।५।।
चम्पापुर में समुद्रदत्त के, गृह चाकर बन पाले पेट।
दो सेर जौ दो टका तेल तब, मजदूरी देता था सेठ।।
भादव सुदी दोज सेठानी, बोली कल का रखना ध्यान।
रोट तीज व्रत का सेठानी, ने बतलाया सब व्याख्यान।।६।।
छोटी बहू ने अपने हिस्से, की रोटी ले जा जिन धाम।
व्रत पालन कर प्रभु पद विनती, करके निज पद किया प्रणाम।।
पुण्योदय जागा व्रत करके, पाए सब व्यापार महान।
बनकर सेठ पुनः घर आए, पाए फिर जग में सम्मान।।७।।

दोहा– **व्रत का पालन कर सभी, पाए सौख्य अपार।**
निरतिचार व्रत पाल कर, करो स्वयं उद्धार।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **जिन भक्ती व्रत धारकर, हों प्राणी खुशहाल।**
'विशद' भाव से व्रत अतः कीजे सभी त्रिकाल।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजिल क्षिपेत ।।

***

पुण्यास्त्रव मण्डल विधान पूजा

(स्थापना)

जीव करें सम्रम्भ समारम्भ, आरम्भकृत कारित मोदन।
मन-वच-तन से चार कषायों, द्वारा होय कर्म बन्धन।।
एक सौ आठ प्रकार कर्म से, बचने करते जिन अर्चन।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र का, करते हैं हम आह्वानन्।।

ॐ ह्री सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वर! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द राधेश्याम)

जल पीकर भी मन उलझा है, मेरा तृष्णा के शोलों में।
सच्चा सुख पाया नहीं कभी, धारणकर तन के चोलों में।।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ।।१।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

गरमी है अग्नी से ज्यादा, मेरे तन-मन की चाहों में।
शीतलता पाने को भटके, इस सारे जग की राहों में।।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ।२।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अब हमें समझना निजस्वरूप, कर्मों का झूठा नाता हैं।
कर्मारी को जो जीत सके, वह ही अक्षय पद पाता है।।

हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ। ३।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

मन की मादकता के कारण, प्राणी जग के मतवाले हैं।
निज का स्वरूप जो जान गये, खुल गये हृदय के ताले हैं।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ। ४।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

जड़ क्षुधा बहुत बलशाली है, हम शांत नहीं कर पाते हैं।
जो ज्ञान सरस को चख लेते, जग भोग उन्हें ना भाते हैं।।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ। ५।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जब मोह तिमिर छा जाए तो, निज का स्वरूप खो जाता है।
चेतन का द्वीप जले उर में, ईश्वर वह तब हो जाता है।।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ। ६।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों का फल मिलता सबको, बेकार जीव यह रोता है।
निज के स्वभाव में रमण करे, वह सिद्ध स्वयं ही होता है।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ। ७।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

हमको प्रभु अच्छा फल देना, यह कहते नाथ लजाते हैं।
जो निज स्वभाव में रमण करें, वे निश्चय शिवफल पाते हैं।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्तको प्रगटाएँ।।८।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

हम भटक चुके चारों गति में, भव भ्रमण और नहिं करना है।
तव गुण गाते हे नाथ! हमें, अभ भव सागर से तरना है।।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ।।९।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चाल छंद–**यह नीर भरा के लाए, त्रय धारा देने आए।**
अन्तर में शांती पाएँ, ना भव सागर भटकाए।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

चाल छंद–**यह पुष्प लिए शुभकारी, जो है अति खुशबूकारी।**
हम पुष्पाञ्जलि को लाए, पुण्यास्त्रव पाने आए।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा– **पाप हमारे मार्ग में, बन बैठे हैं काल।**
पुण्याश्रव करने अतः, गाते हैं जयमाल।।

।। चौबोला-छन्द ।।

कर्म घातियाँ नाश करें जिन, केवल ज्ञान जगाते हैं।
अष्ट कर्म के नाशक जिनवर, सिद्ध परम पद पाते हैं।।
साता कर्मोदय होने पर, ईर्यापथ आश्रव हो जान।
साम्परायिक आश्रव के कारण, करें ये जीवन जहान।।१।।
अष्ट कर्म का बन्ध जीव को, तीव्र मन्द या ज्ञाताज्ञात।
हो अज्ञात भाव के द्वारा, निज शक्ती से कर्मोत्पात।।
मिथ्याविरति पाँच-पाँच, पन्द्रह प्रमाद त्रय योग कषाय।
इनके द्वारा आश्रव होता, बन्ध जीव इनसे ही पाय।।२।।
मोहकर्म गाया दुखदायी, जिसके हैं दो भेद प्रधान।
दर्शन अरु चारित्र मोहनीय, दर्शन घाते सद् श्रद्धान।।
कर्मोदय चारित्र मोह से, संयम ना पावे इन्सान।
मुक्ती का कारण रत्नत्रय, पाना दुर्लभ रहा महान।।३।।

मोह कर्म बलवान जहाँ में, जिसके भेद असंख्य प्रमाण।
स्थिति अरु अनुभाग जीव के, बन्ध कराए मोह महान।।
सर्वास्त्रवों के द्वारा प्राणी, पाप कमाए बारम्बार।
अतः पाप के कारण गाए, आगम में शत् आठ प्रकार।।४।।
दो सम्रम्भ समारम्भ आरम्भ, मन वच तन तीनों से जान।
कृतकारित अनुमोदन द्वारा, चार कषायों द्वारा मान।।
एक सौ आठ प्रकार पाप से, बचने करते हैं सब जाप।
एक सौ आठ मणी की माला, फेरे से मिटता संताप।।५।।
श्री जिन का गुणगान किए या, उच्चारण करने से नाम।
पापों का आस्त्रव रुक जाए, पुण्याश्रव से हो सुखधाम।।
पञ्च महाव्रत समिति गुप्ति तिय, पालन करके दश विध धर्म।
द्वादश अनुप्रेक्षा परिषहजय, कर आस्त्रव रोकें षट् कर्म।।६।।
ऐसे अविकारी जिन मुनिवर, पालन करते पञ्चाचार।
निज आतम का ध्यान लगाकर, दोष करें सारे परिहार।।
जिन भक्ती पूजा के द्वारा, होता पुण्य का सम्पादन।
शिवपथ के राही बनते वह, करते जिन पद को अर्चन।।७।।
चक्रवर्ति बलदेव तीर्थंकर, आदिक पद पा महति महान।
दीक्षा धारण करने वाले, प्राप्त करें फिर पद निर्वाण।।
पुण्योदय आये ऐसा प्रभु, प्राप्त करें सम्यक् श्रद्धान।
सम्यक् ज्ञानाचरण प्राप्त कर, रत्नत्रय निधि पाएँ प्रधान।।८।।
कर्म निर्जरा कर इस भव से, पाएँ ऐसी शक्ति महान।
उत्तम संहनन पाकर मुनि बन, प्राप्त होय हमको निर्वाण।।
पुण्योदय ऐसा ना आया, मिली प्रभू ना चरण शरण।
'विशद' भावना यह हम भाते, बनो नाथ भव सिन्धु तरण।।९।।

दोहा– **नाथ कृपा यह कीजिए, हो कर्मास्त्रव रोध।**
सम्यक् पथ पर हम बढ़ें, जागे आतम बोध।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **नाथ आपके नाम का, करने से शुभ जाप।**
'विशद' लोक में जीव के, कट जाते सब पाप।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत ।।

श्रुतज्ञान व्रत विधान पूजा

(स्थापना)

लोकालोक प्रकाशित करता, जीवों को भाई श्रुत ज्ञान।
जिसके द्वारा जग के प्राणी, प्राप्त करें सम्यक् श्रद्धान।।
द्वादशांग में रहा विभाजित, अतिशयकारी महिमावान।
श्रुतज्ञान को प्राप्त करें हम, अतः हृदय करते आह्वान।।

ॐ ह्री अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांगमयी सरस्वती देवी! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छन्द)

भव-भव में जल पिया है, लेकिन तृषा शांत ना हो पाई।
श्री जिनवाणी को सुनकर के, निज की सुधि मन में आई।।
श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन! निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।१।।

ॐ ह्री अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

धन दौलत की है चाह, जो भव-भव भ्रमण करती है।
अर्पित करने से चन्दन शीतल, शीतलता निज में आती है।।
श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन! निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।२।।

ॐ ह्री अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अज्ञान तिमिर ने प्राणी को, इस भव वन में भटकाया है।
अक्षत से पूजा की जिसने, उसने अक्षय पद पाया है।।
श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन! निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।३।।

ॐ ह्री अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

जिनवर जिनवाणी की पूजा, तन-मन को निर्मल करती है।
श्रद्धा के सुमन चढ़ाने से, अन्तर का कालुष हरती है।।
श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन! निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।४।।

ॐ ह्री अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

तृष्णा के हम दास बने हैं, संग्रह व्रती ना छोड़ी है।
निज क्षुधा मिटाने को हमने, संसार की माया जोड़ी है।।
श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन! निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।५।।

ॐ ह्री अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्गती में मन भरमाया, छाया मोह अंधेरा है।
सम्यक् ज्ञान का दीप जला, करना अब नया सवेरा है।।
श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन! निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।६।।

ॐ ह्री अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय मोहान्धकार विनाश दीपं निर्व. स्वाहा।

अष्ट कर्म का खेल निराला, सबको खेल खिलाता है।
सम्यक् तप करने वाला ही, कर्म निर्जरा पाता है।।
श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन! निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।७।।

ॐ ह्री अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

सिद्धालय में वास करें हम, मन में भाव जगाए हैं।
शिवफल पाने को फल उत्तम, हमने यहाँ चढ़ाए हैं।।

श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन! निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।८।।

ॐ ह्री अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

शुभ द्रव्यों का अर्घ्य बनाकर, चरणों आज चढ़ाते हैं।
शुद्धात्म में रम जाएँ हम, यही भावना भाते हैं।।
श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन! निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।९।।

ॐ ह्री अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **शांतीधारा दे रहे, पाने शांति विशेष।**
शिवपद के राही बनें, धार दिगम्बर भेष।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

पुष्पाञ्जलि को पुष्प यह, अर्पण करते आज।
सम्यक् ज्ञान प्रकाश में, सफल होय मम् काज।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा– **श्रुत ज्ञान को प्राप्त कर, होता ज्ञान प्रकाश।**
मोक्ष मार्ग पर हम बढ़ें, पाएँ शिवपुर वास।।

।। चाल-छन्द ।।

तीर्थंकर केवलज्ञानी, हों वीतराग विज्ञानी।
जो दिव्य ध्वनि सुनाए, प्राणी सद्ज्ञान जगाए।।
शुभ ॐकारमय गाई, सब भाषामय बतलाई।
जो गणधर झेले जानो, जन-जन हितकारी मानो।।१।।
पञ्चेन्द्रिय मन से भाई, मतिज्ञान होय सुखदायी।
अवग्रह ईहा शुभ जानो, अवाय धारणा मानो।।
बहु बहु विध क्षिप्र बताए, अनि:स्रित अनुक्त ध्रुव गाए।
विपरीत भेद छह जानो, बारह पदार्थ सब मानो।।२।।

जो व्यंजन अर्थमय गाये, सब तीन सौ छत्तीस पाए।
मतिज्ञान पूर्वक भाई, हो श्रुतज्ञान सुखदायी।।
शुभ ग्यारह अंग बताए, जिनकी महिमा जग गाए।
परिकर्म भेद दो गाये, प्रज्ञप्ति रूप बताए।।३।।
है सूत्र की महिमा न्यारी, जग जन मन मंगलकारी।
प्रथमानुयोग में भाई, पुण्य पुरुष की महिमा गाई।।
पूरब चौदश शुभ जानो, पान भेद चूलिका मानो।
छह अवधिज्ञान शुभ गाए, दो मनःपर्यय बतलाए।।४।।
शुभ केवलज्ञान कहाए, सब ज्ञान पाँच कहलाए।
हम केवलज्ञान जगाएँ, यह विशद भावना भाए।।

दोहा– **मेरी है यह भावना, पूर्ण करो भगवान।**
सम्यक् श्रुत को प्राप्त कर, पाएँ पञ्चम ज्ञान।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

सोरठा– **सम्यक् श्रुत को प्राप्त कर, पाए केवलज्ञान।**
यही भावना है विशद, शीघ्र होय निर्वाण।।

।। पुष्पाजलिं क्षिपेत ।।

श्री तीर्थंकर पंचकल्याणक समुच्चय पूजन

स्थापना (शंभु छन्द)

गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, पञ्च कल्याणक कहलाते।
तीर्थंकर प्रकृति के बंधक, श्रेष्ठ पुरुष इनको पाते।।
विशद भाव से यही प्रार्थना, हो जाए मेरा कल्याण।
अतः हृदय में कल्याणक का, भाव सहित करते आह्वानन्।।
पंच कल्याणक हमें प्राप्त हों, मन के मेरे भाव रहे।
जब तक मोक्ष प्राप्त न होवे, समता की शुभ धार बहे।।

ॐ ह्री पंचकल्याणकप्राप्त सर्वमंगलकारी श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छन्द)

काल अनादी से कीन्ही है, मैंने अब तक जन्म-मरण।
नाश हेतु उस जन्म-मरण के, करता हूँ मैं जल अर्पण।।
गर्भ जन्म आदिक कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।१।।

ॐ ह्री पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्व. स्वाहा।

भव आताप मिटा न मेरा, पर परणति में किया रमण।
नाश होय संसार वास का, करता मैं चंदन अर्पण।।
गर्भ जन्म आदिक कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।२।।

ॐ ह्री पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो चंदनं निर्व. स्वाहा।

मिथ्यामति के कारण हमने, सारे जग का किया भ्रमण।
पद अखण्ड अक्षय पाने को, अक्षत धवल करूँ अर्पण।।
गर्भ जन्म आदिक कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।३।।

ॐ ह्री पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

चार कषायों में फँसकर के, चतुर्गति में किया गमन।
कामबाण विध्वंश हेतु यह, पुष्प करूँ पद में अर्पण।।
गर्भ जन्म आदिक कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।४।।

ॐ ह्री पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पंच महाव्रत के द्वारा मैं, पंचेन्द्रिय का करूँ दमन।
क्षुधा रोग के नाश हेतु, नैवेद्य सरस करता अर्पण।।
गर्भ जन्म आदिक कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।५।।

ॐ ह्री पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

भेद ज्ञान के द्वारा मैं नित, चित चेतन का करूँ मनन।
मोह अंध के नाश हेतु यह, जलता दीप करूँ अर्पण।।

गर्भ जन्म आदिक कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।६।।

ॐ ह्री पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्व. स्वाहा।

अष्ट गुणों की सिद्धी हेतू, अष्ट कर्म का करूँ शमन।
अष्ट कर्म का नाश होय मम्, पावन धूप करूँ अर्पण।।
गर्भ जन्म आदिक कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।७।।

ॐ ह्री पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्व. स्वाहा।

निज स्वरूप का भान होय शुभ, पर परणति का करूँ वमन।
मोक्ष महाफल पाने हेतू, फल करता हूँ यह अर्पण।।
गर्भ जन्म आदिक कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।८।।

ॐ ह्री पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो फलं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रय की बहे त्रिवेणी, उसमें ही कर सकूँ रमण।
पद अनर्घ शाश्वत पाने को, उत्तम अर्घ्य करूँ अर्पण।।
गर्भ जन्म आदिक कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।९।।

ॐ ह्री पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप्य मंत्रः—ॐ ह्रीं पंचकल्याणक पदालँकृत श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **पंच कल्याण की रही, महिमा अपरम्पार।**
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव से पार।।

।। शम्भू-छन्द ।।

तीर्थंकर पदवी के धारी, पंच कल्याणक पाते हैं।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र सभी मिल, उत्सव महत् मानते हैं।।
गर्भ कल्याणक होता है जब, उससे भी छह महीने पूर्व।
गर्भ नगर में रत्नवृष्टि शुभ, मिलकर करते देव अपूर्व।।१।।

माता सोलह स्वप्न देखती, हर्षित होती अपरम्पार।
नृप से उनका सुफल जानती, जिससे हो आनंद अपार।।
नौ महीने यादो सौ सत्तर, दिन का होता गर्भ कल्याण।
स्वर्ग लोक या प्रथम नरक से, करके आता जीव प्रयाण।।२।।
जन्म के अतिशय कहे गये दश, इनको पावे जीव महान्।
इन्द्र भक्ति करते हैं अतिशय, भाव सहित करते गुणगान।।
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराते, चिह्न देखकर देते नाम।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, करते बारम्बार प्रणाम।।३।।
इस जग की माया को लखकर, तज देते हैं उससे राग।
कारण पाकर कोई एक भी, धारण करते हैं वैराग।।
परम दिगम्बर मुद्रा धारण, करके जाते वन की ओर।
आत्मध्यान में लीन होय कर, तप धारण करते हैं घोर।।४।।
सम्यक् तप की अग्नी से वह, कर्म घातिया करते नाश।
लोकालोक प्रकाशी अनुपम, करते केवलज्ञान प्रकाश।।
केवलज्ञानी बनकर सारे, जग को करते ज्ञान प्रदान।
जिसके द्वारा भव्य जीव सब, जग के करते निज कल्याण।।५।।
आयु कर्म के साथ अन्य सब, कर्मों का करने को घात।
आत्मध्यान करते हैं फिर वह, केवलज्ञानी जिन समुद्घात।।
अंतर्मुहूर्त मात्र के अन्दर, हो जाता उनका निर्वाण।
एक समय में श्री जिनेन्द्र का, सिद्ध शिला पर होय प्रयाण।।६।।
फिर अक्षय अविचल अखण्ड पद, में होता उनका विश्राम।
ऐसे अनुपम पद पाने को, प्रभु पद करता 'विशद' प्रणाम।।

दोहा– **पंच कल्याणक की रही, महिमा अगम अपार।**
भव्य जीव वह प्राप्त कर, होते भव से पार।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

दोहा– **हो जाए कल्याण, सर्व दुखी संसार से।**
पाकर केवलज्ञान, सिद्ध शिला पर वास हो।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

इन्द्र ध्वज समुच्चय पूजन

(स्थापना)

रत्नमयी अकृत्रिम अनुपम, स्वयं सिद्ध जिनगृह अभिराम।
वन्दनीय हैं तीन लोक में, चार शतक अट्ठावन धाम।।
सुरनर किन्नर विद्याधर सब, पूजन करते चरणों आन।
जिनबिम्बों का हृदय कमल में, करते भाव सहित आह्वान।।

दोहा– **पुष्पित पुष्पों से यहाँ, करते जिन गुणगान।**
मेरे हृदय विराजिए, हे मेरे! भगवान।।

ॐ ह्री मध्यलोकसंबंधिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वत्जिनालयस्थ जिनबिंब-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

झर-झर नीर बरसता नभ से, जग की प्यास बुझाता है।
चेतन की जो प्यास बुझाए, वह अर्हत् पद पाता है।।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।१।।

ॐ ह्री मध्यलोकसंबंधिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वत्जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

दाह मिटाने को शरीर की, चन्दन बहुत लगाये हैं।
भव संताप मिटे अब मेरा, नाथ शरण में आए हैं।।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।२।।

ॐ ह्री मध्यलोकसंबंधिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वत्जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

चर्म चक्षु से जो भी दिखता, वह तो क्षय के योग्य रहा।
ज्ञान चक्षु में जो भी आता, वह अक्षय पद सिद्ध कहा।।

मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।३।।

ॐ ह्री मध्यलोकसंबंधिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वत्जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित मुरझा जाते, गंध भी ना रह पाती है।
आत्म तत्त्व की याद हमेशा, हे जिन! सतत् सताती है।।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।४।।

ॐ ह्री मध्यलोकसंबंधिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वत्जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पर द्रव्यों से भूख मिटी ना, क्षुधा रोग घेरा डाले।
निज अनुभव के चरू चढ़ाते, मुक्ती जो देने वाले।।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।५।।

ॐ ह्री मध्यलोकसंबंधिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वत्जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह महातम नाश हेतु यह, दीपक श्रेष्ठ जलाए हैं।
अन्तर घट में हो प्रकाश हम, विशद भावना भाए हैं।।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।६।।

ॐ ह्री मध्यलोकसंबंधिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वत्जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अष्टकर्म के नाश हेतु हम, चिन्मय धूप जलाते हैं।
नित्य निरन्तर पद पाने को, तव पद में सिरनाते हैं।।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।७।।

ॐ ह्री मध्यलोकसंबंधिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वत्जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

दुष्कर्मों के फल पाके हम, चतुर्गती में भरमाए।
मोक्ष महाफल पाने को अब, श्री जिनेन्द्र पद में आए।।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।८।।

ॐ ह्री मध्यलोकसंबंधिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वत्जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

नाथ आपका दर्शन पाकर, निज दर्शन ना पाये हैं।
सिद्ध शिला पर आसन पाने, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।९।।

ॐ ह्री मध्यलोकसंबंधिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वत्जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **तीर्थंकर पद प्राप्त हो, सोलह कारण भाय।**
शांतीधारा दे रहे, भाव सहित हर्षाय।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा– **श्री जिनेन्द्र की अर्चना, तीर्थंकर पद देय।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने सुपद अजेय।।

।। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा– **चैत्यालय हम पूजते, मध्य लोक के खास।**
जयमाला गाते यहाँ, बने चरण के दास।।

।। चौपाई-छन्द ।।

जय-जय जगत पूज्य जिन स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
महिमा तुमरी जग से न्यारी, सारे जग में मंगलकारी।।
वीतराग पद तुमने पाया, जिन चेतन को निज में ध्याया।
प्रभू आप रत्नत्रयधारी, अनुपम अचल बने अविकारी।।१।।
कामधेनु चिंतामणि गाए, कल्पवृक्ष सम प्रभु कहलाए।
पार्श्वमणि हो हे जिन! स्वामी, मुक्ती पथ के हे अनुगामी।।

भक्ती से मन में हर्षाए, पूजा करने को हम आए।
श्रेष्ठ भावनाएँ शुभकारी, जीवन कर दें मंगलकारी।।२।।
अशुभ दूर हो जाए हमारा, शुभ हो जाए जीवन सारा।
शुद्ध ध्यान को फिर हम पाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ।।
यही भावना रही हमारी, जीवन हो यह मंगलकारी।
पंच मेरू के जिन हम ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।३।।
गिरी वक्षार के जिन गुण गाएँ, गिरी विजयार्द्ध की महिमा गाएँ।
गजदंतो के जिन मनहारी, और कुलाचल के शुभकारी।।
वृक्षों पर निजमंदिर सोहें, इष्वाकार के भी मन मोहें।
मानुषोत्तर के मंदिर भाई, नन्दीश्वर के हैं सुखदायी।।४।।
कुण्डलगिरी पर जिनगृह जानो, रुचक गिरी पर भी पहिचानो।
रत्नमयी जिन मंदिर भाई, बने अकृत्रिम हैं सुखदायी।।
उनमें शुभ जिनबिम्ब निराले, शिव पथ को दर्शाने वाले।
जिन अरहन्त पूज्य शुभकारी, संत विरागी मंगलकारी।।५।।
प्रभु के दर्शन करने वाले, होते हैं वह लोग निराले।
ऋद्धीधारी ऋषिवर जाते, विद्याधर भी दर्शन पाते।।
अपने मन में हर्ष जगाते, पूजा भक्ती कर गुण गाते।
जिनबिम्बों के दर्शन पाते, ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य जगाते।।६।।
कर्म निर्जरा करते भाई, जीवन होता मंगलदायी।
हम परोक्ष ही दर्शन पाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

(छन्द घत्ता)

जय जय मनहारी, मंगलकारी, जिन चैत्यालय शुभकारी।
जय महिमा धारी, शुभ अविकारी, जिन प्रतिमाएँ शिवकारी।।

ॐ ह्री मध्यलोक सम्बन्धिचतु:शताष्टपञ्चशत् शाश्वतजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **जीवन मंगलमय बने, मंगलमय परिणाम।**
नाथ! आपके चरण में, बारम्बार प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वाद: ।।

श्री चैत्य भक्ति पूजा

(स्थापना)

वीर प्रभु के समवशरण में, इन्द्रभूति गौतम ब्राह्मण।
मानस्तंभ का दर्श किया, तव मान हुआ उसका खण्डन।।
सम्यक् श्रद्धा धारी होकर, जयति भगवान ये उच्चारण।
हाथ जोड़ कर किया प्रभू के, चरणों में जाके वन्दन।।

दोहा– **चैत्य भक्ति स्तोत्र शुभ, जग में रहा महान।**
कृत्रिमा कृत्रिम चैत्य का, करते उर आह्वान।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुति स्वरूप चैत्य भक्ति महास्तोत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छन्द)

शीतल जल की निर्मल धारा, हे प्रभु! चरण चढ़ाते हैं।
जन्म जरादिक क्षय करने को, जिन पद में सिरनाते हैं।।
चैत्य भक्ति आराधन करके, प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा कृत्रिम जन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामीकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुति स्वरूप चैत्य भक्ति महास्तोत्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शीतल चंदन मलयागिरि का, केसर में यह घिस लाए।
भवाताप का कर विनाश हम, शिव पद पाने को आए।।
चैत्य भक्ति आराधन करके, प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा कृत्रिम जन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामीकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुति स्वरूप चैत्य भक्ति महास्तोत्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

उज्जवल धवल अखण्डित अक्षत, निर्मल नीर में धो लाए।
अक्षय पद के भाव बने मय, अक्षय पद पाने आए।।
चैत्य भक्ति आराधन करके, प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा कृत्रिम जन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं।।३।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामीकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुति स्वरूप चैत्य भक्ति महास्तोत्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित पुष्प सुकोमल सुन्दर, यहाँ चढ़ाने को लाए।
काम रोग का योग नशाने, नाथ शरण में हम आए।।
चैत्य भक्ति आराधन करके, प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा कृत्रिम जन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं।।४।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामीकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुति स्वरूप चैत्य भक्ति महास्तोत्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

चेतन रस से सू चरु बनाकर, जिन चरणों में हम लाए।
क्षुधा व्याधि विध्वंश होय मम, आत्मतृप्ति पाने आए।।
चैत्य भक्ति आराधन करके, प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा कृत्रिम जन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं।।५।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामीकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुति स्वरूप चैत्य भक्ति महास्तोत्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जगमग-जगमग दीप जलाकर, जिन अर्चा करने लाए।
मोह महातम के विनाश को, नाथ शरण में हम आए।।
चैत्य भक्ति आराधन करके, प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा कृत्रिम जन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं।।६।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामीकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुति स्वरूप चैत्य भक्ति महास्तोत्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूपायन में दश धर्मों की, धूप श्रेष्ठ खेने लाए।
अष्ट कर्म के नष्ट हेतु हम, जिन पूजा करने आए।।
चैत्य भक्ति आराधन करके, प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा कृत्रिम जन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं।।७।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामीकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुति स्वरूप चैत्य भक्ति महास्तोत्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

सरस श्रेष्ठ फल ताजे अनुपम, रजत थाल में भर लाए।
दिव्य महाफल पाने को हम, फल से पूजा करने आए।।
चैत्य भक्ति आराधन करके, प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा कृत्रिम जन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं।।८।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामीकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुति स्वरूप चैत्य भक्ति महास्तोत्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्य अपूर्व बना निज गुण का, भेंट चढ़ाने को लाए।
पद अनर्घ्य पाने हे स्वामी! चरण शरण में हम आए।।
चैत्य भक्ति आराधन करके, प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा कृत्रिम जन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं।।९।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामीकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुति स्वरूप चैत्य भक्ति महास्तोत्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **चैत्य भक्ति के हम यहाँ, चढ़ा रहे है अर्घ्य।**
भाते हैं हम भावना, पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

।। मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा– **कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य हैं, मंगलमय अविकार।**
जयमाला जिनकी विशद, गाते बारम्बार।।

।। शम्भू-छन्द ।।

कृत्रिमा कृत्रिम जिन चैत्यालय, तीन लोक में मंगलकार।
जिनकी अर्चा पूजा करते, प्राणी नत हो बारम्बार।।
भवनवासी देवों के चित्रा, भू के नीचे भवन महान।
दश प्रकार के देव कहे जो, जिनगृह जिनमें आभावान।।१।।
सप्त कोटि अरु लाख बहत्तर, अधोलोक में हैं जिनधाम।
शाश्वत अकृत्रिम गाए जो, जिनको बारम्बार प्रणाम।।

मध्य लोक में गिरि तरु शाखा, आदिक में श्री जिन के धाम।
चार सौ अट्ठावन हैं पावन, जिनको बारम्बार प्रणाम।।२।।
ढ़ाई द्वीप के अन्दर ऋषिमुनि, विद्याधर भी करें विहार।
देव भक्ति से आकर करते, जिन पद वन्दन बारम्बार।।
ऊर्ध्व लोक में लाख चुरासी, सह सत्यानवे तेइस विमान।
जिनमें जिनगृह जिनबिम्बों युत, शोभित होते आभावान।।३।।
व्यन्तर देवों के गृह शाश्वत, बतलाए हैं संख्यातीत।
जिनकी अर्चा देव करें सब करके अपना चित्त पुनीत।।
ज्योतिष देवों के विमान शुभ, मध्य लोक में अधर रहे।
संख्यातीत जिनालय जिसमें, तीन लोक में पूज्य कहे।।४।।
रत्नमयी जिन चैत्य वन्दना, गणधर को असुर नर देव।
भक्तिभाव से अर्चा करके, पुण्यार्जन जो करें सदैव।।
काल अनादी चैत्य वन्दना, का गौतम ने किया बखान।
वीर प्रभू की दिव्य देशना, गणधर झेले महति महान।।५।।
चैत्य वन्दना करने वाले, प्राप्त करें सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी बनकर, अनुक्रम से पावें निर्वाण।।
जो प्रत्यक्ष परोक्ष वन्दना, करते विशद भाव के साथ।
अतिशय पुण्य सुनिधि पाकर वे, बस्ते मोक्ष सुनिधि के नाथ।।६।।

दोहा– **शाश्वत जिनगृह जो रहे, पूज रहे हम नाथ!।**
भक्ति भाव से तव चरण, झुका रहे हैं माथ।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामीकृत चैत्यभक्ति महास्त्रोत वर्णित तीर्थंकर वन्दना सर्व कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **जिनगृह जिन त्रय लोक के, गाए पूज्य महान।**
भाव सहित जिनका 'विशद', करते हम गुणगान।

।। इत्याशीर्वादः ।।

***

अंतिम अनुबद्ध केवली श्री जम्बूस्वामी की पूजा

(स्थापना)

विद्युन्माली ब्रह्म स्वर्ग से, आयु पूर्ण कर किये प्रयाण।
राजगृही नृप अर्हद्दास गृह, जिनमति पाई गर्भ महान।।
चरम शरीरी आप हुए शुभ, जम्बू स्वामी पाए नाम।
चौरासी मथुरा से पाया, प्रभू आपने पद निर्वाण।।

दोहा– **भक्त पुकारें आपको, हृदय पधारो आन।**
आह्वानन् करते प्रभो! करने को गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

हमने सदियों से जल पीकर, इस तन की प्यास बुझाई है।
किन्तु चेतन की प्यास कभी, न शांत पूर्ण हो गाई है।।
अब जन्म-जरादिक रोग नशे, यह निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

शीतल चन्दन के लेपन से, यह तन शीतल हो जाता है।
किन्तू शीतलता यह चेतन न, जरा प्राप्त कर पाता है।।
अब भव सन्ताप नशाने को, यह चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

हम चतुर्गती भटकाए हैं, अक्षय निधि न मिल पाई है।
है अक्षय मेरा धाम श्रेष्ठ, न उसकी सुधि भी आई है।।
अब भव सन्ताप नशाने को यह, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।३।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान नि. स्वाहा।

बहु काम व्यथा से पीड़ित हो, भव के भोगों में लीन रहे।
भव के भोगों को पाने में, हमने अनगिनते कष्ट सहे।।
अब भव सन्ताप नशाने को यह, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।४।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

व्यंजन खाकर के हमने कई, इस तन को पुष्ट बनाया है।
न भोग किया निज चेतन का, न योग शुद्ध हो पाया है।।
अब क्षुधा रोग हो पूर्ण नाश, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।५।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

हमने मोहित हो सदियों से, सारे जग को अपनाया है।
अज्ञान तिमिर में भ्रमित हुए, न ज्ञान दीप जल पाया है।।
अब भव सन्ताप नशाने को यह, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।६।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

कर्मों के बंध पड़े भारी, जो बन्धन डाले रहते हैं।
जीवन रहता तब तक जग में, घन घातकर्म का सहते हैं।।
अब भव सन्ताप नशाने को यह, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।७।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

फल की आशा में भ्रमण किया, न क्षेत्र कोई अवशेष रहा।
फल पाया हमने नाशवान् फिर पछताना ही शेष रहा।।
अब भव सन्ताप नशाने को यह, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।८।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि. स्वाहा।

हो मूल्यवान कोई वस्तू, हमने इस जग की पाई है।
न प्राप्त हुई शायद कोई, फिर भी शक्ति अजमाई है।।

अब भव सन्ताप नशाने को यह, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।९।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– **शांतीधारा दे रहे, चरणों में धर ध्यान।**
जम्बु स्वामि का हम करें, भाव सहित गुणगान।।

॥ शान्तये शान्तिधारा ॥

दोहा– **पुष्पांजलि करते चरण, जम्बु स्वामि पद आज।**
अर्चा करते भाव से, पाने शिव पदराज्य।।

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

जयमाला

दोहा– **अर्हद्दास के लाड़ले, जिनमति माँ के लाल।**
जम्बू स्वामि जिन की विशद, गाते हैं जयमाल।य

॥ ज्ञानोदय-छन्द ॥

मध्य लोक के दक्षिण दिश में, जम्बूद्वीप है धनुषाकार।
भरत क्षेत्र में आर्यखण्ड शुभ, भारत देश है शुभ मनहार।।
मगध देश राजगृहि नगरी, के श्रेणिक गाये भूपाल।
अर्हद्दास जिन भक्त वहाँ के, जिनगृह में जन्मा इक लाल।।१।।
रूपवान सुन्दर शुभ लक्षण, धारी था जो अतिगुणवान।
युवा अवस्था में ही जो था, अतिशय कारी पौरुषवान।।
रत्न चूल विद्याधर को जो, किए पराजित कर संग्राम।
नृप मृगांक की कन्या रक्षित, करके पहुँचाए निज धाम।।२।।
गुरु सुधर्म राजगृही में, कर विहार आए इक बार।
चरण वन्दना करके उनकी, शरण आपने की स्वीकार।।
सुनकर के उपदेश गुरू का, जाना यह संसार असार।
जन्मे मरे अकेला चेतन, भ्रमण करे जग बारम्बार।।३।।
संयम धारण करना हमको, मात-पिता से कहे कुमार।
सुनकर के तब मात-पिता जी, समझाए थे अपरम्पार।।

किन्तु वचन यह लिए पुत्र से, ब्याह रजाओ हे सुकुमार।
एक रात्रि रहकर के संयम, धारण करना तुम स्वीकार।।४।।
वचन बद्ध हो ब्याह रचाए, परणाई कन्याएँ चार।
चार पहर वह भी समझाई, समझाकर वे मानी हार।।
चोर तभी चोरी को आया, विद्युच्चर था जिसका नाम।
वार्ता सुनकर के कुमार की, उसके भी बदले परिणाम।।५।।
दीक्षा धारण किए सभी वे, कठिन तपस्या की स्वीकार।
मथुरा चौरासी के वन में, जम्बू स्वामी आए अनगार।।
कठिन तपस्या करके अपने, कीन्हें आठों कर्म विनाश।
हो अनुबद्ध केवली अन्तिम, सिद्ध शिला पर किए निवास।।६।।
अतिशयकारी रहा जिनालय, अजितनाथ जिसमें भगवान।
प्रकट हुए जिनबिम्ब यहाँ पर, अतिशय यह भी हुआ महान।।
कृष्ण पक्ष कार्तिक में मेला, होय रथोत्सव भी शुभकार।
चरण चिन्ह जम्बू स्वामी के, हैं विशाल प्रतिमा मनहार।।७।।

दोहा– **श्रद्धा जागे दर्श कर, गुण गाएँ गुणवान।**
भव्य जीव जिन ध्यान कर, पावें पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं मथुरा चौरासी सिद्धक्षेत्र स्थित श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

खातिका भूमि पूजन- ५

(स्थापना)

प्रासुक जल से पूरित द्वितीय, भूमि खातिका रही महान।
जलचर प्राणीं कलरव करते, दोनों तट हैं आभावान।।
रत्नमयी सोपान वीथियाँ, चारों दिश में सोहें चार।
विजय द्वार की अनुपम शोभा, गोपुर सोहें अपरम्परा।।

दोहा– **समवशरण में शोभते, तीर्थंकर भगवान।**
जिनका भक्ती भाव से, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री समवशरणस्थितखातिकाभूमिभूषितश्रीतीर्थंकरजिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अथ अष्टक)

हम झुका रहे हैं माथ, जोड़कर दोनों अपने हाथ।
शरण में आए, चरणों में शीश झुकाए।।
पावन जल की झारी भरकर, पूजा को आए हैं दर पर।
मैटो जन्मादिक रोग, नाथ घबराए-चरणों में शीश झुकाए।।१।।

ॐ ह्रीं श्री समवशरणस्थितखातिकाभूमिभूषितश्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

यह सुरभित चन्दन लाए हैं, चरणों में नाथ चढ़ाए हैं।
मैटो भव के संताप, दुःख कई पाए।।
पावन जल की झारी भरकर, पूजा को आए हैं दर पर।
मैटो जन्मादिक रोग, नाथ घबराए-चरणों में शीश झुकाए।।२।।

ॐ ह्रीं श्री समवशरणस्थितखातिकाभूमिभूषितश्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत से पुञ्ज बनाए हैं, पूजा के भाव जगाएँ हैं।
अक्षय पद पाने नाथ! ये अक्षत लाए।।
पावन जल की झारी भरकर, पूजा को आए हैं दर पर।
मैटो जन्मादिक रोग, नाथ घबराए-चरणों में शीश झुकाए।।३।।

ॐ ह्रीं श्री समवशरणस्थितखातिकाभूमिभूषितश्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

ये पुष्प सुगन्धित मन हारी, पूजा को लाए भर थारी।
हे जिन भक्ती के भाव, बनाकर आए।।
पावन जल की झारी भरकर, पूजा को आए हैं दर पर।
मैटो जन्मादिक रोग, नाथ घबराए-चरणों में शीश झुकाए।।४।।

ॐ ह्रीं श्री समवशरणस्थितखातिकाभूमिभूषितश्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय विनाशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ताजे नैवेद्य बना लाए, अर्चा करने को हम आए।
हे नाथ! करो भव पार शरण में आए।।
पावन जल की झारी भरकर, पूजा को आए हैं दर पर।
मैटो जन्मादिक रोग, नाथ घबराए-चरणों में शीश झुकाए।।५।।

ॐ ह्रीं श्री समवशरणस्थितखातिकाभूमिभूषितश्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत के यह दीप जलाए हैं, हम मोह नशाने आए हैं।
अब पाने सम्यक्ज्ञान-शरण में आए।।
पावन जल की झारी भरकर, पूजा को आए हैं दर पर।
मैटो जन्मादिक रोग, नाथ घबराए-चरणों में शीश झुकाए।।६।।

ॐ ह्रीं श्री समवशरणस्थितखातिकाभूमिभूषितश्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुरभित यह धूप बनाते हैं, अग्नी में श्रेष्ठ जलाते हैं।
अब आठों कर्म विनाश, हेतु हम आए।।
पावन जल की झारी भरकर, पूजा को आए हैं दर पर।
मैटो जन्मादिक रोग, नाथ घबराए-चरणों में शीश झुकाए।।७।।

ॐ ह्रीं श्री समवशरणस्थितखातिकाभूमिभूषितश्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल के शुभ थाल भराते हैं, चरणों में नाथ चढ़ाते हैं।
अब मोक्ष महाफल पाने, महिमा गाए।।
पावन जल की झारी भरकर, पूजा को आए हैं दर पर।
मैटो जन्मादिक रोग, नाथ घबराए-चरणों में शीश झुकाए।।८।।

ॐ ह्रीं श्री समवशरणस्थितखातिकाभूमिभूषितश्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पावन यह अर्घ्य बनाते हैं, चरणों में विशद चढ़ाते हैं।
अब पद अनर्घ्य पाने, हे स्वामी आए।।
पावन जल की झारी भरकर, पूजा को आए हैं दर पर।
मैटो जन्मादिक रोग, नाथ घबराए-चरणों में शीश झुकाए।।९।।

ॐ ह्रीं श्री समवशरणस्थितखातिकाभूमिभूषितश्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **शांति धारा के लिए लाए पावन नीर।**
भाते हैं यह भावना, नाश होय भव पीर।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा– **पुष्पांजलि को पुष्प यह, सुरभित लाए फूल।**
पूजा करते आपकी, कर्म होंय निमूल।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा– **मन में जागा भाव ये, पाएँ पद निर्वाण।**
जयमाला के साथ में, करते जिन गुणगान।।

।। चौपाई ।।

समवशरण पावन मनहारी, तीर्थंकर जिन मंगलकारी।
प्रभु हैं अनन्त चतुष्टय धारी, तीन लोक में अतिशयकारी।।१।।
देव देवियाँ मिलकर आवें, प्रभु की जय जयकार लगावें।
गुणगान, जिनवर के गाए, बृहस्पति ना जिनको गिन पाए।।२।।
गणधरादि मुनि ध्यान लगाते, विशद भाव से जिन गुण गाते।
सुर गाते हैं भजनावलियाँ, खिलती हैं अन्तर की कलियाँ।।३।।
भाव सहित जो प्रभु गुण गावें, वे अपना सौभाग्य जगावें।
अतिशय पुण्यवान हो जाते, स्वर्ग सम्पदा प्राणी पाते।।४।।
द्वितीय भूमि खातिका गाई, निर्मल नीर बहे सुखदायी।
जलचर जीव रहें शुभकारी, पुष्प सुगन्धित शुभ मनहारी।।५।।
शोभा वरणी जाए ना भाई, भूमि खातिका सौख्य प्रदायी।
लवण सिन्धु सम स्याह बताई, जल पूरित जो अतिशयदायी।।६।।
देव कई भक्ती से आते, मानव आके जहाँ नहाते।
पशु भी क्रीड़ा करते भाई, भूमि खातिका है सुखदायी।।७।।

श्री जिनवर के जो गुण गाते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
कोई सद् श्रद्धान जगावें, सम्यक् ज्ञान जीव कई पावें।।८।।
होते कोड़ चारित के धारी, साधू बनते हैं अविकारी।
पुण्यवान होते जो प्राणी, सुनते वे श्री जिन की वाणी।।९।।
हम परोक्ष से ही गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
यह सौभाग्य जगाएँ स्वामी, बने मोक्ष के हम अनुगामी।।१०।।

दोहा– **भूमि खातिका से सहित, समवशरण शुभकार।**
पूज्य है तीनों लोक में, भवदधि तारण हार।।

ॐ ह्रीं श्री समवशरणस्यखातिकाभूमि भूषितश्रीतीर्थंकर जिनेन्द्राय पूणार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

***